3 | राजधानी
जंतर-मंतर जा रहे टिकैत को रोका

6 | अभिमत
प्रचार की राजनीति का समय

10 | विदेश
इमरान के भाषणों के सीधे प्रसारण पर लगी रोक

12 | स्पोर्ट्स
सिंधू के बिना दारोमदार लक्ष्य और प्रणय पर

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 10 अंक 281
नई दिल्ली, सोमवार, 22 अगस्त, 2022
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

समाज सेवा के लिए सामुदायिक भाव से आगे आएं

राष्ट्रीय-9

www.dailypioneer.com

आजाद की राह चले शर्मा, कांग्रेस को झटका

● हिमाचल प्रदेश कांग्रेस की संचालन समिति के अध्यक्ष पद से दिया इस्तीफा, सोनिया को पत्र लिख कहा-स्वाभिमान से समझौता नहीं

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आनंद शर्मा ने पार्टी की राज्य इकाई की संचालन समिति के अध्यक्ष पद से रविवार को इस्तीफा दे दिया। उनके इस कदम को कांग्रेस के लिए बड़े झटके के तौर पर देखा जा रहा है। राज्य में कुछ ही महीनों में चुनाव होने वाले हैं। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को भेजे गए एक पत्र में राज्यसभा में पूर्व उपनेता प्रतिपक्ष रह चुके शर्मा ने कहा है कि उनके स्वाभिमान को ठेस पहुंची है, क्योंकि उनसे पार्टी की किसी भी बैठक के लिए परामर्श नहीं किया गया और न ही उन्हें उनमें आमंत्रित किया गया और वे 'आत्मसम्मान के साथ कोई समझौता नहीं कर सकते।' लेकिन, उन्होंने इस बात पर जोर देकर कहा कि वे पूरे जीवन कांग्रेसी बने रहेंगे। एक ट्वीट में उन्होंने कहा 'मैंने भारी मन से पार्टी की हिमाचल इकाई की संचालन समिति के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है।' उन्होंने फिर दोहराया कि मैं तामउम्र कांग्रेसी रहूंगा और अपनी इस बात पर कायम रहूंगा। अपने दूसरे ट्वीट में शर्मा ने कहा ' मैं कांग्रेस की विचारधारा के प्रति कटिबद्ध हूं, ये मेरे खून में दौड़ता है। इस बारे में कोई शंका नहीं होनी चाहिए।

लेकिन लगातार अलगाव और अपमान के कारण -एक स्वाभिमानी व्यक्ति होने के चलते मेरे पास कोई विकल्प शेष नहीं रह गया था।' शर्मा से कुछ दिन पहले जी23 समूह के एक अन्य नेता गुलाम नबी आजाद जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस की चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे चुके हैं। शर्मा ने कांग्रेस अध्यक्ष से कहा है कि परामर्श प्रक्रिया में उनकी अनदेखी की गई है। हालांकि, उन्होंने भरोसा दिलाया है कि वह राज्य में पार्टी उम्मीदवारों के लिए प्रचार करना जारी रखेंगे। कांग्रेस नेता मंगलवार से जनसंपर्क कार्यक्रम शुरू करने जा रहे हैं और वह कसौली व अन्य जगहों पर अपने समर्थकों तथा पार्टी कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेंगे। पूर्व केंद्रीय मंत्री शर्मा को 26 अप्रैल को हिमाचल प्रदेश में पार्टी की संचालन समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था। आजाद और शर्मा, दोनों ही जी23 समूह में शामिल प्रमुख नेता हैं, जो पार्टी नेतृत्व के फैसलों की आलोचना करने से नहीं चूके हैं। भूपेंद्र सिंह हुड्डा और मनीष तिवारी

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आनंद शर्मा

सहित कई अन्य दिग्गज नेताओं वाला यह समूह ब्लॉक से लेकर केंद्रीय कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) स्तर तक सही तरीके से चुनाव कराने पर जोर दे रहा है। शर्मा के इस्तीफे को कांग्रेस के भीतर बागियों को शांत करने के प्रयासों के लिए एक झटका माना जा रहा है। यह घटनाक्रम विधानसभा चुनावों में पार्टी की संभावनाओं को नुकसान पहुंचा सकता है।

शर्मा, जिन्हें हिमाचल प्रदेश के सबसे बड़े नेताओं में से एक माना जाता है, ने कांग्रेस अध्यक्ष को लिखे अपने पत्र में कथित तौर पर कहा है कि उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंची है क्योंकि उनसे पार्टी की किसी भी बैठक के लिए परामर्श नहीं किया गया और न ही उन्हें उनमें आमंत्रित किया गया। शर्मा ने पहली बार 1982 में विधानसभा चुनाव लड़ा था। वर्ष 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उन्हें राज्यसभा भेजा था। वह तभी से राज्यसभा सदस्य हैं और पार्टी में कई प्रमुख पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

गांधी परिवार के बाहर भी कांग्रेस अध्यक्ष की तलाश

● चुनाव प्रक्रिया शुरू, पार्टी को 20 सितंबर तक मिल जाएगा नया प्रमुख

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

कांग्रेस के केंद्रीय चुनाव प्राधिकरण (सीईए) ने रविवार को ऐलान किया कि पार्टी आगामी 20 सितंबर तक नए अध्यक्ष का चुनाव करेगी। सीईए ने यह भी कहा कि यदि राहुल गांधी अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने के लिए तैयार नहीं हुए और सोनिया गांधी स्वास्थ्य कारणों से अध्यक्ष पद की दौड़ में शामिल नहीं होती हैं तो फिर कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए गांधी परिवार से बाहर उम्मीदवार तलाश करना मजबूरी होगी।

हालांकि कांग्रेस का एक वर्ग प्रियंका गांधी को सामने लाने के पक्ष में खड़ा है, लेकिन पिछले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में उनके फ्लॉप शो से स्पष्ट रूप से उनकी छवि प्रभावित हुई है। सीईए प्रमुख मधुसूदन मिस्त्री यूं तो जोर देकर कहते हैं कि प्राधिकरण चुनाव कार्यक्रम पर कायम रहेगा, लेकिन इस कठिन दौर में कौन ऐसा संभावित नेता है, जो पार्टी की कमान थाम आगे-आगे चले, इस बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

यदि गांधी परिवार का कोई सदस्य अध्यक्ष पद की दौड़ में शामिल नहीं होता है, तो सुशील कुमार शिंदे, मीरा कुमार और मल्लिकार्जुन खड़गे जैसे कद्दावर दलित नेताओं के साथ-साथ अनुभवी अशोक गहलोत और कलामल नाथ पर जाकर उम्मीद की सुई रुकती है। कांग्रेस में इस पद के संभावित अन्य प्रमुख दावेदारों में सचिन पायलट, भूपेश बघेल और मुकुल वासनिक भी हो सकते हैं। पार्टी सूत्रों ने कहा कि कांग्रेस के ज्यादातर नेता चाहते हैं कि जब राहुल गांधी पार्टी में सभी निर्णय ले रहे हैं तो पहले की तरह वही बॉस के रूप में सक्रिय रूप से जिम्मेदारी संभालें। मई 2019 में लोकसभा चुनाव में (शेष पेज 8)

आठ लोगों के विरुद्ध लुकआउट नोटिस, सिसोदिया का नाम नहीं

● राज्यों से मिलकर महंगाई व बेरोजगारी दूर करने के बजाय पूरे देश से लड़ रही केंद्र सरकार : केजरीवाल

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सीबीआई ने रविवार को दिल्ली आबकारी नीति में कथित घोटाले को लेकर दर्ज प्राथमिकी में नामित आठ निजी व्यक्तियों के खिलाफ लुक आउट सर्कुलर (एलओसी) जारी किया है। सीबीआई अधिकारियों के अनुसार उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, पूर्व आबकारी आयुक्त ए गोपी कृष्ण, उपायुक्त आनंद तिवारी और सहायक आयुक्त पंकज भटनागर के नाम एलओसी में नहीं हैं, क्योंकि वे लोक सेवक हैं और वे बिना सरकार को बताए देश नहीं छोड़ सकते।

जांच एजेंसी ने जिन नौ निजी आरोपी व्यक्तियों में से आठ के खिलाफ एलओसी जारी की है, उनमें मुंबई स्थित इवेंट मैनेजमेंट कंपनी ओनली मच लाउडर के पूर्व सीईओ विनय नायर, ब्रिंडको सेल्स प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक अमनदीप ढाल, दिल्ली के जोरबाग के प्रबंध निदेशक समीर महेंद्रू, इंडोस्पिरिट ग्रुप के अमित अरोड़ा, बडी रिटेल प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक दिनेश अरोड़ा, महादेव लिकर्स के अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता सनी मारवाह, तेलंगाना के अरुण रामचंद्र पिल्लई और गुरुग्राम के (शेष पेज 8)

दिल्ली आबकारी नीति

पत्रकारों से बातचीत करते दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया

बस खरीद में अनियमितता के आरोपों की सीबीआई करेगी जांच

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने दिल्ली सरकार द्वारा 1000 लो-फ्लोर बसों की खरीद में कथित भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर प्रारंभिक जांच दर्ज की है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्रालय के संदर्भ पर जांच दर्ज की गई है। दिल्ली सरकार ने बस खरीद में भ्रष्टाचार के आरोपों का खंडन किया था और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर सीबीआई का इस्तेमाल करके उसे परेशान करने का आरोप लगाया है। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) द्वारा बसों की खरीद के वार्षिक रखरखाव अनुबंध (एएमसी) में (शेष पेज 8)

बाजार

सेंसेक्स	59,646	
निफ्टी	17,758	
सोना	51,995	/10g
चांदी	56,247	/kg

क्विक न्यूज

अमेरिका से एमक्यू-9बी ड्रोन खरीदेने की तैयारी में भारत

नई दिल्ली। चीन के साथ लगती वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) और हिंद महासागर के पास सतर्कता बढ़ाने के लिए तीन अरब डॉलर से अधिक की लागत पर 30 एमक्यू-9बी प्रीडेटर सशस्त्र ड्रोन खरीदने के लिए भारत अमेरिका के साथ बातचीत के अंतिम चरण में है। इससे जुड़े अधिकारियों ने रविवार को इसकी जानकारी दी। लंबे समय तक हवा में रहने वाले इन ड्रोन को तीनों सेनाओं के लिए खरीदा जा रहा है। ए ड्रोन समुद्री सतर्कता, पनडुब्बी रोधी आयुध, क्षितिज के परे लक्ष्य साधने और जमीन पर मौजूद लक्ष्यों को निशाना बनाने समेत विभिन्न कार्य करने में सक्षम है। एमक्यू-9बी ड्रोन एमक्यू-9 रीपर का एक प्रकार है। ऐसा बताया जाता है कि एमक्यू-9 रीपर का इस्तेमाल हेलफायर मिसाइल के उस संशोधित संस्करण को दागने के लिए किया गया था जिसने पिछले महीने काबुल में अल-कायदा के सरगना अयमान अल-जवाहिरी को ड्रोन से मार गिराया था।

बिहार के दिहाड़ी मजदूर को मिला 37.5 लाख का आयकर का नोटिस

भाषा। खगड़िया

जिले के एक दिहाड़ी मजदूर के लिए आयकर विभाग से 37.5 लाख रुपए का बकाया भुगतान की नोटिस मिलना बिलकुल वैसा ही अनुभव था जैसा बिना बारिश के बाढ़ आना हो। रोजाना करीब 500 रुपए कमाने वाले खगड़िया जिले के मघौना गांव निवासी गिरीश यादव ने इस संबंध में अपने इलाके के पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराई है। अलौली थाना के प्रभारी पुरेंद्र कुमार ने बताया, हमने मामला दर्ज कर लिया है और गिरीश द्वारा साझा की गई जानकारी के आधार पर जांच शुरू कर दी है। प्रथम दृष्टया यह धोखाधड़ी का मामला लगता है। उन्होंने बताया कि शिकायतकर्ता को उसके नाम से जारी पैन नंबर के आधार पर नोटिस मिला है। उन्होंने कहा, गिरीश का कहना है कि वह दिल्ली में मजदूरी का काम करता है जहां उसने एक बार एक दलाल के जरिए पैन कार्ड बनवाने की कोशिश की थी पर उसके बाद उससे कभी नहीं उसकी (शेष पेज 8)

श्रीकांत त्यागी के समर्थन में नोएडा में महापंचायत

महापंचायत को संबोधित करती श्रीकांत त्यागी की पत्नी अनु त्यागी

● त्यागी समाज ने जेल से आए छह लड़कों को किया सम्मानित, पत्नी बोली, पूरी साजिश सांसद महेश शर्मा की

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा की ग्रैंड ओमेक्स सोसाइटी में महिला से अभद्रता और गाली-गलौज करने वाले श्रीकांत के समर्थन में त्यागी समाज उतर आया है। रविवार को भंगेल में सुबह 11 बजे शुरू हुई महापंचायत दोपहर 3 बजे तक चली। मंच पर सबसे पहले उन 6 लड़कों को सम्मानित किया गया है, जो सोसाइटी में उपद्रव के आरोप में जेल गए थे। इस दौरान नोएडा से भाजपा सांसद डॉ महेश शर्मा के खिलाफ नारेबाजी की गई। महापंचायत में मांग की गई कि सांसद अपने बयान के लिए सार्वजनिक माफी मांगें। राष्ट्रीय लोकदल के (शेष पेज 8)

महबूबा मुफ्ती ने घर में नजरबंद करके रखे जाने का किया दावा

भाषा। श्रीनगर

पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने रविवार को दावा किया कि उन्हें कश्मीरी पंडित सुनील कुमार भट के परिवार से मिलने से रोकने के लिए घर में नजरबंद करके रखा गया है। भट की हाल ही में शोपियां में आतंकवादियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। मुफ्ती ने श्रीनगर के गुपकर इलाके में अपने आवास के बंद दरवाजों और बाहर खड़ी सीआरपीएफ (केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल) की एक गाड़ी की तस्वीरें ट्विटर पर साझा कीं। जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार की संवेदनहीन नीतियों के कारण कश्मीरी पंडितों की हत्याएं हुई हैं। उन्होंने कहा, भारत सरकार अपनी संवेदनहीन नीतियों के जरिए कश्मीरी पंडितों की दशा को और बदतर बनाना चाहती है। इन नीतियों के चलते उन लोगों को निशाना बनाकर हत्या की गई, जिन्होंने पलायन नहीं करने का फैसला किया। हमें अपने (शेष पेज 8)

गार्ड से अभद्रता करने वाली महिला गिरफ्तार

गार्ड से गाली गलौज करने वाली महिला पुलिस की गिरफ्त में

● नोएडा की घटना, कोर्ट ने 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा

● हिरासत में लिए जाने के बाद खुद कार ड्राइव कर पहुंची थाने, पेश से वकील है आरोपी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

सेक्टर-126 जेपी सोसाइटी में गार्ड से अभद्रता और गालियां देने के आरोप में एक महिला को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तारी का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें महिला पुलिस हिरासत में भी खुद कार ड्राइव करती दिख रही है। पुलिस ने महिला को कोर्ट में पेश किया जहां से उसे 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। महिला का एक वीडियो सामने आया है। इसमें दिख रहा है कि सोसाइटी के सिक्योरिटी गार्ड ने गेट खोलने में देरी की। इस (शेष पेज 8)

जदयू की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 3-4 को

भाषा। नई दिल्ली

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विपक्ष के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में उभरने की अटकलों के बीच जनता दल यूनाइटेड (जदयू) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी और राष्ट्रीय परिषद की बैठक क्रमश: तीन और चार सितंबर को पटना में होगी। पार्टी महासचिव अफाक अहमद खान ने कहा कि दोनों दिन संगठन संबंधी मुद्दों और सदस्यता अभियान पर चर्चा की जाएगी। ए बैठकें इसलिए अहम मानी जा रही हैं, क्योंकि बिहार के मुख्यमंत्री एवं जद(यू) प्रमुख नीतीश कुमार ने हाल ही में भारतीय जनता पार्टी से गठबंधन तोड़ते हुए महागठबंधन से हाथ मिला लिया था, जिसमें राष्ट्रीय जनता दल, कांग्रेस और वामदल शामिल हैं। नीतीश के कदम से विपक्षी खेमे में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। यही नहीं, इससे नीतीश के 2024 के लोकसभा चुनावों में विपक्ष के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में उभरने की अटकलों को (शेष पेज 8)

पीएम को सुरक्षा देने वाली एसपीजी में शामिल किए जाएंगे मुधोल हाउंड

● कर्नाटक के इस स्वदेशी नस्ल के कुत्ते को प्रशिक्षण के लिए चुना गया है

पीएनएस/एजेंसी। नई दिल्ली/बेंगलुरु

देश के प्रधानमंत्री सुरक्षा का जिम्मा संभालने वाले विशेष सुरक्षा दल (एसपीजी) ने कर्नाटक से कुत्ते की स्वदेशी नस्ल मुधोल हाउंड को प्रशिक्षण देने के लिए चुना है, जिससे इसके विशिष्ट बल में शामिल होने की संभावना बढ़ गई है।

एसपीजी ने मुधोल हाउंड में दिलचस्पी दिखाई है और बगलकोट जिले के मुधोल शहर में श्वान अनुसंधान एवं सूचना केंद्र (सीआरआईसी) से एक प्रयोग के तौर पर प्रशिक्षण के लिए दो कुत्तों को चुना है। सीआरआईसी के निदेशक सुशांत हांडे ने बताया, हमें नहीं मालूम कि उनकी (एसपीजी) आवश्यकताएं क्या हैं लेकिन वे प्रदर्शन से खुश हैं। यह पहली बार नहीं है जब सुरक्षा एजेंसियां इस नस्ल से प्रभावित हुई हैं। भारतीय सेना, वायु सेना, केंद्रीय सशस्त्र अर्द्धसैन्य बल, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ), राज्य पुलिस तथा वन विभाग पहले भी कुछ वक्त के लिए इन कुत्तों की सेवाएं ले चुका है। हांडे ने कहा, अभी तक मिली प्रतिक्रिया बहुत अच्छी है।

यह नस्ल भारतीय सेना में परीक्षण पास कर चुकी है। उनका कहना है कि यह नस्ल हिमालयों समेत विषम मौसम परिस्थितियों में भी काम कर सकती है। सेना के अधिकारियों का (शेष पेज 8)

मुधोल हाउंड का फाइल चित्र

किसान की जिद, दूसरी जगह ले जा रहे पूरी हवेली

● डेढ़ करोड़ की लागत से बने 1000 गज के घर को किया जा रहा 500 फीट दूर शिफ्ट

● एक्सप्रेसवे के आड़े आ गया दो साल पहले बना मकान, ड्रीम होम के बदले मिल रहा मुआवजा ठुकराया

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

पंजाब के सुखविंदर सिंह सुखी ने हाउस ऑन व्हील्स की अवधारणा को पुन: परिभाषित करते हुए अपना पूरा मकान ही एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की ठान ली है। प्रक्रिया शुरू हो गई है और उनके इस अनोखे करतब को देख लोग हैरत में पड़ गए हैं। उनका यह काम सोशल मीडिया पर भी खूब वायरल हो रहा है। दिल्ली-जम्मू-कटरा एक्सप्रेसवे के लिए जमीन का अधिग्रहीत होने के बाद संगरूर के इस किसान के पास एक नए घर में जाना मजबूरी बन गया था, लेकिन उन्होंने नया घर बनाने के बजाय अपना पुराना घर ही पूरा का पूरा स्थानांतरित करने का मन बना लिया।

लगभग 1000 वर्ग गज में फैला उनका यह घर 500 फीट दूर जैक और पहियों के जरिए नए स्थान पर ले जाया जा रहा है। सुखी के परिवार के पास संगरूर जिले के रोशनवाला गांव में करीब 10 एकड़ जमीन है। यहां परिवार ने वर्ष 2017 और 2019 के बीच लगभग 1.5 करोड़ रुपये खर्च कर 1000 वर्ग गज में दो मंजिला शानदार घर बनवाया था। अब एक्सप्रेस-वे परियोजना के लिए उनकी 2.5 एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया जा रहा है। राष्ट्रीय सड़क परियोजना के आड़े आ रहे उनके नए बने मकान के बदले पंजाब सरकार ने उन्हें मोटा मुआवजा देने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन उन्होंने अपने ड्रीम होम के बदले यह रकम लेना स्वीकार नहीं किया। एजेंसी को सुखी ने बताया कि वह घर को शिफ्ट कर रहे हैं, क्योंकि यह दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेसवे के रास्ते में आ रहा था।

उन्हें मुआवजे की पेशकश की गई थी, लेकिन वह दूसरा घर नहीं बनाना चाहते थे, क्योंकि इस मकान को बनाने में लगभग 1.5 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। वह बताते हैं कि मुझे इस घर को बनाने में दो साल और 1.5 करोड़ रुपये लगे हैं। यह मेरा ड्रीम प्रोजेक्ट है, मैं दूसरा घर नहीं बनाना चाहता था, इसलिए मुआवजे का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया। हर दिन बड़ी संख्या में मजदूर मिलकर घर को 10 फीट आगे बढ़ा रहे हैं। अब तक, दो मंजिला घर अपने मूल स्थान से 250 फीट से अधिक दूर चला गया है। घर को शिफ्ट करने का काम एक निजी ठेकेदार को दिया गया है, जिसकी कुल लागत लगभग 50 लाख रुपये आएगी। यह काम पिछले दो महीने से (शेष पेज 8)

ग्रैंड ओमेक्स सोसाइटी के निवासियों का मौन विरोध

नोएडा में त्यागी महापंचायत को लेकर दोनों गुटों के बीच पोस्टर वार शुरू

- सोसाइटी ने अन्याय के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष करने का दिया संदेश

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

सोसायटी के गेट पर लगा पोस्टर।

महिला से बदसलूकी प्रकरण थमने का नाम नहीं ले रहा है। एक तरफ जहां मुखर हो त्यागी समाज ने रविवार को नोएडा में महापंचायत बुलाई है, वहीं ग्रैंड ओमेक्स सोसाइटी मौन तरीके से अपना विरोध दर्ज करा रहे हैं। दोनों गुटों के बीच पोस्टर वार शुरू हो गया है।

जहां महापंचायत में लगे पोस्टर इस प्रकरण के त्यागी समाज के सम्मान से जोड़ा जा रहा है, वहीं ग्रैंड ओमेक्स सोसाइटी के निवासी पूरी सोसायटी में पोस्टर लगा कर अन्याय के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष करने का संदेश दे रहे हैं। नोएडा के सेक्टर 93-बी स्थित ग्रैंड ओमेक्स सोसाइटी में लगे पोस्टर में सोसाइटी के लोग मौन तरीके से अपना विरोध दर्ज करा रहे हैं। पोस्टरों में लिखा है, एकजुट रेजिडेंट्स अन्याय के खिलाफ है उत्पीड़न, दबंगई महिलाओं का अपमान, गाली-गलौज अतिक्रमण को हम ना बोलते हैं। आरडब्ल्यूए ग्रैंड ओमेक्स सोसाइटी की महासचिव महिमा जोशी ने कहा कि 5 अगस्त को एक महिला से बदसलूकी प्रकरण इतना तूल पकड जायेगा, ऐसी उम्मीद किसी को भी नहीं थी। सोसायटी के लोगों का भी यही मानना है। यह मामला जिस प्रकार से तूल पकड़ गया है, ऐसा नहीं होना चाहिए था, अगर वह सोसायटी के कानून के तहत रहकर हमारी बात को समझते तो।

उन्होंने सोसाइटी का नियम तोड़ा, दूसरा गलत काम उन्होंने यह किया कि एक महिला के साथ अभद्र व्यवहार किया। उन्होंने इस तरह के शब्दों का प्रयोग किया जो अतिनिंदनीय है। उन्होंने बहुत ही गलत व्यवहार किया।

इसी वजह से इस मामले ने इतना तूल पकड़ा। जो हमारी लड़ाई है, किसी समाज के खिलाफ नहीं है। हमारे वहां जो भी घटना घटी, वह किसी समाज के खिलाफ नहीं, एक व्यक्ति विशेष के खिलाफ है।

महापंचायत के बाद जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपते त्यागी समाज के लोग।

त्यागी समाज संदेश देने में कामयाब

नोएडा। नोएडा की ग्रैंड ओमेक्स हाउसिंग सोसायटी में श्रीकांत त्यागी प्रकरण को लेकर रविवार को गेझा गांव में महापंचायत हुई। जिसके जरिए त्यागी समाज अपना संदेश देने में पूरी तरह कामयाब रहा है। यहां आए लोगों ने साफ तौर पर कहा, हमें भारतीय जनता पार्टी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से कोई शिकवा नहीं है। हम गौतमबुद्ध नगर के सांसद महेश शर्मा के खिलाफ कार्रवाई चाहते हैं। उन्होंने श्रीकांत त्यागी के खिलाफ षड्यंत्र रचा है। त्यागी समाज को अपमानित किया है। इस महापंचायत की घोषणा के वक्त त्यागी समाज ने नारा दिया था, श्योगी.भाजपा से बैर नहीं, महेश शर्मा की खैर नहीं। रविवार को हुई महापंचायत में यह बात पूरी तरह झलकती रही। इस महापंचायत का आयोजन करने वालों में शामिल रहे सुधीर त्यागी ने कहा श्रीकांत की पत्नी और परिवार के पक्ष में त्यागी समाज ने महापंचायत का ऐलान किया था, जो रविवार को नोएडा के गेझा गांव में हुई। इस महापंचायत का कोई नेता और निशान नहीं था। यह ऐतिहासिक पंचायत हुई है। जिसमें जोश से भरपूर जनसैलाब उमड़ा है। हमारे अनुमान से भी ज्यादा लोगों ने महापंचायत में हिस्सा लिया है।

संक्षिप्त समाचार

भाकियू कार्यकर्ताओं ने थानों पर दिया धरना

गाजियाबाद। दिल्ली पुलिस द्वारा भाकियू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत को हिरासत में लिए जाने की सूचना मिलते ही कार्यकर्ताओं में रोष फैल गया। नाराज कार्यकर्ताओं ने अपने निकट थानों में अनिश्चितकालीन धरना शुरू कर दिया। राकेश टिकैत को हिरासत से छोड़े जाने की जानकारी मिलने के बाद कार्यकर्ताओं ने धरना समाप्त किया। रविवार दोपहर को भाकियू कार्यकर्ताओं को जैसे ही जानकारी मिली कि राकेश टिकैत को दिल्ली पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। इसके बाद कार्यकर्ताओं गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। मोदीनगर थाने पर बाबा परमेंद्र आर्य, पवन कुमार, लाला राम बापू समेत बड़ी संख्या में कार्यकर्ता पहुंच गए। थाने के गेट पर उन्होंने अनिश्चितकालीन धरना शुरू कर दिया। वहीं, भोजपुर निवाड़ी व मुरादनगर थाने पर भी भाकियू कार्यकर्ता पहुंच गए। उन्होंने पुलिस के रवैए की निंदा करते हुए जमकर नारेबाजी की।

रोडवेज बस ने बाइक में मारी टक्कर, युवक की मौत

गाजियाबाद। दिल्ली-मेरठ मार्ग पर गोविन्दपुरी कॉलोनी में शनिवार दोपहर साढ़े ग्यारह बजे तेज रफ्तार रोडवेज बस ने ओवरटेक करने के चक्कर में बाइक में टक्कर मार दी। इस हादसे में बाइक सवार एक युवक की मौत हो गई, जबकि दूसरा घायल हो गया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर बस को कब्जे में ले लिया है। जिला गौतमबुद्धनगर के थाना जेवर के गांव समौता निवासी मुलचंद्र शर्मा 27 वर्ष पुत्र हरिकेश शर्मा आईटीआई कर रहे थे। शनिवार को अपने दोस्त गांव निवासी भास्कर के साथ आईटीआई की परीक्षा देने दिल्ली मेरठ मार्ग से होते हुए मेरठ जा रहे थे। शनिवार दोपहर साढ़े ग्यारह बजे के आसपास जब वह दिल्ली मेरठ मार्ग पर गोविन्दुपरी कॉलोनी पहुंचे तो गाजियाबाद से मेरठ की और जा रही रोडवेज बस ने आगे जा रहे वाहन को ओवरटेक करने के चक्कर में बाइक में साईड मार दी। साइड लगते ही बाइक सवार दोनों युवक काफी दूर जा गिरे।

ग्रेटर नोएडा वेस्ट की मार्किट में लगी आग, हताहत नहीं

नोएडा। रविवार की दोपहर शहर की ग्रीनआर्च की मार्किट में आग लगने का मामला सामने आया है। मार्किट में मौजूद दुकानदारों ने पुलिस और फायर ब्रिगेड को सूचना दी है। दूसरी ओर सुरक्षाकर्मी और स्टाफ आग पर काबू करने की कोशिश कर रहे हैं। मार्किट से घना काला धुआं बाहर निकल रहा है। जिसकी वजह से आसपास के मार्किट और पास में स्थित सोसाइटी में रहने वाले लोग परेशान हो गए हैं। मार्किट की एक दुकान में अचानक लगी आग से एक बारगी अफरा-तफरी का माहौल बन गया। मिली जानकारी के मुताबिक यह आग ग्रीनआर्च की मार्केट में स्थित कड़क सिंह ढाबे में लगी है। आग लगने का मुख्य कारण पता नहीं चल पाया है, लेकिन बताया जा रहा है कि शॉर्ट सर्किट होने से आग नहीं लगी है बल्कि कुछ और कारण है।

ग्रेटर नोएडा पुलिस ने मासूम बच्चे को किया बरामद

नोएडा। ग्रेनो से तीन साल के मासूम का अपहरण हो गया। जिसको पुलिस ने बुलंदशहर के खुर्जा से बरामद कर लिया है। साथ ही अपहरणकर्ता को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। शनिवार को चाय विक्रेता के 3 साल के मासूमको शराब के नशे का आदि प्रमोद अपहरण कर ले गया। दरअसल, सेक्टर गामा टू में चाय की दुकान चलाने वाली आरती ने बताया कि आरोपी प्रमोद दुकान पर बैठा था। और मासूम वंश को बार-बार खाने के लिए बिस्किट तो कभी रुपए दे रहा था। कुछ देर बाद आरती सेक्टर के सुरक्षाकर्मी को बच्चे को देखने के लिए बोल कर दवा लेने चली गई। जब आरती ने वापस आकर देखा तो मासूम वंश व प्रमोद दुकान पर नहीं थे। मासूम वंश की तलाश शुरू की गई और वही सुरक्षाकर्मी ने भी जानकारी से इंकार कर दिया।

वन रक्षक परीक्षा: 27 केंद्रों में 4912 छात्र-छात्राएं शामिल

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग यूपीएसएसएससी फ रॉरेस्ट गार्ड और वाइल्ड लाइफ गार्ड भर्ती रविवार को जिले में 27 केंद्रों पर आयोजित हुई। परीक्षा में 4912 परीक्षार्थी शामिल हुए थे।

परीक्षा को नकलविहीन बनाने और सुरक्षा के लिहाज से केंद्रों पर पुलिस बल तैनात रहा। इसके अलावा प्रत्येक केंद्र पर एक.एक स्टेटिक मजिस्ट्रेट की भी तैनाती रही। कुल 200 अंकों के 200 प्रश्नों का एक समग्र पेपर हुआ हैं। लिखित परीक्षा बहुविकल्पीय वस्तुनिष्ठ प्रकार की आयोजित हुई है। परीक्षा में अंग्रेजी और तार्किक रिजनिंग आदि से जुड़े प्रश्न पूछे गए वन रक्षक परीक्षा को लेकर शिक्षा विभाग की पहले से तैयारी जारी थी। सभी केंद्रों का निर्धारण व्यवस्थाओं को परखते हुए आयोग से ही किया गया था।

नोएडा में नवजीवन इंटर कॉलेज, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज समेत करीब 10 केंद्रों पर परीक्षा हुई थी, इसके अलावा अन्य केंद्र ग्रेटर नोएडा के थे। जिले में परीक्षा के लिए 11712 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, लेकिन कुल 4921 परीक्षार्थी ही परीक्षा देने के लिए पहुंचे, यह कुल पंजीकृत छात्रों का 42 फ ीसद है। जबकि 6791 यानी 58 फीसदी ने विभिन्न कारणों से परीक्षा छोड़ दी। परीक्षा को लेकर केंद्रों पर सख्त व्यवस्था रही।

30 सितंबर तक सिग्नल फ्री होगा एमपी-1 मार्ग

- रजनीगंधा अंडरपास चौक से लेकर सेक्टर-12,22,56 तिराहे को जोड़ने वाले मार्ग के दोनों ओर है घनी आबादी

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

दिल्ली-नोएडा को जोड़ने वाली 3.5 किलोमीटर लंबी सड़क एमपी-1 मार्ग को जाम मुक्त बनाने की कवायद तेज हो गई है। सड़क के चौड़ीकरण का काम शुरू कर दिया गया है।

इस मार्ग के सभी चौराहे और तिराहे बंद किए जाएंगे। शनिवार से टी.सीरीज चौराहा और सेक्टर-20 बिजलीघर तिराहा बंद कर रूट डायवर्जन व्यवस्था लागू कर दी गई। प्राधिकरण ने 30 सितंबर तक इस मार्ग को सिग्नल फ्री करने का दावा किया है। रजनीगंधा अंडरपास चौक से लेकर सेक्टर-12,22,56 तिराहे को जोड़ने वाले इस के मार्ग के दोनों ओर घनी आबादी है। दिल्ली-नोएडा से गाजियाबाद के बीच आवाजाही के लिए लोग इसका इस्तेमाल करते हैं। ऐसे में दिनभर मार्ग पर वाहनों की रफ्तार मंद रहती है। हालांकि, प्राधिकरण ने इस मार्ग पर एलिवेटेड रोड बनाने की योजना बनाई थी, लेकिन यह फाइलों में सिमटकर रह गई है। कॉम्प्रिहेंसिव मोबिलिटी प्लान के तहत सेंट्रल रोड रिसर्च इंस्टीट्यूट सीआरआरआई के सुझाव पर एमपी-1 मार्ग को सिग्नल फ्री की योजना को रफ्तार दी गई है। सभी चौराहों और कटों को बंद कर पांच जगह डबल यू-टर्न बनाने का सुझाव प्राधिकरण को दिया गया है।

हालांकि, एक जगह यू-टर्न पूरी तरह बनकर तैयार है जबकि तीन जगह यू-टर्न की आउटर दीवार बनाने का काम किया जा रहा है। जिस जगह यू.टर्न बने हैं वहां सड़क को 3.5 मीटर तक चौड़ा किया जा रहा है।

"एमपी.1 शहर का सबसे पुराना और व्यस्त मार्ग है। इसे सिग्नल फ्री बनाने का काम तेजी से किया जा रहा है। 30 सितंबर तक काम पूरा कर लिया जाएगा।"
-एसपी सिंह
उपमहाप्रबंधक, नोएडा

एक के बाद एक चौराहों व तिराहों को बंद कर यू.टर्न व्यवस्था लागू की जाएगी। ट्रैफिक सिग्नल प्रणाली बंद होने पर वाहन सिर्फ बायीं ओर मुड़कर जा सकेंगे। दायीं ओर जाने के लिए चौराहों से 100 मीटर आगे जाकर यू-टर्न लेना होगा। ऐसा होने से मार्ग पर वाहनों की मूवमेंट जारी रहेगी। सिग्नल की बाधा खत्म होने पर वाहनों का दबाव नहीं बढ़ेगा। यू-टर्न व्यवस्था पर करीब छह करोड़ रुपये खर्च करने का अनुमान है।

Piramal
Capital & Housing Finance

पंजीकृत कार्यालय पता : यूनिट नंबर 601, छठा तल, पीरामल अमिति बिल्डिंग, पीरामल अगस्त्य कार्पोरेट पार्क, कमानी जंक्शन, फायर स्टेशन के सामने, एलबीएस मार्ग, कुर्ला (वेस्ट), मुंबई – 400 070 सीआईएन : एल65910एमएच1984पीएलसी032639, वेबसाइट : www.piramalfinance.com
शाखा पता : धीरज बाग, बिल्डिंग "ए" भू तल एवं प्रथम तल, ऐक्सिस बैंक के बगल में, मोनालिसा बिल्डिंग के सामने, आगरा रोड, हरि निवास सर्किल, नौपाडा, थाने (वेस्ट)–400 602

मांग सूचना

वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनरनिर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 की धारा 13(2) के साथ पठित प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3(1) के अधीन। अधोहस्ताक्षरी वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनरनिर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 (उक्त अधिनियम) के अधीन पीरामल कैपिटल ऐंड हाउसिंग फाइनैंस लिमिटेड (पीसीएचएफएल) स्थूर्वतः दीवान हाउसिंग फाइनैंस कारपोरेशन लिमिटेड (डीएचएफएल) के नाम से ज्ञात, का प्राधिकृत अधिकारी है। प्राधिकृत अधिकारी ने उक्त अधिनियम की धारा 13(12) के साथ पठित प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के अधीन प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उक्त अधिनियम की धारा 13(2) के अधीन मांग सूचनाएं जारी की थीं, जिनमें निम्नलिखित कर्जदार(रों) ("उक्त कर्जदार(रों)") से उनको जारी की गई संबंधित मांग सूचना(ओं) में वर्णित राशियां, जो यहां नीचे भी दी गई हैं, चुकाने की मांग की गई थी। उपरोक्त के संबंध में, एतद्द्वारा, उक्त कर्जदार(रों) को, एक बार पुनः, पीसीएचएफएल को यहां नीचे दी गई राशियों का भुगतान, उक्त कर्जदार(रों) द्वारा निष्पादित अन्य दस्तावेज/प्रलेख, यदि कोई, के साथ पठित ऋण अनुबंध के अधीन देय, नीचे वर्णित तिथि(यों) से, भुगतान तथा/अथवा वसूली की तिथि तक, लागू दर पर आगे ब्याज सहित, इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 60 दिन के भीतर करने हेतु सूचना दी जाती है। उक्त कर्जदार(रों) द्वारा ऋण की सम्यक वापसी के लिए प्रतिभूति के रूप में निम्नलिखित आस्तियां पीसीएचएफएल के पास बंधक रखी गई हैं।

कर्जदार (रों)/गारंटर (रों) का नाम	मांग सूचना तिथि और राशि एनपीए तिथि सहित	सम्पत्ति पता
(दिल्ली जनकपुरी शाखा का एलसी नंबर : 00000892) विलियम राज (कर्जदार) धर्मा राज वंसी (सह-कर्जदार 1)	29-07-2022/रू. 14,69,221/- (रूपए चौदह लाख उनहत्तर हजार दो सौ इक्कीस मात्र) एनपीए (09-06-2022)	सम्पत्ति सं. 144 एवं 145, तृतीय तल, रियर साइड, केएच नंबर 364, सुभाष पार्क, ग्राम-बिंदापुर ब्लॉक-बी एक्सटेंशन, उत्तम नगर, नई दिल्ली, दिल्ली-110059
(कड़कड़डूमा नोएडा शाखा का एलसी नंबर : 00001036) मोहम्मद गुलफाम (कर्जदार) नसीमन (सह-कर्जदार 1)	29-07-2022/रू. 14,20,483/- (रूपए चौदह लाख बीस हजार चार सौ तिरासी मात्र) एनपीए (12-05-2021)	प्लॉट नंबर 248, ब्लॉक-एफ, खसरा नंबर 287 मिन, गरिमा गार्डन, ग्राम-पसोंडा लोनी, निकट वाटर प्लांट, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201001
(नई दिल्ली-वेस्ट शाखा का एलसी नंबर : 00001818) वंदना शर्मा (कर्जदार) पंकज शर्मा (सह-कर्जदार 1)	29-07-2022/रू. 13,69,214/- (रूपए तेरह लाख उनहत्तर हजार दो सौ चौदह मात्र) एनपीए (09-02-2021)	यूनिट/फ्लैट नंबर जी-8, जीएफ, टावर-बी, जीएच-7ए, कोयल एन्क्लेव, ऑक्सीरिच नई दिल्ली, एक्सटेंशन, ऑक्सीरिच नई दिल्ली गाजियाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201301
(नई दिल्ली शाखा का एलसी नंबर : 00004215) कमलेश (कर्जदार) सुजीत कुमार (सह-कर्जदार 1)	29-07-2022/रू. 13,66,108/- (रूपए तेरह लाख छियासठ हजार एक सौ आठ मात्र) एनपीए (09-06-2022)	फ्लैट नंबर एफ-3, प्रथम तल रियर एलएचएस प्लॉट नंबर 14, ब्लॉक एस, डीएलएफ दिलशाद एक्सटेंशन-2, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201005
(दिल्ली-पीतमपुरा शाखा का एलसी नंबर : 00041642) पिंकी कुमारी (कर्जदार) अंजनी कुमार (सह-कर्जदार 1)	29-07-2022/रू. 11,27,685/- (रूपए ग्यारह लाख सत्ताईस हजार छह सौ पिचासी मात्र) एनपीए (09-06-2022)	आरजैड-डी-4 ए (पुराना नंबर आरजैड-डी-4), द्वितीय तल, रियर साइड, खसरा नंबर 16/6, ग्राम मिर्जापुर, महावीर एन्क्लेव, नई दिल्ली-110045
(दिल्ली जनकपुरी शाखा का एलसी नंबर : 00001682) श्याम बाबू शर्मा (कर्जदार) दिवाकर शर्मा (सह-कर्जदार 1) उषा देवी (सह कर्जदार 2)	29-07-2022/रू. 7,93,392/- (रूपए सात लाख तिरानवे हजार तीन सौ बानवे मात्र) एनपीए (09-06-2022)	प्लॉट नंबर 4, तृतीय तल, फ्रंट साइड छत के साथ, केएच नंबर 20/12, ब्लॉक-ए, जैन कालोनी पार्ट-1, ग्राम मटियाला, उत्तम नगर, नई दिल्ली, दिल्ली-110059
(नेताजी सुभाष प्लेस शाखा का एलसी नंबर : 00001156) प्रशांत पाराशर (कर्जदार) टीना टीना (सह-कर्जदार 1)	29-07-2022/रू. 35,29,281/- (रूपए पैंतीस लाख उन्तीस हजार दो सौ इक्यासी मात्र) एनपीए (09-06-2022)	प्लॉट नंबर बी-34, द्वितीय तल, खसरा नंबर 1989, ग्राम तिहाड़, निकट रामगढ़िया गुरूद्वारा, हरि नगर, नई दिल्ली, दिल्ली-110064
(दिल्ली-सफदरजंग शाखा का एलसी नंबर : 00043739) पिंकू मिश्रा (कर्जदार) रिंकी (सह-कर्जदार 1)	29-07-2022/रू. 15,73,431/- (रूपए पंद्रह लाख तिहत्तर हजार चार सौ इकतीस मात्र) एनपीए (09-06-2022)	फ्लैट नंबर एसएफ 3, द्वितीय तल, बैक आरएचएस, प्लॉट नंबर सी-3/8, ब्लॉक-सी-3, मदर ड्रीम लैंड जूनियर हाई स्कूल, डीएलएफ अंकुर विहार लोनी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश – 201102
(रोहिणी शाखा का एलसी नंबर : 00002220) प्रमोद कुमार टिबरेवाला (कर्जदार) लक्ष्मी टिबरेवाला (सह-कर्जदार 1) शोमित टिबरेवाला (सह-कर्जदार 2)	28-07-2022/रू. 93,34,513/- (रूपए तिरानवे लाख चौंतीस हजार पांच सौ तेरह मात्र) एनपीए (10-12-2021)	फ्लैट नंबर 602, टावर नंबर सी-4, छठा तल, पार्श्वनाथ एग्जोटिका गोल्फ कोर्स रोड, सेक्टर-53, गुरूग्राम, हरियाणा-122001
(दिल्ली-पीतमपुरा शाखा का एलसी नंबर : 00041467) मनोज जैन (कर्जदार) कैलाश चंद जैन (सह-कर्जदार 1)	28-07-2022/रू. 45,88,058/- (रूपए पैंतालीस लाख अठासी हजार अठ्ठावन मात्र) एनपीए (09-02-2022)	यूनिट नंबर टी-01/1002, 10वां तल, लेक ड्राइव अपार्टमेंट लेक यूव सिटी कुंडली सोनीपत, हरियाणा-131028
(दिल्ली-पीतमपुरा शाखा का एलसी नंबर : 00041468) मनोज जैन (कर्जदार) कैलाश चंद जैन (सह-कर्जदार 1)	28-07-2022/रू. 42,02,140/- (रूपए बयालीस लाख दो हजार एक सौ चालीस मात्र) एनपीए (09-02-2022)	यूनिट नंबर टी-02/0904, 9वां तल, लेक ड्राइव अपार्टमेंट लेक यूव सिटी कुंडली सोनीपत, हरियाणा-131028
(दिल्ली-पीतमपुरा शाखा का एलसी नंबर : 00041512) आशा (कर्जदार) नमित अरोड़ा (सह-कर्जदार 1)	28-07-2022/रू. 36,08,578/- (रूपए छत्तीस लाख आठ हजार पांच सौ अठहत्तर मात्र) एनपीए (10-12-2021)	टी-08/0901, टावर-08, 9वां तल, फ्लैट नंबर 1, लेक ड्राइव अपार्टमेंट लेक साइड हाइट्स, सिटी कुंडली सोनीपत, हरियाणा-131028
(दिल्ली राजौरी गार्डन शाखा का एलसी नंबर : 00000800) सचिन कुमार (कर्जदार) रूचि प्रसाद (सह-कर्जदार 1)	28-07-2022/रू. 21,51,173/- (रूपए इक्कीस लाख इक्यावन हजार एक सौ तिहत्तर मात्र) एनपीए (09-06-2022)	पी. नंबर 11, प्रथम तल, रियर आरएचएस, जैन कालोनी पार्ट-3, केएच नंबर 20/12, ग्राम मटियाला, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
(ग्रेटर नोएडा शाखा का एलसी नंबर : 00002034) प्रवीण जोशी (कर्जदार) पूजा जोशी (सह-कर्जदार 1)	28-07-2022/रू. 18,51,781/- (रूपए अठारह लाख इक्यावन हजार सात सौ इक्यासी मात्र) एनपीए (12-05-2021)	प्रथम तल फ्लैट नंबर 3002, टावर नंबर डी-3, सागा हैबीटैट, ग्राम खदौली दिल्ली टू रूड़की बाईपास रोड, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250002
(नोएडा सेक्टर-2 शाखा का एलसी नंबर : 00043085) महताब (कर्जदार) शहनाज बेगम (सह-कर्जदार 1)	28-07-2022/रू. 18,17,266/- (रूपए अठारह लाख सत्रह हजार दो सौ छियासठ मात्र) एनपीए (09-06-2022)	प्लॉट नंबर 428, खसरा नंबर 134222, कालोनी खन्ना नगर हदबस्त ग्राम लोनी, परगना लोनी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102
(कड़कड़डूमा नोएडा शाखा का एलसी नंबर : 00000588) पंकज शर्मा (कर्जदार) नीलम कुमारी (सह-कर्जदार 1)	28-07-2022/रू. 17,85,043/- (रूपए सत्रह लाख पिचासी हजार तेतालीस मात्र) एनपीए (09-06-2022)	फ्लैट नंबर 206, द्वितीय तल, आरएचएस प्लॉट नंबर 20, 21, 28, 29 खाता नंबर 01178, कृष्ण वाटिका खसरा नंबर 78, सुदामापुरी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201001
(गुरूग्राम-सोहना रोड शाखा का एलसी नंबर : जीयूआर34467) आनंद सिंह नेगी (कर्जदार)	28-07-2022/रू. 16,15,795/- (रूपए सोलह लाख पंद्रह हजार सात सौ पिच्यानवे मात्र) एनपीए (09-06-2022)	एच/फ्लैट नंबर 377, चतुर्थ तल, पाकेट बी-1, सेक्टर बक्करवाला, ग्राम, नई दिल्ली-110026
(बीकानेर शाखा का एलसी नंबर : 00002299) कमलेश कुमार मीणा (कर्जदार) मनीषा देवी (सह कर्जदार 1)	28-07-2022/रू. 15,91,007/- (रूपए पंद्रह लाख इक्यानवे हजार सात मात्र) एनपीए (09-06-2022)	पट्टा नंबर 4754, वार्ड नंबर 04, मीणों का मोहल्ला, निकट जैन मंदिर, ग्राम रानोली, दांतारामगढ़, सीकर, राजस्थान-332403
(नोएडा शाखा का एलसी नंबर : 00003029) विक्रम बेदी (कर्जदार) सिद्धार्थ बेदी (सह कर्जदार 1) अलका बेदी (सह कर्जदार 2)	28-07-2022/रू. 9,42,967/- (रूपए नौ लाख बयालीस हजार नौ सौ सड़सठ मात्र) एनपीए (11-04-2022)	1/10073 एवं 1/10074, केएच नंबर 354, गली नंबर 3जे, वेस्ट गोरख पार्क, ग्राम बाबरपुर, इलाका शाहदरा, नई दिल्ली-110032

यदि उक्त कर्जदार पीसीएचएफएल को उपरोक्तानुसार भुगतान करने में विफल रहेंगे, पीसीएचएफएल अधिनियम की धारा 13(4) और लागू नियमों के अधीन उपरोक्त प्रतिभूत आस्तियों के विरूद्ध कार्यवाही प्रारंभ करेगी, जिसकी लागत और परिणामों की जोखिम के लिए उक्त कर्जदार पूर्णरूपेण जिम्मेदार होंगे। उपरोक्त आस्तियों का अंतरण पीसीएचएफएल की पूर्व लिखित सहमति के बिना बिक्री, पट्टा या अन्य प्रकार से करने के संबंध में उक्त कर्जदारों पर अधिनियम के तहत रोक लगी है। कोई भी व्यक्ति, जो उक्त अधिनियम अथवा उसके तहत बनाए गए नियमों के प्रावधानों का उल्लंघन करता है अथवा उस हेतु अभिप्रेरित करता है, अधिनियम के अधीन दी गई व्यवस्था के अनुसार कारावास तथा/अथवा आर्थिक दण्ड का भागी होगा।

हस्ता./-
(प्राधिकृत अधिकारी)
पीरामल कैपिटल ऐंड हाउसिंग फाइनैंस लिमिटेड

तिथि : 22-08-2022
स्थान : दिल्ली

अयोध्या में निर्माणाधीन राम मंदिर के पास प्रोजेक्ट बनाने के नाम पर बिल्डर से ठगी

नोएडा। अयोध्या में निर्माणाधीन राम मंदिर के पास एक प्रोजेक्ट बनाने का झांसा देकर नोएडा के एक बिल्डर से लाखों की ठगी का मामला सामने आया है। पीड़ित ने छानबीन की तो पता चला कि आरोपियों ने किसी और की जमीन दिखाकर उनसे पैसे ठगे हैं।

बिल्डर ने सेक्टर-113 थाने में आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज कराया है। सेक्टर.119 निवासी नवीन कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वर्ष 2020 में एक प्रॉपर्टी डीलर के माध्यम से उनकी मुलाकात दिनेश यादव, राकेश कुमार यादव, राजू, केदारनाथ सहित उनके अन्य साथियों से हुई थी। इन लोगों ने नवीन से कहा कि अयोध्या मे राम मंदिर का निर्माण शुरु होने वाला है। इसको लेकर अयोध्या के आसपास विकास कार्य तेजी से चल रहे हैं। आरोपियों ने कहा कि वह मंदिर के पास प्रोजेक्ट बनाने जा रहे हैं।

आरोपियों ने संबंधित जमीन को अपनी बताकर कहा कि यहां प्रोजेक्ट बनाया जाएगा। आरोपियों की बात सुनकर वह उनके झांसे में आ गया। उन्होंने प्रोजेक्ट के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च कर दिए। नवीन का कहना है कि बाद में पता चला कि जिस जमीन को आरोपियों ने अपनी बताया था, वह किसी ओर की निकली। पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर केस दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

SBFC
SBFC Finance Pvt. Ltd.
Address Unit No. 103, First Floor C&B Square, SangamComplex, 127, Andheri-Kurla Road, Village Chakala,Andheri (East), Mumbai 400059 | Telephone: +91 22 67875300 | Fax: +91 22 67875334 | www.sbfc.com|
Corporate Identity Number: U67190MH2008PTC178270

सार्वजनिक सूचना

जनता को यह सूचित किया जाता है कि उपयोग किये गए सोन के गहनों की नीलामी एसबीएफसी फायनैन्स प्रा.लि. द्वारा दिनांक 25 अगस्त 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय लाजपत नगर O-7, ऊपर लुक सलून, लाजपत नगर-II,नई दिल्ली-110024, गौतम बुध नगर जनपद : प्लाट नंबर-5,ग्राउंड फ्लोर,वाइट कैसल होटल के सामने, डबरी रोड, सलारपुर, भंगेल, सेक्टर – 101, जनपद गौतम बुध नगर, नॉएडा–201304 गाजियाबाद जनपद शाखा 2बी, RDC राज नगर, गाजियाबाद नजदीक SBI ब्रांच, हापुड़ जनपद पहली मंजिल, पीसी ज्वैलर्स के ऊपर, गढ़ परगना, पक्का बाग,गढ़ रोड़, हापुड़-245101 पर की जाएगी।

नीलाम किए जाने वाले सोने के गहने उन सभी अतिदेय ग्राहक खातों से संबंधित है जो अपना बकाया देने में असमर्थ है। उधारकर्ताओं को नीलाम की नोटिस पंजीकृत डाक द्वारा विधिवत् जारी की गई है। नीलाम किए जाने वाले सोने के गहने नीचे दिये गये शाखा के अतिदेय ग्राहक खातों से संबंधित है।

नीलाम किये जाने वाले स्वर्ण आभूषण शाखा विवरण के साथ नीचे उल्लेखित विभिन ग्राहकों के ग्राहक ID के सभी लिंक किये गए खातों से सम्बंधित हैं।

Delhi,AP00011808,AP00018003,AP00070503,AP00078569,AP00081903,AP00086320,AP00095058,AP00096630 AP00097598,AP00107712,AP00110118,AP00116620,AP00121714,AP00142173,AP00145957,AP00153595, AP00162941,AP00173329,AP00174138,AP00174992,AP00181350,AP00182435,AP00182873,AP00183054, AP00183344,AP00183509,AP00186356,AP00188890,AP00190462,AP00190699,AP00191992,AP00192718, AP00194699,AP00195646,AP00195948,AP00196352,AP00196391,AP00198128,AP00200903,AP00202015, AP00267842,AP00270260,AP00273477,AP00279878,AP00282120,AP00290354,AP00304132,AP00310040, AP00310463,AP00312674,AP00313054,AP00313577,AP00313712,AP00315513,AP00315649,AP00319246, AP00324262,AP00324632,AP00327245,AP00327278,AP00329700,AP00333067,AP00333357,AP00335698, AP00336556,AP00339524,AP00341121,AP00345128,AP00352242,AP00354989,AP00355347,AP00356144, AP00358539,AP00363381,AP00364087,AP00364475,AP00365340,AP00369260,AP00369858,AP00370605, AP00370642,AP00370755,AP00371208,AP00372229,AP00374755,AP00376767,AP00377190,AP00377584, AP00378350,AP00380986,AP00384012,AP00384656,AP00385126,AP00386188,AP00393004,AP00393797, AP00397744,AP00398244,AP00398293,AP00398551,AP00398622,AP00398845,AP00406453,AP00406750, AP00407306,AP00407793,AP00408990,AP00411404,AP00413725,AP00415034,AP00415710,AP00416050, AP00431254,AP00431509 GHAZIABAD,AP00345011,AP00372051,AP00392921,AP00400549,AP00407064, AP00413189,AP00432232, AP00432581 HAPUR,AP00340647,AP00363262,AP00366307,AP00385742,AP00391157, AP00414485,AP00414591 NOIDA,AP00398033,AP00406150,AP00422409

अधिक जानकारी के लिए, कृपया संपर्क करें:
एसबीएफसी फायनैन्स प्रा.लि.
संपर्क सं.: लाजपत नगर 1800-102-8012 / 011- 40305228 / 207,
फरीदाबाद 01294314725/4104450, और गुरूग्राम शाखा 0124-4276037 नॉएडा: 8368589407,
एसबीएफसी फायनैन्स प्रा.लि. को बिना किसी पूर्व सूचना के नीलाम किए जाने वाले खातों की संख्या में परिवर्तन/निलंबन/निरस्तीकरण करने का अधिकार है

अब नहीं चलेगी निजी स्कूलों की मनमानी, आरटीई के तहत दाखिला नहीं देने पर रद्द होगी मान्यता

- सत्र के चार महीने बीत जाने बाद भी भटक रहे गरीब छात्रों के परिजन

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

शिक्षा के अधिकार आरटीई के तहत निजी स्कूलों की मनमानी अब उन्हें भारी पड़ने वाली है। छात्रों का प्रवेश न लेने वाले स्कूलों की मान्यता रद्द करने के लिए कमेटी गठन की प्रकिया अंतिम चरण में है। कमेटी में तीन सदस्य होंगे, जो प्रवेश न लेने वाले स्कूलों की जांच कर रिपोर्ट बेसिक शिक्षा अधिकारी को सौंपेंगे।

जिलाधिकारी सुहास एलवाई ने सभी स्कूलों को पत्र जारी कर प्रवेश लेने के निर्देश दिए है। बता दे निजी स्कूलों को 25 प्रतिशत सीटों पर गरीब छात्रों को प्रवेश देना है, लेकिन स्कूल वाले प्रवेश देने के नाम पर मनमानी कर रहे है। नया सत्र शुरू हुए चार महीने से अधिक हो गए है। आरटीई के तहत प्रवेश लेने के लिए अभिभावक स्कूलों के चक्कर लगा रहे है। स्कूल कोई न कोई बहाना बनाकर अभिभावकों को गेट से ही भगा देते है। कई किलोमीटर की दूरी तय करके अभिभावक जिला बेसिक शिक्षा और जिलाधिकारी कार्यालय पहुंच रहे है।

उसके बाद भी उन्हें केवल आश्वाशन ही मिल रहा है। कई स्कूल वाले विभाग की ओर से किए जा रहे फोन तक का जवाब देना उचित नहीं समझ रहे है। अब विभाग ने ऐसे स्कूलों की मान्यता रद करने की तैयारी शुरु कर दी है। आरटीई के तहत तीन चरण में 5600 सीटों पर गरीब छात्रों को निजी स्कूलों में प्रवेश दिया जाना था, लेकिन अभी केवल 4200 छात्रों को ही प्रवेश मिल पाया है। पढ़ाई के चार महीने बीत जाने के बाद भी लगभग 1400 छात्रों का प्रवेश नहीं हो पाया है।

आरटीई के तहत प्रवेश लेने में आनाकानी वाले स्कूलों में स्टेप बाई स्टेप स्कूल सेक्टर 132 नोएडा, बाल भारती पब्लिक स्कूल सेक्टर 21 नोएडा, फ ार्च्यून व ?ल्र्ड स्कूल सेक्टर 105 नोएडा, ब्रेन ट्री ग्लोबल स्कूल सिग्मा 2 ग्रेटर नोएडा, ऑक्सफ ोर्ड ग्रीन पब्लिक स्कूल पीपलका, केआर मंगलम व ?ल्र्ड स्कूल सेक्टर चाई ग्रेटर नोएडा, राघव ग्लोबल स्कूल सेक्टर 122 नोएडा, सीमेक्स इंटरनेशनल स्कूल ग्रेटर नोएडा, समरविले स्कूल सेक्टर 132 नोएडा, प्रोमैथियस स्कूल सेक्टर 131 नोएडा, मार्डन पब्लिक स्कूल शाहबेरी, दिल्ली पब्लिक स्कूल के साथ ही कई अन्य स्कूलों का नाम लिस्ट में शामिल है, जिनकी सबसे अधिक शिकायत विभाग के पास पहुंच रही है।

इतिहास व टेक्नोलॉजी बताएगी एक्वा लाइन

- जल्द बनेगा मेट्रो म्यूजियम

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

एक्वा मेट्रो लाइन के किसी एक स्टेशन पर मेट्रो म्यूजियम बनेगा। नोएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने इसकी तैयारी शुरू कर दी है। 200 से 250 वर्ग मीटर के इस म्यूजियम को कौन से स्टेशन पर बनाया जाए, कैसे विशेष बनाया जाए।

यह सुझाव एनएमआरसी किसी कंसल्टेंट से जल्द लेगा, जिसके चयन को रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल आरएफपी जारी कर दी गई है। कंसल्टेंट जिसका चयन होगा उससे नोएडा मेट्रो अन्य मामलों में भी मशविरा लेगा।

एनएमआरसी के अधिकारियों ने म्यूजियम के प्रस्ताव के बारे में बताया कि यह अभी प्राथमिक स्तर पर है। नोएडा से ग्रेनो के बीच कई स्टेशन पर कुछ न कुछ बनाए जाने की तैयारी है। बनने वाले म्यूजियम में मेट्रो के विकास से जुड़ी सभी जानकारियां होंगी। इसमें दिल्ली मेट्रो की शुरुआत को भी शामिल किया जाएगा। नोएडा मेट्रो के साथ अन्य शहरों के मेट्रो के इतिहास और टेक्नॉलाजी में समय के साथ हुई प्रगति को भी तस्वीरों के जरिए बताने की कोशिश होगी। म्यूजियम बच्चों के लिए भी कैसे फ्रेंडली बनाया जाए।

इस पर और अन्य बिंदुओं पर कंसल्टेंट सुझाव देगा। इसके साथ ही कंसल्टेंट से यात्रियों की संख्या बढ़ाने, लास्ट माइल कनेक्टिविटी, कमर्शल प्रॉपर्टी को बेचने समेत अन्य सुझाव भी लिए जाएंगे।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक नरेन्द्र कुमार द्वारा नं. 6, गुलाब भवन के पीछे, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। कार्यकारी संपादक: नवीन उपाध्याय, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं। पत्रवार्ता ऑफिस- एफ-31, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्धनगर-201301, उत्तर प्रदेश, दूरभाष- 120-4879900।

शराब नीति पर एक-दूसरे को घेर रही भाजपा-आप

वर्ष 2024 में जनता भाजपा को करेगी ऑल आउट : संजय सिंह

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के घर समेत देश भर में पड़े सीबीआई के छापे के बाद राजधानी दिल्ली का सियासी पारा गरमाया हुआ है। रविवार को सिसोदिया ने दावा किया कि उनके खिलाफ लुकआउट नोटिस किया गया है।

इसके बाद पारा और चढ़ गया। आम आदमी पार्टी के द्वारा लगातार भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधने के साथ एक के बाद एक गंभीर आरोप लगाए जा रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ भाजपा भी पूरे मामले पर मीडिया के सामने आकर काउंटर कर रही है।

आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने रविवार को संवाददाता सम्मेलन में उप मुख्यमंत्री को लुकआउट नोटिस जारी किए जाने के मसले पर केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर ना सिर्फ जमकर निशाना साधा, बल्कि कई गंभीर आरोप भी लगाए। संजय सिंह ने कहा कि जिस तरह से लुकआउट नोटिस जारी किया गया है। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को देश की जनता ऑल आउट करने जा रही है। सिंह के अनुसार जब सीबीआई के छापों के बाद कुछ नहीं मिला तो पीएम मोदी लुकआउट नोटिस निकाल कर नौटंकी करते हैं। मोदी ने अरविंद केजरीवाल की बढ़ती लोकप्रियता से घबराकर यह लुक आउट नोटिस दिया है।

भाजपा कान खोल कर सुन ले, अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया धमकियों से डरने वाले नहीं हैं। लुक आउट नोटिस उसके खिलाफ जारी किया जाता है, जो जांच में सहयोग नहीं कर रहा हो या जिसके भागने की संभावना हो।

सिसोदिया न तो कहीं जा रहे हैं और न तो कहीं भाग रहे हैं। नीरव मोदी, मेहुल चौकसी, विजय माल्या, ललीत मोदी, नितिन संदेसरा, हजारों करोड़ रुपए लूटकर भाग गए।

मोदी सरकार उनको लुट आउट नोटिस नहीं जारी करती है, लेकिन जिस कैबिनेट मंत्री को बाहर जाने से पहले केंद्र से अनुमति लेनी पड़ती है, उसको लुक आउट नोटिस जारी कर रही है।

'जनता महंगाई और नौजवान बेरोजगारी से कराह रहे'

नई दिल्ली। देश में इस समय मुद्दा महंगाई है। देश की जनता महंगाई से कराह रही है। पीएम मोदी के पास महंगाई का कोई जवाब नहीं है। भाजपा के पास महंगाई का समाधान तलाशने के लिए फुर्सत नहीं है। सरकार ने आटा, दाल, दूध, सिलेंडर, दूध-दही, छांछ पर टैक्स लगा दिया और अपने दोस्तों के 5 लाख करोड़ रुपए का टैक्स माफ कर दिया। इस पर जवाब देने के लिए पीएम के पास फुर्सत नहीं है।

दांव उल्टा पड़ा तो कहते हैं कि नोटिस जारी ही नहीं किया : आतिशी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता आतिशी ने कहा कि पीएमओ से सुबह आदेश मिला की मीडिया में स्टोरी प्लांट करो कि मनीष सिसोदिया के नाम से लुक आउट नोटिस जारी हो गया है। जब जनता में उल्टा असर पड़ा तो कहते हैं कि सीबीआई ने लुक आउट नोटिस जारी ही नहीं किया। पीएमओ से अलग-अलग स्टोरीज प्लांट करवाने की नौटंकी सीबीआई रेड से ध्यान भटकाने की कोशिश है। क्योंकि 14 घंटे की रेड के बाद भी सिसोदिया के घर से उन्हें कुछ भी नहीं मिला। भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा प्रवक्ताओं के जरिए सीबीआई के बारे में अलग-अलग स्टोरियां प्लांट करवाई जा रही है।

केजरीवाल बताएं, आबकारी नीति वापस क्यों ली : भाटिया

पत्रकारों से बातचीत करते गौरव भाटिया, आदेश गुप्ता व अन्य।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

नई आबकारी नीति को लेकर आरोपों में घिरी दिल्ली सरकार पर भाजपा नेता लगातार हमला कर रहे हैं। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने आम आदमी पार्टी के संयोजक से सवाल करते हुए पूछा कि केजरीवाल 24 घंटे के अंदर बताए कि उन्होंने आबकारी नीति वापस क्यों ली।

उन्होंने कहा कि केजरीवाल के मंत्रियों से सवाल आबकारी नीति में हुए भ्रष्टाचार पर किया जाता है तो जवाब आता है कि दिल्ली की शिक्षा मॉडल की तारीफ विदेशी अखबारों में हो रही है। लेकिन हकीकत तो यही है कि आम आदमी पार्टी आज जनता के लिए अभिशाप साबित हुई है।

अगर केजरीवाल में थोड़ी भी नैतिकता बची हो तो वे तुरंत सतेंद्र जैन और मनीष सिसोदिया को मंत्री पद से बर्खास्त करें। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष आदेश गुप्ता के साथ एक संवाददाता सम्मेलन में रविवार को गौरव भाटिया ने कहा कि देश की जनता और दिल्ली वाले भी समझ चुके हैं कि केजरीवाल सबसे भ्रष्ट मुख्यमंतत्री हैं। उन्हें गर्व है कि उन्होंने दिल्ली में एक सकारात्मक विपक्ष की भूमिका का निर्वहन करते हुए जनता के सवाल विधानसभा में उठाया और उसका परिणाम आज सबके सामने है कि केजरीवाल द्वारा किये गए भ्रष्टाचार की परतें एक एक करके खुलती जा रही हैं।

ईमानदारी का ढोंग रचने वाले केजरीवाल जब दिल्ली वाले कोविड-19 महामारी को लेकर पूरी तरह से परेशान थे तो उस वक्त शराब माफियाओं के साथ मिलकर दिल्ली को लूटने की साजिश रच रहे थे। भाटिया ने मनीष सिसोदिया के उस जवाब को शर्मनाक बताया जिसमें वे घोटालों पर किये गए सवाल का जस्टिफिकेशन यह दे रहे थे कि यह तो सिर्फ एक करोड़ का छोटा घोटाला है। आज जनता के सवालों से केजरीवाल की ईमानदारी की नींव पूरी तरह से हिल गई है और वे किसी भी सवालों का सही से जवाब देने में सक्षम नहीं है। आखिर शराब माफियाओं के साथ इतनी दोस्ती कब से हो गई कि 144 करोड़ रुपये माफ किये गए फिर 30 करोड़ रुपये जुर्माना भी माफ कर दिया गया। क्या इसी विजन को लेकर केजरीवाल सत्ता में आये थे।

एक ही मंत्री शिक्षा और आबकारी विभाग संभाल रहा: आदेश गुप्ता

आदेश गुप्ता ने कहा कि आजादी के बाद यह पहली बार देखा गया है एक ही मंत्री शिक्षा विभाग और आबकारी विभाग संभाल रहा है। यही केजरीवाल है जो कहा करते थे कि अगर किसी भी मंत्री या नेता के खिलाफ भ्रष्टाचार का सिर्फ आरोप लगा तो वह उसे मंत्रिमंडल से बर्खास्त कर देंगे, लेकिन आखिर ऐसी कौन सी मजबूरी है जो सतेंद्र जैन के जेल जाने के बाद भी केजरीवाल उन्हें मंत्रिमंडल से बर्खास्त नहीं कर पा रहे हैं।

शराब लाइसेंस घोटला

सीबीआई जांच के दायरे में कॉमेडियन समेत कई अधिकारी

- केंद्रीय एजेंसी ने 13 व्यक्तियों, दो कंपनियों और अन्य अज्ञात लोकसेवकों तथा निजी व्यक्तियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

शराब लाइसेंस घोटाले की जांच के दायरे में एक दर्जन से अधिक स्टैंडअप कॉमेडियन, हैदराबाद से जुड़े शराब के थोक और खुदरा व्यापारियों का एक समूह और मुंबई के सामान पते वाली कॉरपोरेट संस्थाएं शामिल हैं। इसके अलावा वैश्विक और घरेलू शराब निर्माताओं के कुछ सेवारत और पूर्व अधिकारी, सोशल मीडिया पर अति सक्रिय रहने वाले लोग, घुड़दौड़, सट्टेबाजी और ऑनलाइन गेमिंग की गतिविधियों में लगे व्यक्ति और कंपनियां भी जांच के दायरे में हैं।

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने दिल्ली, मुंबई और हैदराबाद सहित विभिन्न स्थानों पर तलाशी लेने के बाद 13 व्यक्तियों, दो कंपनियों और अन्य अज्ञात लोकसेवकों तथा निजी व्यक्तियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है।

कॉरपोरेट मामलों का मंत्रालय और संबंधित एजेंसियां किसी भी संभावित गलत काम का पड़ताल करने के लिए सीबीआई द्वारा नामित कंपनियों के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ी कंपनियों के नेटवर्क से जुड़े मामलों की भी जांच कर रही हैं। मामले से अवगत अधिकारियों ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि प्रारंभिक जांच ज्यादातर टूलकिट मॉड्यूल पर केंद्रित है, जिसका उपयोग दिल्ली में उदार शराब बिक्री नीति के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया तंत्र बनाने के लिए किया जा सकता था। विभिन्न सरकारी विभागों और प्रवर्तन एजेंसियों में काम करने वाले एक अधिकारी चल रही जांच में सीधे तौर पर शामिल हैं। कुछ अधिकारियों ने स्वीकार किया कि जांच राजनीतिक रूप से प्रेरित हो सकती है, लेकिन उन्होंने कहा कि कुछ नियमों के उल्लंघन के प्रथम दृष्टया पर्याप्त सबूत हैं, जिनमें वित्तीय गड़बड़ी और कंपनी अधिनियम के तहत भौतिक जानकारी का खुलासा न करना तथा सूचना प्रौद्योगिकी और अन्य अधिनियमों के दायरे में आने वाली गलत सूचना के प्रसार जैसी चीजें शामिल हैं। एक अन्य पहलू पर भी ध्यान दिया जा रहा है, जिसमें शेयर और क्रिप्टोकरंसी में वित्तीय लेन-देन शामिल है।

उनके अनुसार, ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म से जुड़े लोग भी जांच के दायरे में हैं। अधिकारियों ने बताया कि कॉमेडियन, व्यापारियों, सोशल मीडिया पर अति सक्रिय रहने वाले और मनोरंजन उद्योग से जुड़े लोगों सहित कम से कम 50 व्यक्तियों की विदेश यात्राओं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वित्त प्रेषण की भी जांच की जा रही है। इस सूची में हैदराबाद से संबद्ध विभिन्न व्यक्ति और कंपनियां भी शामिल हैं, जिन्हें दिल्ली में शराब की बिक्री के लिए लाइसेंस जारी किया गया था। जांच में एक प्रमुख नाम जो सामने आया है, वह है विजय नायर और उन कंपनियों का एक तंत्र जिनसे वह जुड़े हैं।

संक्षिप्त समाचार

साइकिल रैली में हिस्सा लेती युवतियां।

कैंसर से बचाव के लिए निकाली साइकिल रैली

नई दिल्ली । कैंसर समेत कई गंभीर बीमारियों से बचने में शारीरिक सक्रियता का अहम योगदान हो सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए 200 से ज्यादा महिलाओं ने जीवनशैली में बदलाव के प्रति जागरूकता बढ़ाने के मकसद से आयोजित साइक्लोथॉन 'होप ऑन द व्हील्स' में हिस्सा लिया। राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर नीति बाग ने रोटरी इंटरनेशनल के साथ मिलकर इस साइकिल रैली का आयोजन किया। इस दौरान महिलाओं ने आरजीसीआईआरसी नीतिबाग से 20 किलोमीटर की साइकिल रैली निकाली। मौके पर अभिनेत्री सयाली भगत बतौर मुख्यातिथि उपस्थित थीं। उन्होंने भी इस साईकिल रैली में शिरकत की। रैली दिल्ली गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, मदनगीर और साईंधाम, हौजखास से होकर निकली, जहां स्तन कैंसर, सर्विक्स कैंसर और ओरल कैंसर की निशुल्क स्क्रीनिंग के लिए हेल्थ चेकअप कैंप लगाए गए थे। आरजीसीआईआरसी मेडिकल डायरेक्टर डॉ. गौरी कपूर ने कहा कैंसर के बढ़ते मामलों में तंबाकू एवं शराब के सेवन और खराब जीवनशैली की बड़ी भूमिका है।

रामलीला से पहले डांडिया, बाद में होगा कवि सम्मेलन

नई दिल्ली। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस टू की कार्यकारिणी बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि इस वर्ष संपूर्ण रामलीला का मंचन किया जाएगा। रामलीला का लाइव प्रसारण इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व फेसबुक आदि के माध्यम से किया जाएगा। श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर अशोक विहार फेस टू में संपन्न हुई बैठक में रामलीला के महामंत्री अनिल यादव ने बताया कि रामलीला शुभारंभ की पूर्व संध्या पर डांडिया नृत्य व रावण दहन के पश्चात महा कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। डांडिया नृत्य सुप्रसिद्ध कलाकारों के नेतृत्व में संपन्न होगा। रामलीला के अध्यक्ष अशोक गर्ग ने बताया कि अधिक से अधिक दर्शकों तक हम अपनी रामलीला का इलेक्ट्रॉनिक व सोशल मीडिया के द्वारा लाइव मंचन दिखा सकें ऐसा पूर्ण प्रयास करेंगे। रामलीला का मंच व प्रवेश द्वार अयोध्या में नवनिर्मित श्री राम मंदिर के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा। मंचन निपुण कलाकारों के द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। नदी, झरना, वन ,पहाड़ आदि का प्राकृतिक दृश्य मनमोहक होगा। युद्ध व आकाशीय लीला को लेजर लाइटिंग के माध्यम से रोचक बनाया जाएगा। एलइडी स्क्रीन तकनीकी से महल, भवन आदि के दृश्य दर्शकों को आकर्षित करेंगे।

भारत स्काउट गाइड के अध्यक्ष बने मनोज तिवारी

नई दिल्ली। भाजपा सांसद मनोज तिवारी भारत स्काउट गाइड दिल्ली राज्य के अध्यक्ष बनाए गए हैं। दिल्ली राज्य भारत स्काउट गाइड में स्काउट गाइड के तत्वावधान में निर्वाचन प्रक्रिया के अंतर्गत सांसद मनोज तिवारी को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया इसके अलावा, डॉक्टर सुरेन्द्र कुमार शर्मा प्रादेशिक मुख्य आयुक्त एवम उपाध्यक्ष जे .आर. कश्यप, वाई मार्का, प्रेम भटनागर, माया गुप्ता, निर्मल, करुणा ऋषि, रूपिंदर कौर, दविंदर अरोरा, कुलवीर सिंह, संजय कुमार राजेंद्र प्रसाद गर्ग, रविन्द्र यादव को निर्विरोध निर्वाचित किया गया। निर्वाचन प्रक्रिया के बाद नवनिर्वाचित सदस्यों को संबोधित करते हुए मनोज तिवारी ने भरोसा दिया कि दिल्ली राज्य में करोना काल में उप राज्यपाल पुरस्कार में जो अवरोध उत्पन्न हुआ है उसे शीघ्र ही दूर कर स्काउट गाइड को उपराज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किए जाने की प्रक्रिया को निरंतर कराने की कोशिश करेंगे। सभी नवनिर्वाचित सदस्यों ने दिल्ली प्रदेश में भारत स्काउट गाइड को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की शपथ ली।

अपराधों का शतक लगाने वाला बदमाश गिरफ्तार, पिस्टल जब्त

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने 125 से ज्यादा अपराधिक वारदातों में शामिल रह चुके एक कुख्यात बदमाश को गिरफ्तार किया है। इसके पास से एक पिस्टल और तीन कारतूस मिले हैं। आरोपी की पहचान वसीम अकरम के रूप में हुई है।

अकरम 35 मामलों में वांटेड है। इनमें कोटला मुबारकपुर थाने के एसएचओ के ऊपर फायरिंग का भी एक केस शामिल है। जहांगीरपुरी में आरोपी की छवि रॉबिनहुड की तरह थी। वह निम्न वर्गीय लोगों की मदद करता था, जिस कारण उसके बड़ी संख्या में प्रशंसक हैं। पुलिस उपायुक्त जसमीत सिंह ने बताया 27 साल का वसीम अकरम उर्फ लम्बू सीडी पार्क जहांगीरपुरी इलाके का रहने वाला है। इसे 19 अगस्त की तड़के आनंद विहार रेलवे स्टेशन के पास से पकड़ा गया था। पुलिस से बचने के लिए वह लगातार ठिकाने बदलकर दिल्ली, वेस्ट बंगाल, बिहार और हरियाणा में रह रहा था। अपराधों के मामले में शामिल रह चुके वसीम के ऊपर हत्या, लूट, झपटमारी, रेप, सेंधमारी, पुलिस पर हमला करने जैसे कई संगीन मामले दर्ज हैं।

सत्येंद्र जैन को मानसिक रूप से अस्वस्थ करार नहीं दिया जा सकता

- उच्च न्यायालय में जैन को विधायक व मंत्री पद के लिए अयोग्य ठहराने वाली जनहित याचिका खारिज

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सत्येंद्र जैन

उच्च न्यायालय ने धनशोधन के धन शोधन के मामले में गिरफ्तार आम आदमी पार्टी के नेता सत्येंद्र जैन को मानसिक रूप से अक्षम घोषित करने और इस आधार पर उन्हें विधायक एवं मंत्री पद के लिए अयोग्य ठहराने का अनुरोध करने वाली जनहित याचिका खारिज कर दी है।

मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा और न्यायमूर्ति सुब्रह्मण्यम प्रसाद की पीठ ने कहा कि याचिका में कही बातों के आधार पर जैन को मानसिक रूप से अक्षम व्यक्ति घोषित नहीं किया जा सकता है और न ही उन्हें मंत्रिमंडल तथा विधानसभा से अयोग्य ठहराया जा सकता है।

पीठ ने कहा कि आप विधायक विभिन्न अपराधों के लिए मुकदमे का सामना कर रहे हैं और कानून के अनुसार उचित कदम उठाने की जिम्मेदारी अदालत की है। अदालत ने 16 अगस्त के अपने आदेश में कहा, यह सच है कि प्रतिवादी नंबर पांच (जैन) आईपीसी और भ्रष्टाचार रोकथाम कानून के साथ ही धन शोधन रोकथाम कानून के तहत विभिन्न अपराधों के लिए मुकदमों का सामना कर रहा है। बहरहाल, तथ्य यही है कि दंड प्रक्रिया संहिता-1973 अपने आप में एक पूर्ण संहिता है, जो पूछताछ, जांच और मुकदमे के संबंध में एक व्यवस्था उपलब्ध कराती है। पीठ के अनुसार, दंड प्रक्रिया संहिता में सभी आकस्मिकताएं शामिल हैं और कानून के अनुसार उचित कदम उठाने की जिम्मेदारी अभियोजन अदालत की है। उच्च न्यायालय ने कहा, रिट याचिका में कही बातों के आधार पर यह अदालत भारत के संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत न्यायाधिकार का इस्तेमाल करते हुए प्रतिवादी को मानसिक रूप से अक्षम व्यक्ति घोषित नहीं कर सकती और न ही उन्हें विधानसभा या दिल्ली सरकार में मंत्री पद से अयोग्य ठहरा सकती है।

जंतर-मंतर जा रहे राकेश टिकैत को रोका

- रोजगार आंदोलन के समर्थन में पहुंचे कई नेता एवं किसान संगठन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

जंतर-मंतर स्थित देश में बेरोजगारी के खिलाफ प्रदर्शन में हिस्सा लेने जा रहे किसान नेता राकेश टिकैत को रविवार को दिल्ली में प्रवेश की कोशिश करने पर गाजीपुर बॉर्डर पर पुलिस ने हिरासत में ले लिया।

वहीं रोजगार आंदोलन के समर्थन में बड़ी संख्या में कई नेता व किसान संगठन के लोग पहुंचे। दिल्ली पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि भारतीय किसान यूनियन (बीकेयू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता और संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) के अहम चेहरे टिकैत को गाजीपुर बॉर्डर पर दोपहर के आसपास रोक लिया गया। विशेष पुलिस आयुक्त (कानून व्यवस्था) दीपेंद्र पाठक ने कहा कि उसके बाद उन्हें हिरासत में ले लिया गया और मधु विहार थाने ले जाया गया, जहां पुलिस ने उनसे लौट जाने का अनुरोध किया। उन्होंने बताया कि टिकैत ने पुलिस के अनुरोध को स्वीकार कर लिया और उन्हें वापस भेज दिया गया।

सूत्रों ने बताया कि टिकैत को इसलिए हिरासत में लिया गया, क्योंकि दिल्ली पुलिस राष्ट्रीय राजधानी में अनावश्यक भीड़भाड़ रोकने का प्रयास कर रही है। टिकैत ने ट्वीट किया कि सरकार के इशारे पर काम कर रही दिल्ली पुलिस किसानों की आवाज को नहीं दबा सकती। यह गिरफ्तारी एक नई क्रांति लेकर आएगी। यह संघर्ष अंतिम सांस तक जारी रहेगा। न रुकेंगे, न थकेंगे और न ही झुकेंगे। दिल्ली के मंत्री और आम आदमी पार्टी के नेता गोपाल राय ने टिकैत को हिरासत में लिए जाने की निंदा की। उन्होंने ट्वीट किया, जंतर-मंतर पर होने जा रहे रोजगार आंदोलन में हिस्सा लेने आ रहे किसान नेता राकेश टिकैत को पुलिस ने बॉर्डर पर ही रोक दिया। यह बहुत ही निंदनीय है। एसकेएम और अन्य किसान संगठन सोमवार को महापंचायत आयोजित करेंगे।

महिला कर्मियों को फील्ड में काम करने का मौका दे रही पुलिस

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

एक योजना के तहत महिला कर्मियों को फील्ड में काम करने का अवसर प्रदान कर रही है दिल्ली पुलिस।

पुलिस की ओर से तीन महीने तक चलने वाले उड़ान नामक इस कार्यक्रम की शुरुआत 15 जून को की गई थी। इस पहल के तहत उत्तरी जिले के हर पुलिस थाने से दो महिला पुलिसकर्मियों अर्थात 28 महिला कांस्टेबल और हेड कांस्टेबल को उनकी शैक्षणिक योग्यता और कार्य कुशलता के आधार पर चुना गया है। इससे 32-वर्षीया हेड कांस्टेबल पूजा चौहान जैसी कई महिला पुलिकर्मियों को थाने में डेस्क आधारित कामकाज से हटकर फील्ड में काम करने का मौका मिलेगा। वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार, दिल्ली पुलिस की नौकरी में शामिल होने वाली अधिकतर महिलाएं डेस्क पर काम करने का विकल्प चुनती हैं।

इनमें दैनिक डायरी लिखने, डेटा एंट्री ऑपेरटर का काम करने या रिकॉर्ड रूम में काम करने वाली महिलाएं होती हैं। माता-पिता या पति द्वारा आपत्ति जताने और कई अन्य कारणों से महिला पुलिसकर्मी अग्रिम मोर्चे पर जाकर या बीट स्तर पर पुलिस का काम करने से बचती हैं। इसके अलावा यदि वे फील्ड में जाना भी चाहती हैं तो कई वर्षों तक डेस्क पर काम करने के कारण इसके लिए उनमें विश्वास पैदा नहीं होता। एक अधिकारी ने कहा कि इस योजना का लक्ष्य ऐसी पुलिसकर्मियों को फील्ड में काम करने का अवसर उपलब्ध कराना है। उत्तरी जिले में इस पहल को क्रियान्वित करने का जिम्मा अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त अनीता रॉय ने लिया है जिन्होंने खुद उन महिला पुलिसकर्मियों को सशक्त करने का बीड़ा उठाया है।

बाग-ए-बहार में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को दें बढ़ावा: उपराज्यपाल

एलजी विनय कुमार ने वसंत विहार के उद्यान में विकास कार्यों का लिया जायजा

- स्थानीय कलाकारों को बिना शुल्क प्रोत्साहित करने की अपील

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

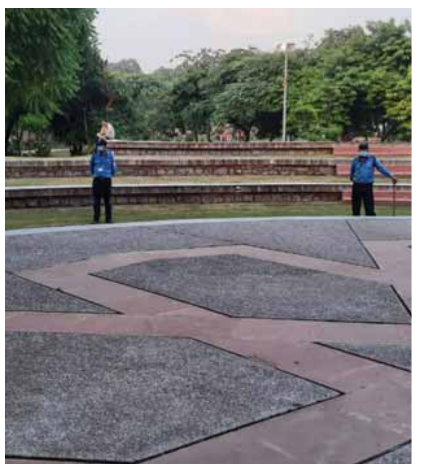

वसंत विहार स्थित वसंत उद्यान स्थित एम्फीथिएटर क्षेत्र में और अधिक सांस्कृतिक कार्यक्रम करने के निर्देश उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने शनिवार को दिया।

उपराज्यपाल ने यह निर्देश पार्क के विस्तार व विकास कार्यों का जायजा लेने के दौरान दिया। उन्होंने स्थानीय कलाकारों तथा अदाकारों को पार्क में प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करने के भी निर्देश दिए और कहा कि डीडीए इन कलाकारों से सुविधाओं का उपयोग करने के लिए कोई शुल्क वसूल न करें।

वसंत विहार में वसंत उद्यान पार्क जिसे बाग-ए-बहार के नाम से भी जाना जाता है, सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त डीडीए का एक प्रतिष्ठित पार्क है। पार्क का पुनर्विकास कार्य वर्ष 2020 में पूरा किया गया था। पार्क को इंडिया पवेलियन, लंदन बिनाले 2021 में प्रदर्शित करने के लिए चुना गया था, जो दुनिया के सबसे महत्वाकांक्षी और कल्पनाशील डिजाइनरों, क्यूरेटरों और डिजाइन संस्थानों की वैश्विक सभा है। 43.17 एकड़ में फैले हुए इस पार्क में बच्चों के खेलने हेतु विभिन्न उपकरणों से युक्त प्ले एरिया , ओपन जिम, पॉप अप सिंचाई प्रणाली, आम जनता हेतु सुविधा , विभिन्न प्रकार की लाइटें, जिसमें बगीचे की लालटेन भी शामिल है, जैसी सुविधाएं हैं।

लोगों की बेहतर सुरक्षा के लिए इसमें सीसीटीवी लगे हैं। उपराज्यपाल ने हरित क्षेत्र के डिजाइन, विकास और रखरखाव के साथ-साथ पार्क में विरासत संरचनाओं को बनाए रखने के तरीके की भी सराहना की। हरित क्षेत्र के लैंडस्केप डिजाइन में शामिल किए गए ऐतिहासिक संदर्भों को देखते हुए, श्री सक्सेना ने अधिकारियों को अन्य पार्कों जिनमें ऐसी विरासत संरचनाएं हैं, में भी इस पद्धति को दोहराने का निर्देश दिया।

उपराज्यपाल महोदय ने अपेक्षित सुरक्षा उपायों के साथ पुरातत्व विभाग, जीएनसीटीडी द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए स्मारक के बारादरी क्षेत्र का पता लगाने के लिए भी कहा।

नकली हादसे देखकर रुकते हैं, असली को करते हैं अनदेखा...

सड़क पर एक्सीडेंट की शूटिंग देखने को लगी लोगों की भीड़

कलाकारों ने असली एक्सीडेंट के समय सहायता करने को किया प्रेरित

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

गुरुग्राम सेक्टर-10 में सड़क दुर्घटना की शूटिंग के दौरान युवा कलाकार निखिल सहराय।

आज के दौर में इंसान सड़कों पर होने वाले हादसों में घायलों को बचाने के लिए कम ही दिलचस्पी दिखाते हैं। बहुत से लोग तो हादसा देखकर रुकना भी जरूरी नहीं समझते। अगर घायलों को अस्पताल पहुंचाया जाए तो बहुत से लोगों का जीवन बचाया जा सकता है। यह सीख और संदेश दिया है युवा कलाकार निखिल सहराय ने। वे कहते हैं कि समाज में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जो इंसानियत का फर्ज जिम्मेदारी से निभाते हैं।

दरअसल, एचकेआई फिल्म अकादमी की ओर से निखिल यहां सेक्टर-10 चौक के सड़क दुर्घटना होने की शूटिंग कर रहे थे। साथ में टीम के कुछ और सदस्य भी थे। जैसे ही उन्होंने अपना काम शुरू किया तो उन्हें देखने वालों की भीड़ लग गई। शूटिंग के दृश्य देखकर वहां हर कोई ठहरता जा रहा था। बाइक चालक हो या गाड़ी चालक। सभी के ब्रेक वहां लग रहे थे। शूटिंग कर रहे कलाकारों को हर कोई अपने मोबाइल में रिकॉर्ड करने में लगा था। सभी को मालूम हो गया था कि वह सड़क दुर्घटना की शूटिंग हो रही है। लोगों की इस आदत कलाकार निखिल सहराय के दिमाग में सवाल पैदा कर दिया और उस सवाल से निखिल ने लोगों को जवाब भी दिया है। निखिल कहते हैं कि, नकली एक्सीडेंट के जिस तरह से सब वीडियो बना रहे थे। कलाकारों के बहुत पास आने की कोशिश कर रहे थे, अगर असली एक्सीडेंट होता तो ये ही लोग दूर से निकलते। ऐसा नहीं होना चाहिए।

उनका कहना है कि हमें हर कदम पर कुछ ना कुछ अच्छा सीखना चाहिए। असली हादसे जब हमारे सामने होते हैं तो हमारी सोच बदल जाती है। जबकि हादसे में घायलों को हमारी मदद की जरूरत होती है। जरूरी है कि हम एक्सीडेंट में घायलों को देखकर दूर से निकलने की बजाय उन्हें अस्पताल पहुंचाएं। हमें एक जिम्मेदार नागरिक बनकर हर व्यक्ति के साथ हुई अप्रिय घटनाओं में अपनेपन की सोच के साथ काम करना चाहिए। विशेषकर युवाओं को निखिल संदेश देते हैं कि वे अपनी जिम्मेदारियों को समझें। हमने अपने देश के सम्मान के लिए तिरंगे लहराकर एक रस्म तो निभा ली है, लेकिन तिरंगे और राष्ट्र का सम्मान, रक्षा का महत्व तब और बढ़ जाता है जब हम अपने देश के नागरिकों का सम्मान करें। उनकी रक्षा में अपना योगदान दें। निखिल कहते हैं कि, हम राह चलते किसी दुर्घटना में घायल की सहायता करके उसका बचाव कर सकते हैं। घायलों के लिए हम रक्तदान कर सकते हैं। हमारा खून किसी का जीवन बचाने में काम आए, यह भी बहुत बड़ी समाजसेवा है। निखिल कहते हैं कि वे कोई दार्शनिक तो नहीं हैं, लेकिन एक अपनी शूटिंग से ही उसने बहुत कुछ सीख लिया है।

आध्यात्मिकता ही सर्व समस्याओं का है हल : बीके सूरज

गुरुग्राम के बिलासपुर स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में रविवार को वर्तमान परिदृश्य में आध्यात्मिकता की भूमिका विषय पर कार्यक्रम में बोलते बीके सूरज।

तनाव से मुक्ति को आध्यामिकता को जीवन में उतारें

गुरुग्राम। आधुनिकता के इस दौर व बदलते परिवेश में विभिन्न परिस्थितियों के कारण जीवन में कई चुनौतियों का सामना व्यक्ति को करना पड़ रहा है। छोटी-छोटी बातों से व्यक्ति तनाव का शिकार हो जाता है। तनाव से मुक्ति का एक ही मार्ग है कि आध्यामिकता को जीवन में उतारा जाए ताकि व्यक्ति तनावमुक्त होकर आराम का जीवन जी सकें। इसी को लेकर धार्मिक संस्था ब्रह्माकुमारीज ने बिलासपुर स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में रविवार को वर्तमान परिदृश्य में आध्यात्मिकता की भूमिका विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया।

संस्था के मोटिवेशनल स्पीकर बीके सूरज ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे श्रेष्ठ विचार ही व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। विचार ही भविष्य की आधारशिला हैं। विचार ही मन को सुख और दु:ख की अनुभूति कराते हैं। अनेक साधनों के माध्यम से लोग मनोरंजन करते हैं, लेकिन फिर भी मन का रंज बढ़ता ही जा रहा है। उन्होंने कहा कि बाहरी साधनों से स्थाई सुख-शांति नहीं मिल सकती। वास्तविक खुशी आंतरिक स्वरूप की अनुभूति से ही आती है। यह संसार निरन्तर परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। उसका प्रभाव खुशी को कम कर देता है। परिवर्तन को स्वीकार करना बहुत जरूरी हैं। जो हमारे हाथ में नहीं हैं, उसकी चिंता नहीं करें। जो हाथ में है उसे अवश्य संभालकर रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि जीवन में सरलता को अपनाएं। इच्छाएं जीवन को दु:खी बनाती हैं।

संक्षिप्त समाचार

पीड़ित छात्रा की शिकायत पर तीन नामजद समेत 18 पर केस दर्ज

सोहना। जीडी गोयनका यूनिवर्सिटी के छात्रों की बीच हुआ झगड़े में पुलिस ने घायल छात्र की शिकायत पर तीन नामजद समेत 18 आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। आरोपियों में तीन जीडी गोयनका के छात्र भी शामिल हैं। सोहना के बालूदा मार्ग पर स्थित वार्ड-6 हरीनगर निवासी अभिषेक ने भोंडसी पुलिस को बताया कि वह जीडी गोयनका यूनिवर्सिटी में एलएलबी प्रथम वर्ष का छात्र हूं। उसकी जिला पलवल निवासी निखिल, जिला फरीदाबाद निवासी मयंक डागर और करनाल निवासी चेतन मदान के साथ दोस्ती है। शुक्रवार की रात करीब साढे 10 बजे धुनेला के पास बनी सिग्नेचर सोसायटी से ग्लोबल हाई में रहने वाले निखिल के पास गए। उसके बाद सोसायटी के गेट पर बनी दुकान पर आइसक्रीम खा रहे थे। उसी समय यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले बरकत, याहाहा और आसीम खान उनके पास आए। जिन्होंने बतमीजी से बातें करते हुए अभिषेक को पास में पड़ी सीमेंट की ईंट उठाकर मारी। जिसको लेकर उनके बीच में हाथापाई हो गई। इसी दौरान आसीम ने फोन करके धुनेला से करीब 15 बदमाशों को बुलाया लिया। वे सभी बदमाश अपने हाथो में डंडे और लोहे की रॉड लेकर आए। जिन्होंने उन्हें पीटना शुरू कर दिया। इस झगड़े में वे सभी चारों दोस्त घायल हो गए थे। वह दोस्त की कार में बैठकर सोहना नागरिक अस्पताल में उपचार के लिए आने लगे। उनका पीछा करते हुए बरकत, याहाहा और आसीम तीन बाइक व कार में सवार होकर पीछा किया। उनकी कार को सोहना की चुंगी नंबर एक के निकट टक्कर मारते हुए पलटा दिया। मामले की जांच कर रहे एएसआई सत्यवेन्द्र ने बताया कि पुलिस अभी तक इस मामले में किसी भी आरोपी को गिरफ्तार नहीं कर सकी है। धुनेला में रहने वाले आरोपियों की पहचान की जा रही है।

जेजेपी नेता के कार्यालय में से ढाई लाख की हुई चोरी

सोहना। भोंडसी के दमदमा झील को जाने वाले मार्ग पर बने जेजेपी के क्षेत्रीय नेता के कार्यालय से ढाई लाख रुपये की चोरी हो गई। चोरी करने वाले चोर मंदिर में रखे करीब 12 हजार रुपये भी ले गए। चोर छत के रास्ते से कार्यालय में रात के समय में घुसे। रिठौज निवासी महीपाल ने भोंडसी पुलिस को अपने कार्यालय में चोरी होने की शिकायत दर्ज कराई है। महीपाल ने बताया कि उसने खेड़ला निवासी संतराम के साथ मिलकर भोंडसी से दमदमा झील को जाने वाले मार्ग पर अपना जेजेपी कार्यालय बनाया हुआ है। 16 अगस्त की रात करीब साढे आठ बजे वह और संतराम बंद करके गए थे। 17 की सुबह साढे नौ बजे उसने देखा कि कार्यालय में अलमारी के पास कागजात बिखरे पड़े हैं। अलमारी में किसी जरूरी काम के लिए रखे ढाई लाख रुपये गायब मिले। महीपाल ने बताया कि मंदिर में चढ़ा करीब 12 हजार रुपये भी चोरी हो गए। पुलिस ने महीपाल की शिकायत पर नकदी चोरी का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस सीसीटीवी कैमरों की मदद से चोरी हुई नकदी का खुलासा करने में जुट गई है।

चार बच्चों की मां संदिग्ध हालत में हुई लापता

सोहना। शहर की हरिओम कॉलोनी में रहने वाली 50 वर्षीय चार बच्चों की मां संदिग्ध हालत में लापता हो गई। पीड़ित पति ने पुलिस को पत्नी लापता होने की शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस लापता महिला ही तलाश में जुट गई है। खंड पटौदी का गांव जोड़ी साप मूल निवासी रणसिंह ने शहर थाना पुलिस को बताया कि वह 10 साल से पलवल जाने वाले मार्ग की हरीओम कॉलोनी में परिवार समेत रह रहा है। वह रिक्सा चलाता है और उसकी पत्नी घरों में झाड़ू-पोंछा करने जाती है। उसकी पत्नी सविता 15 अगस्त को घर से काम पर गई थी। लेकिन पांच दिन बीत जाने के बाद भी आज तक वापस नहीं लौटी। जिसकी अपनी सभी रिश्तेदारियों से लेकर जानकारों के घर पता किया। लेकिन कोई सुराग नहीं लग सका है। पुलिस ने पीडित पति द्वारा देर से दी गई शिकायत के आधार पर महिला के लापता होने का मामला दर्ज कर लिया है।

फार्म हाउस में छह युवक जुआ खेलते दबोचे, 53500 रुपये बरामद

सोहना। अपराध शाखा पालम विहार की टीम ने भोंडसी के पास बना फार्म हाउस के अंदर छह युवकों को जुआ खेलते हुए गिरफ्तार किया है। जिनके पास से 53500 रुपये की नकदी समेत जुआ खेलने में उपयोग की जाने वाली सामग्री बरामद की है। रविवार को अपराध शाखा पालम विहार में तैनात एसआई कुलदीप को सूचना मिली कि भोंडसी के पास खेतों में बना डी-37 फार्म हाउस के अंदर जुआ खेला जा रहा है। जिसके अंदर छह युवक ताश के पत्तों पर हजारों रुपये की नकदी दांव पर लगाकर खेल रहे हैं। कुलदीप के नेतृत्व में गठित टीम ने फार्म हाउस के अंदर छापा मारते हुए एक बाद एक छह युवकों को पकड़ा। जिसमें एक युवक जिला पलवल का तथा पांच अन्य आरोपी फरीदाबाद के अलग-अलग स्थान पर रहने वाले थे। जिनकी पहचान राहुल निवासी सदर थाना पलवल, भीम, पंकज अरोड़ा, साहिल भाटिया, सागर कुमार और हितेश छावड़ा। तलाशी के दौरान राहुल के पास से 12 हजार 500 रुपये, भीम के पास से 9500, साहिल भाटिया से 9700, पंकज कुमार से 6200, सागर कुमार से 7500 और हितेश छावड़ा से 8100 रुपये बरामद हुए। एसआई कुलदीप ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ भोंडसी थाना में मामला दर्ज कराया गया है।

लंपी बीमारी की रोकथाम के लिए जिला में धारा 144 लागू

गुरुग्राम। लंपी बीमारी के फैलाव को रोकने के लिए जिलाधीश डॉ. निशान्त कुमार ने पशु मेलों के आयोजन और जिला से बाहर पशुओं के लाने ले जाने पर प्रतिबंध लगा दिया है। जिलाधीश द्वारा जारी आदेशों में कहा गया है कि लगातार पशुओं को लंपी के कारण परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। दिन-प्रतिदिन बीमारी फैलती जा रही है, जिसको देखते हुए प्रदेश सरकार ने सावधानी बरतने के आदेश दिए है। साथ ही पशुओं के मेलों के आयोजन सहित जिला से बाहर पशुओं के लाने ले जाने पर प्रतिबंध लगाने को कहा है। ऐसे में जिलाधीश ने पशुओं को लंपी बीमारी से बचाने और बीमारी के फैलाव को रोकने के लिए जिला में धारा-144 लागू कर पशु मेलों के आयोजन और पशुओं के जिला से बाहर लाने ले जाने पर प्रतिबंध लगा दिया है।

सम्मान पाकर सीनियर सिटीजंस का सीना हुआ चौड़ा

गुरुग्राम के सेक्टर-15 पार्ट-2 में सीनियर सिटीजंस का सम्मान करते कैनविन फाउंडेशन के संस्थापक डा. डीपी गोयल।

गुरुग्राम के सेक्टर-15 पार्ट-2 रेल विहार में भी किया सीनियर सिटीजंस का सम्मान

कैनविन फाउंडेशन के संस्थापक डा. डीपी गोयल रहे मुख्य अतिथि

गुरुग्राम। अग्रवाल वैश्य समाज संस्था की ओर से रविवार को हरियाणा में राज्य स्तर पर बुजुर्गों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। गुरुग्राम के सेक्टर-15 पार्ट-2 स्थित रेल विहार में आयोजित समारोह में 70 साल से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानित करके उनके जीवन के अनुभवों से सीखने का संकल्प लिया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के आयोजक अग्रवाल वैश्य समाज संस्था के युवा जिला अध्यक्ष अंकुश गुप्ता, धनराज केडिया, राजेश गुप्ता, प्रमोद अग्रवाल, राजकुमार अग्रवाल, तुषार अग्रवाल, शैलेष गुप्ता, बीएल अग्रवाल, अनिल सिंगला, महेंद्र अग्रवाल आदि मौजूद रहे। समारोह में बुजुर्गों को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि कैनविन फाउंडेशन के संस्थापक ने डा. डीपी गोयल ने संस्था के प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि महाराजा अग्रसेन ने जो समाजवाद का उदाहरण पेश किया, वह आज 5100 साल बाद भी प्रासंगिक है। हम उन्हें भगवान की तरह पूजते हैं। हम उनके पदचिन्हों पर चलते हुए समाजसेवा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। हमें अपने पूर्वजों ने संस्कार देकर सिखाया है कि हमारे लिए क्या महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि दान, सेना में अग्रवाल समाज का अहम रोल है। देश, धर्म को बचाने और आगे बढ़ाने के लिए अग्रवाल समाज ने सदा अपनाा सहयोग दिया है। जनकल्याण, जगकल्याण के लिए समाज ने सदा कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

डा. डीपी गोयल ने अग्रवाल समाज को एकजुट होकर सामाजिक के साथ राजनीतिक रूप से भी मजबूत होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हम देश, समाज की सेवा में तो आगे हैं, लेकिन राजनीति में पिछड़े हुए हैं। अग्रवाल वैश्य समाज के प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला ने समाज को एक करने का काम किया है। हमें अपनी ताकत का अहसास कराया है।

युवा अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाएं: सुनीता सिंगला

युवाओं का हमारा देश है मजबूत, देशहित में लगे रहें युवा

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम के सेक्टर-69 में सप्लीमेंट संस्थान का उद्घाटन करतीं विधायक सुधीर सिंगला की पत्नी सुनीता सिंगला।

हमारा देश में सबसे अधिक आबादी युवाओं की है। देश में करीब 65 प्रतिशत आबादी के साथ युवा हर क्षेत्र में खुद को मजबूत बना रहे हैं। जहां युवाओं का प्रतिनिधित्व है, वहां पर अपार संभावनाएं हैं। ऐसे ही युवा अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाएं, ताकि देश और भी मजबूत स्थिति में हो जाए। यह बात गुरुग्राम के विधायक सुधीर सिंगला की धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता सिंगला ने यहां सेक्टर-69 स्थित स्पेज-2 मॉल में कोर सप्लीमेंट संस्थान के उद्घाटन अवसर पर कही।

इस अवसर पर मनोनीत पार्षद मनीष वजीराबाद, एसएस यादव, सुनील यादव नम्बरदार, विधायक के निजी सचिव आरपी सिंह, संस्थान के संचालक शिवराज, राहुल, डा. केके राव, सुनील बसोया आदि मौजूद रहे। श्री सिंगला ने कहा कि किसी भी खाद्य, पेय पदार्थ में किसी भी तरह की मिलावट करना बहुत बड़ा अपराध है। संस्थान के संचालक इस बात का विशेष ख्याल रखें, क्योंकि उनका संस्थान सीधे तौर पर युवाओं से जुड़ा हुआ है। युवा ही सबसे अधिक सप्लीमेंट का इस्तेमाल करते हैं। गुणवत्ता का सदा ख्याल रखा जाना चाहिए। हमें अपने मुनाफे के लिए कभी किसी दूसरे के जीवन के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। सुनीता सिंगला ने कहा कि जब तक हम अपने युवाओं को मानसिक, शारीरिक रूप से मजबूत नहीं बनाएंगे, वे आगे नहीं बढ़ पाएंगे। जरूरी है कि हम अपने मन-मस्तिष्क में उस सोच को विकसित करें, जो कि हमें अपने देश, समाज को आगे बढ़ाने के प्रति जज्बा पैदा करे। ना कि हम निजी स्वार्थ के लिए कोई काम करें। उन्होंने कहा कि देश और समाज को आगे बढ़ाने की सोच रखने वाला व्यक्ति ही कुछ कर सकता है। जब तक हम निजी लाभ से बाहर नहीं निकलते, जब तक हम समाज को कुछ नहीं दे सकते।

किसानों के लिए जमीन सोना है, इसे कौड़ियों के भाव न खरीदे सरकार : दीपेन्द्र हुड्डा

मानेसर में जमीन बचाओ किसान बचाओ संघर्ष समिति के धरने पर पहुंचे सांसद

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम में जमीन बचाओ किसान बचाओ संघर्ष समिति के धरने पर बोलते सांसद दीपेंद्र हुड्डा।

सांसद दीपेन्द्र हुड्डा रविवार को मानेसर के गांव कासन, खोह, कुकडौला, सहरावन की 1810 एकड़ जमीन का औने-पौने भाव में अधिग्रहण करने के खिलाफ जमीन बचाओ किसान बचाओ संघर्ष समिति के बेमियादी धरने पर पहुंचे। किसानों की मांगों का पूर्ण समर्थन किया।

सांसद दीपेन्द हुड्डा ने कहा कि किसानों के लिए जमीन सोना है, सरकार इसे कौड़ियों के भाव न खरीदे। हर किसान जमीन को अपनी मां मानता है और जमीन पर मेहनत करके अनाज पैदा करके देश का पेट भरता है। अगर सरकार किसान को बाजार भाव देगी तो वो आराम से कहीं भी दूसरी जमीन खरीद कर अपने परिवार का पेट भरने का इंतजाम कर लेगा। लेकिन सरकार, किसान की जमीन को बाजार भाव की बजाय कौड़ियों के भाव खरीदेगी तो फिर किसान कहां जाएगा। उन्होंने मांग की कि सरकार अपनी जिद और अहंकार छोड़े। जन-भावनाओं का संज्ञान लेते हुए प्रभावित लोगों से बात कर जायज मांगों का समाधान करे। उन्होंने यह भी कहा कि बीजेपी सरकार नये भूमि अधिग्रहण कानून की बजाय पुराने कानून से जमीन अधिग्रहण करने की कोशिश कर रही है, जो किसानों के साथ विश्वासघात है। उस समय हुड्डा सरकार ने भूमि अधिग्रहण के लिए जो नीति बनाई थी, उस नीति की देश भर में प्रशंसा हुई थी। यूपीए सरकार द्वारा लागू नये भूमि अधिग्रहण कानून के तहत जमीन अधिग्रहण के लिये 70 प्रतिशत किसानों की सहमति जरूरी है। दीपेन्द्र हुड्डा ने कहा कि सरकार किसानों के अकेला समझने की भूल न करे। देश का किसान एकजुट है और सरकार के किसी भी अन्याय के खिलाफ लड़ने की ताकत रखता है। इसका सबूत हाल ही में रद्द हुए तीन कृषि कानून हैं। किसानों ने एक साल से ज्यादा समय तक शांतिपूर्ण संघर्ष कर सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने हरियाणा की बीजेपी-जेजेपी सरकार को चेताया कि वो हठधमिज्ता और अहंकार छोड़कर बातचीत और सहमति के माध्यम से समाधान निकाले। इस दौरान प्रमुख रूप से विधायक कुलदीप वत्स, विधायक चिरंजीव राव, सुधीर चौधरी, राव वीरेंद्र, सुनीता वर्मा, मनीष खटाना, सतबीर गुर्जर समेत बड़ी संख्या में स्थानीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

टोल आंदोलन समिति ने 28 का विरोध प्रदर्शन किया स्थगित

केंद्रीय मंत्री राव इन्द्रजीत ने 25 गांवों का फ्री कराने का दिया है आश्वासन

पायनियर समाचार सेवा। सोहना

रविवार को सोहना की अग्रवाल धर्मशाला में टोल संघर्ष समिति की हुई बैठक।

टोल संघर्ष समिति ने 28 अगस्त को होने वाले आंदोलन को स्थगित करते हुए गेद केन्द्रीय मंत्री राव इन्द्रजीत के पाले में फेंक दी है। समिति व ग्रामीणों को राव इन्द्रजीत को टोल दर में कमी और 20 किलोमीटर दायरे में आने वाले क्षेत्रवासियों को फ्री कराने का आश्वासन दिया है।

एलिवेटेड गुरुग्राम-सोहना मार्ग पर बना घामडौज टोल वसूली और क्षेत्र के 20 किलोमीटर दायरे में आने वाले ग्रामीणों फ्री न किए जाने के विरोध में टोल संघर्ष समिति का 28 अगस्त को आरपार का आंदोलन था, लेकिन आंदोलन को समिति ने रविवार को सोहना में बैठक करते हुए अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया है। समिति ने अपनी मांगों को पूरा कराने जिम्मेदारी केन्द्रीय मंत्री राव इन्द्रजीत द्वारा दिए गए आश्वासन पर छोड़ दिया है। केन्द्रीय मंत्री राव इन्द्रजीत ने 16 अगस्त को खंड के गांव दमदमा में किया गया। सम्मान समारोह में क्षेत्रवासियों को टोल दर में कटौती और टोल से 20 किलोमीटर दायरे में आने वाले सोहना-बादशाहपुर समेत आस पास लगते करीब 25 गांवों का फ्री कराने का आश्वासन दिया है।

राव इन्द्रजीत अभी विदेशी दौरे पर है तथा 26 अगस्त तक विदेशी दौरे से लौटेंगे। करीब एक घंटा चली बैठक के बाद समिति के वरिष्ठ सदस्य सतबीर पहलवान ने बताया कि 28 अगस्त के बाद टोल के विरोध में आंदोलन होने या न होने का फैसला लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राव इन्द्रजीत सिंह गुरुग्राम लोकसभा सीट से सांसद हैं। उन्होंने क्षेत्रवासियों को केन्द्रीय परिवहन मंत्री नीतिन गड़करी से मांगों को पूरा कराने का जो भरोसा दिया है।

मांगें पूरी होने पर होगा आंदोलन स्थगित : टोल संघर्ष समिति के सदस्य महाराज सिंह ने कहा कि यदि अभी भी आंदोलन की जरूरत पड़ेगी। इस आंदोलन को मांग पूरी होने तक जारी रखा जाएगा। क्षेत्र के लोग बार-बार प्रशासनिक और टोल एजेंसी द्वारा दिए गए झूठे आश्वासनों से तंग आ चुके हैं। आंदोलन की जरूरत पड़ने पर इसे आर पार की लड़ाई के रूप में करना होगा।

आप के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की हुई बैठक

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

आम आदमी पार्टी के बडख़ल एवं एनआईटी विधानसभा क्षेत्र के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की एक महत्वपूर्ण बैठक रविवार को नीलम-बाटा रोड स्थित ओला होटल में आयोजित की जाएगी। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव पंकज गुप्ता, अनुराग ढांडा एवं संगठन मंत्री प्रवीण प्रभाकर उपस्थित रहे, जबकि बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष धर्मबीर भड़ाना ने की।

इस बैठक को हरियाणा में होने वाले 2024 विधानसभा चुनावों की तैयारियों से जोडक़र देखा जा रहा है। आम आदमी पार्टी पूरे हरियाणा प्रदेश में विधानसभा स्तर पर कार्यकर्ताओं की बैठकें आयोजित कर रही है। इसी कड़ी में आज बडख़ल एवं एनआईटी विधानसभा के कार्यकर्ताओं की बैठक की गई। बैठक में निगम चुनावों की समीक्षा बैठक एवं तैयारी को लेकर भी चर्चा की गई। वार्डों में तैयारी करने वाले प्रत्याशियों का भी ऑब्जर्वेशन एवं आंकलन भी इस बैठक में किया गया। बैठक में उपस्थि कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय सचिव पंकज गुप्ता ने निगम चुनावों, पंचायती राज संस्था के चुनावों की तैयारियों एवं रणनीति पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि निगम चुनावों में आम आदमी पार्टी जीत के साथ आगाज करना चाहती है। फरीदाबाद व गुडग़ांव नगर निगम की सभी सीटों पर आम आदमी पार्टी सिम्बल पर चुनाव लड़ेगी। सभी वार्डों से प्रत्याशियों की होड लगी हुई है, जिसके लिए विधानसभा प्रभारी एवं वार्ड सर्वेयर नियुक्त कर दिए गए हैं, जो जमीन से सही रिपोर्ट देंगे। इसी के आधार पर प्रत्याशियों का चयन किया जाएगा। हमारा प्रयास होगा कि मजबूत प्रत्याशियों को मैदान में उतारा जाए, जो जीत पार्टी की झोली में डाल संक। उन्होंने बताया कि इन चुनावों के साथ-साथ आम आदमी पार्टी पूरे हरियाणा में तैयारी कर रही है और कार्यकर्ताओं को पार्टी से जोडऩे का प्रयास किया जा रहा है। हम चाहते हैं 2023 तक पार्टी पूरे प्रदेश में मजबूती के साथ खड़ी हो जाए और अधिक से अधिक लोग पार्टी से जुड़ें। इसके लिए विधानसभा स्तर पर कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों को जिम्मेदारियां सौपी जा रही हैं। इस मौके पर वरिष्ठ नेता अनुराग ढांडा एवं संगठन मंत्री प्रवीण प्रभाकर ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया।

पौधे लगाकर खाद-पानी देने में भी जुटे हैं डेरा प्रेमी

14 अगस्त को लगाए गए पौधों की नियमित रूप से कर रहे हैं देखभाल

द्वारका एक्सप्रेस-वे समेत कई जगह लगाए गए पौधों में दिया पानी

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

गुरुग्राम में द्वारका एक्सप्रेस-वे पर लगाए गए पौधों में पानी देते डेरा प्रेमी।

देश-दुनिया में सेवा के क्षेत्र में अग्रणी रहने वाली डेरा सच्चा सौदा की शाह सतनाम जी ग्रीन एस. वेलफेयर फोर्स विंग के सेवादारों द्वारा पूज्य गुरूजी संत डा. गुरमीत राम रहीम सिंहजी इंसा के जन्मदिवस के पूर्व दिवस 14 अगस्त को लगाए गए पेड़ों की लगातार संभाल भी की जा रही है। वे पेड़ों में खाद-पानी आदि नियमित रूप से डाल रहे हैं, ताकि वे सूखें नहीं।

गुरुग्राम क्षेत्र में लगाए गए पौधों में पानी देने के लिए डेरा सच्चा सौदा के सेवादार संदीप इंसा, मुकेश इंसा, सौरव इंसा, नितिन इंसा, सचिन इंसा आदि पौधारोपण स्थल द्वारका एक्सप्रेस-वे के पास पहुंचे। वहां उन्होंने उन पौधों में पानी देने का इंतजाम किया। कहीं पर पाइप लाइन से तो कहीं पर बाल्टियों से उन्होंने पौधों में पानी डालकर उनकी देखभाल की। संदीप इंसा कहते हैं कि गुरूजी ने यही सिखाया है कि किसी भी काम की शुरुआत नहीं, बल्कि उसे अंजाम तक पहुंचाना जरूरी है। यानी जो सेवा पौधे लगाने की यहां की गई, उनकी संभाल भी बहुत जरूरी है। अगर इन्हें लगातार संभाला नहीं गया तो ये दम तोड़ जाएंगे। प्रयास यही रहता है कि जितने भी पौधे लगाए जाते हैं, उनको समय पर खाद-पानी देकर बचाया जाए। उनका संरक्षण किया जाए। दीन-दुखियों की सेवा के साथ प्रकृति की रक्षा भी हमारी ही जिम्मेदारी है। हरे पेड़ों के साथ हमारा जीवन जुड़ा है। आज हमने अगर पेड़ों की संख्या नहीं बढ़ाई तो भविष्य में हमें ऑक्सीजन सिलेंडरों के माध्यम से ही लेनी पड़ेगी। ऐसे में जरूरी है कि अपने कल के लिए आज में ऐसे काम किए जाएं। संदीप इंसा के साथ पेड़ों की देखरेख, पानी देने के लिए पहुंचे सेवादारों ने पसीना बहाकर पेड़ों में पानी दिया। यह सिर्फ एक दिन नहीं किया, बल्कि यह कार्य उनका नियमित है।

पायनियर
नई दिल्ली, सोमवार, 22 अगस्त, 2022

वर्किंग वूमेन हॉस्टल: महिलाओं पर पड़ी बिजली बिल की मार

कविता। फरीदाबाद

800 रुपये फिक्स बिल के अलावा टीवी फ्रीज का 200 रुपये प्रति उपकरण वसूलने के आदेश

जिला रेडक्रॉस के वूमेन हॉस्टल में 800 रुपये प्रति माह बिजली का बिल महिलाओं से लिया जाता था। अब रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा भविष्य में अब फ्रीज, कूलर और टीवी का इस्तेमाल करने पर 200 रुपये प्रति उपकरण के हिसाब से बिजली का बिल वसूला जाएगा। यानी 800 रुपये के अलावा इस्तेमाल होने वाले उपकरणों का अतिरिक्त बिजली बिल देना पड़ेगा।

इतना बढ़ाया बिल: रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा सेक्टर-16 में वर्किंग वूमेन हॉस्टल चलाया जा रहा है। यहां पहले महिलाओं से बिजली का बिल प्रति यूनिट की हिसाब से वसूला जाता था। जोकि वर्किंग वूमेन के हिसाब से ठीक था। जिसे बाद में रेडक्रॉस द्वारा आठ सौ रुपये कर दिया गया था। वहीं एक रूम में रह रही दो महिलाओं से 500-500 रुपये बिजली का बिल वसूला जाने लगा। मजबूरी में महिलाएं बिल दे रही थी। 12 अगस्त 2022 को जारी एक पत्र को देखकर इन महिलाओं के होश उड़ गए। उन्हें पता चला कि 800 रुपये के बिल के अलावा अब उन्हें फ्रीज, कूलर और टीवी के लिए 200 रुपये प्रति उपकरण अलग से देने होंगे। जबकि एक आम परिवार का दो महीने का बिजली का बिल सात से आठ सौ रुपये आता है।

सेक्टर-16 स्थित वूमेन हॉस्टल का भवन।

सुविधाओ का अभाव: कामकाजी महिला हॉस्टल में बिजली बिल और किराये में तो रेडक्रॉस लगातार बढ़ोत्तरी कर रहा है। लेकिन यहां सुविधाओं का आभाव है। पहले बिजली के पंखे या लाइट, पानी की पाइप लाइन व टोंटी में दिक्कत होने पर मिस्त्री उपलब्ध करवाती थी। लेकिन अब दिक्कत होने पर महिलाओं स्वयं ही मिस्त्री बुलवाने पड़ते है। वहीं रात को यहां कोई सुरक्षाकर्मी नहीं है। यहां माली पत्नी, दो लड़कियां और एक बेटे के साथ रहता है और वह बिजली भी इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके अलावा यहां नेत्रहीन बच्चियों के लिए चार रूमों में बिजली से लेकर रेंट फ्री है।

वहीं उनकी टीचर (जोकि नेत्रहीन बच्चियों को प्रार्थना सिखाती है) से मात्र 2500 रुपये किराया और बिजली का बिल लिया जाता है। यदि किसी संस्थान में काम कर रही महिला तनख्वाह ले रही है तो उसे किराया पूरा देने का हक है, लेकिन वह कई सालों से यहां 4 हजार रुपये वाले सिंगल रूम का किराया मात्र 2500 रुपये दे रही है।

सचिव का कथन: जिला रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव बिजेन्द्र सौरोत का कहना है कि उन्होंने कुछ समय पहले ही यह पद संभाला है। उन्हें पता था कि वर्किंग वूमेन होस्टल में नर्सरी चल रही है, जिसे उन्होंने तुरंत बंद करवा दिया था। वहीं बिजली का बिल और किराया बढ़ने की समस्या को लेकर वे पहले के बिजली बिल को निकाल कर जांच करवाऐंगे और यदि वास्तव में अधिक हुआ तो वे इसे अधिकारियों के सामने रखेंगे। उनका कहना है कि टीवी और फ्रिज तो आज आम चीजे है, जिनके लिए अलग-अलग रुपये लेना ठीक नहीं है।

संक्षिप्त समाचार

राज्य एथलेटिक प्रतियोगिता में जिले को मिले 18 पदक

फरीदाबाद। राजीव गांधी स्टेडियम रोहतक में दो दिवसीय (20-21 अगस्त) एथलेटिक्स चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। एथलेटिक्स हरियाणा मीडिया प्रभारी सत्यवीर ने बताया कि इस प्रतियोगिता में जिले ने 5 स्वर्ण, 5 रजत और 8 कांस्य पदक सहित 18 पदक जीते। एथलेटिक्स हरियाणा के महासचिव राजकुमार मिटान ने बताया कि 2000 मीटर में निशांत ने रजत, 800 मीटर विनीत सिंह ने स्वर्ण, 5000 मीटर रेसवाक में मोनिका ने रजत, 3000 मीटर में योगिता ने रजत, 100 मीटर में सौरव ने स्वर्ण और सुशांत ने कांस्य पदक, 200 मीटर में रितिका रजत पदक, ट्रिपल जंप में मो साजिद स्वर्ण पदक, मोहर सिंह ने कांस्य पदक, ट्रिपल जंप में निकिता ने कांस्य, 400 मीटर में रितिका कांस्य पदक, 400 मीटर में योगिंद्र ने 20 साल में कांस्य पदक। 400 मीटर 18 साल में सुनील कुमार स्वर्ण, लांग जंप में परीक्षा ने स्वर्ण, 300 मीटर सुशांत कांस्य पदक, लांग जंप में मो साजिद ने कांस्य और 1500 मीटर दौड में काजल ने कांस्य पदक जीतकर जिले का नाम रौशन किया। एथलेटिक्स हरियाणा के महासचिव राजकुमार मिटान, वरिष्ठ संयुक्त सचिव कुलदीप अहलावत, उपाध्यक्ष राजीव खत्री, प्रतियोगिता निदेशक जितेंद्र बांगर, मुख्य चयनकर्ता यशपाल चोपडा,सचिव एडवोकेट ओमवीर, राज्य तकनीकी अधिकारी कुलदीप ठाकुर ने सभी पदक विजेता खिलाड़ियों को शुभकामनाएं प्रदान कीं।

त्यागी समाज का जत्था नोएडा महापंचायत के लिए रवाना

फरीदाबाद। त्यागी समाज का जत्था नोएडा महापंचायत के लिए हुआ रवाना। श्रीकांत त्यागी द्वारा पौधारोपण को लेकर एक महिला से हुई नोकझोंक को राजनैतिक द्वेष के चलते राष्ट्रीय स्तर का मुद्दा बना दिया गया। मामूली कहा सुनी को क्षेत्र के एक नेता ने अपने राजनैतिक रसूक से समस्त त्यागी समाज को बदनाम करने की कुचेष्ठा कर श्रीकांत त्यागी की धर्मपत्नी अन्नू त्यागी सहित अन्य परिजनों का पुलिस द्वारा उत्पीड़न एवं शोषण-दमनकारी कारवाई अशोभनीय है। ददसिया गांव के पूर्व पंच प्रह्लाद त्यागी का कहना है कि नोएडा में श्रीकांत त्यागी प्रकरण वाले साधारण से घटनाक्रम को मीडिया ट्रायल के नाम पर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मामला बनाकर समस्त त्यागी समाज के प्रति नकारात्मक माहौल बनाकर की गई राजनीति किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नही की जाएगी। त्यागी समाज के साथ इस द्वेषपूर्ण कारवाई को लेकर देशभर के त्यागियों में आक्रोश व्याप्त है। ग्रेटर फरीदाबाद के गांव ददसिया से महापंचायत मे शामिल होने वाले जत्थे में दीपक त्यागी, वेदवृत त्यागी, राम गोपाल त्यागी, प्रह्लाद त्यागी, सुरेंद्र त्यागी, अजय गोयल, परविन्दर त्यागी उर्फ लीलू, आयूष त्यागी, महेंद्र मास्टरजी, ताराचंद विनय त्यागी, कृष्ण त्यागी, महेश त्यागी, बबलू नंबरदार, प्रिन्स, राजकुमार नंबरदार, पिन्टू, मनोज, जतिन, आशीष, भानू, नमन, राम-श्याम, निशांत, अजय त्यागी, तनिष्क, मनीष, लज्जा राम त्यागी, कुलदीप, संदीप, शुधान्शु, अभिषेक, उदय त्यागी, मयन्क, शैन्की, सुशील, सुरेंद्र, अजय त्यागी, विजयपाल चैयरमैन,नीरज त्यागी, सुनील, सौरभ, अंकुर त्यागी, अनिल त्यागी, रणवीर त्यागी, रविश त्यागी, सचिन, जितेंद्र त्यागी उर्फ रमप्पी, जयप्रकाश त्यागी, उज्जवल त्यागी, यह सभी गांव ददसिया से नोएडा त्यागी महापंचायत में शामिल होने के लिए सुबह दो दर्जन गाड़ियों के काफिले में रवाना हुए। त्यागी एकता के नारे लगाते हुए त्यागी समाज की बदनामी करने वाली राजनीति के खिलाफ लामबंद हो रही है देश भर की त्यागी बिरादरी।

शहीद मनोज भाटी के घर पहुंचे डिप्टी सीएम

फरीदाबाद। डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने कहा कि शहीद हमारे गौरव हैं और हमें उनकी शहादत पर हमेशा गर्व रहेगा। उन्होंने कहा कि शहादत परिवार के लिए आपदा से कम नहीं है और दुख की इस घड़ी में सरकार परिवार के साथ है। डिप्टी सीएम रविवार को जिला के गांव शाहजहांपुर में शहीद मनोज भाटी के घर जाकर उनके परिजनों को शोक व्यक्त किया और ढाढस बंधाया। डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने कहा कि दुख की घड़ी में सरकार शहीद परिवार के साथ है और परिवार की हर संभव मदद की जाएगी। उन्होंने कहा कि शाहजहांपुर गांव के राजकीय स्कूल का नाम 24 घण्टे में शहीद मनोज भाटी के नाम रखा गया है। इसके अलावा सरकार की नीति के अनुसार शहीद परिवार को आर्थिक मदद भी दी जाएगी। उन्होंने कहा शहीद परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी भी दी जाएगी। इसके लिए सदस्य का नाम शहीद के परिवार द्वारा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके अलावा भी परिवार को अगर अन्य किसी मदद की जरूरत पड़ेगी तो वह भी की जाएगी। इस दौरान डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने शहीद मनोज भाटी के पिता बाबूराम, उनकी धर्पमत्नी कोमल तथा मां सुनीता देवी, भाई सुनील व योगेश से मिलकर सांत्वना दी और ढांढस बंधाया। डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने उनके पड़ोसी राहुल भाटी के घर जाकर भी उनके परिवारजनों का ढांढस बंधाया। उन्होंने बताया कि राहुल भाटी की खेतो से आते समय यमुना में डुबने से मौत हो गई थी।

नाबालिग सौतेली बेटी के साथ पिता ने किया दुष्कर्म

फरीदाबाद। डीसीपी एनआईटी नरेंद्र कादियान के दिशा निर्देश के तहत कार्रवाई करते हुए पुलिस थाना एनआईटी प्रभारी इंस्पेक्टर सुनीता की टीम ने सौतेली बेटी के साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम देने वाले तीन महीने से फरार चल रहे आरोपी पिता को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम जगदीश उर्फ राजू है जो उत्तर प्रदेश के झांसी जिले का रहने वाला है। फरीदाबाद के थाना एनआईटी एरिया में रह रहा था। पुलिस द्वारा की गई जांच में सामने आया कि आरोपी ने ही उसके साथ बलात्कार किया तथा बाद में पुलिस में इसकी झूठी शिकायत देकर पुलिस को गुमराह करने का काम किया था। आरोपी ने पीड़ित लड़की पर किसी अनजान व्यक्ति के नाम से शिकायत देने का झूठा दबाव बनाया जिसके दबाव में आकर पीड़ित लड़की ने 5 मई 2022 को आरोपी के साथ आकर एनआईटी थाने में शिकायत थी। लगातार काउंसलिंग के बाद पिछले दिनों लड़की ने पुलिस को पिता की हरकत के बारे में बता दिया। पुलिस ने आरोपी पिता को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

रिटायर्ड कर्नल के घर लूटपाट के तीन आरोपी गिरफ्तार

फरीदाबाद। क्राइम ब्रांच 65 प्रभारी ब्रहम प्रकाश की टीम ने तीन दिन पहले ओल्ड एरिया में आरोपियों द्वारा दी गई लूट की वारदात के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपियों में अजमेर के रहने वाले प्रधान, मुकेश तथा गोलू का नाम शामिल है। आरोपी प्रधान अजमेर जिले के गांव सावर, आरोपी मुकेश गिनायडा तथा आरोपी गोलू बावला गांव का रहने वाला है। तीनों आरोपी अजमेर से दिल्ली एनसीआर एरिया में आते हैं और वहां पर सेक्टर कालोनियों में घूम घूमकर घरों की रेकी करते हैं तथा बंद मकान देखकर उसे अपना निशाना बनाकर उसमें चोरी तथा लूट की वारदात को अंजाम देते हैं। इसी प्रकार आरोपियों ने 3 दिन पहले 18 अगस्त को फरीदाबाद के ओल्ड एरिया सेक्टर 19 के रहने वाले रिटायर्ड कर्नल सुनील के घर को अपना निशाना बनाया था।

कितने निर्दोष लोगों की जान लेकर शिफ्ट करेंगे हाईटेंशन लाइन

तारों की चपेट में आए आफरीदी ने भी तोड़ा दम, मृतकों की संख्या हुई तीन

चौथा आफताब अस्पताल से स्वास्थ्य होकर घर लौटा

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

सेक्टर-3 में हाईटेंशन बिजली की तारों की चपेट में आए आफरीदी (13) ने भी लंबे संधर्ष के बाद शुक्रवार को राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल में दम तोड़ दिया। 31 जुलाई को हुए इस भीषण हादसे में घायल हुए 4 नागरिको में से तीन की मौत हो गई है और चौथा आफताब राम मनोहर लोहिया अस्पताल से स्वास्थ्य होकर घर आ गया है।

लेकिन इस एक्सीडेंट की कोई भी विभाग जिम्मेदारी लेने को भी तैयार नहीं है। जबकि हकीकत यह है कि लाइन पहले खिंची हुई थी और बाद में एचएसवीपी ने प्लाटिंग की है। सेक्टर तीन रेजिडेंट वेलफेयर फेडरेशन के प्रधान सुभाष लांबा के नेतृत्व में लाइन शिफ्ट करवाने के लिए नागरिकों द्वारा चार साल किए गए लंबे संधर्ष के बाद 31 मार्च को हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवीपी) हरियाणा विद्युत प्रसारण निगम को 41,10332 रुपये जमा भी करवा चुका है। लेकिन पांच महीने बीत जाने के बावजूद बिजली निगम ने लाइन शिफ्ट नहीं की और 31 जुलाई को यह दर्दनाक हादसा हो गया।

सेक्टर 3 का वह घर जिस में हादसा हुआ था फाइल फोटो।

जिसमें तीन निर्दोष नागरिकों, जिसमें दो मासूम बच्चे हैं, अकाल मृत्यु का शिकार हो गए। इससे पहले भी करीब 6 निर्दोष नागरिक घरों के ऊपर से गुजर रही 66 केवी लाइन की चपेट में आने से मौत के मुंह में जा सके हैं। फेडरेशन के प्रधान सुभाष लांबा व सचिव रतनलाल राणा का कहना है कि लाइट शिफ्ट हो गई होती तो तीन निर्दोष नागरिकों की जान नहीं जाती।

सेक्टर में अब यह सवाल उठ रहा है कि आखिरकार बिजली निगम कितनी और मौतों के बाद इस जानलेवा हाईटेंशन लाइन को शिफ्ट करेगा। उल्लेखनीय है कि सेक्टर तीन में गुरुग्राम कैनाल के साथ 60 गज के घरों के ऊपर से गुजर रही 66 केवी बिजली की हाईटेंशन तारों से 31 जुलाई को एक भीषण एक्सीडेंट हुआ था। सचिव रतनलाल राणा बताया कि गुड़गांव कैनाल के साथ 66 केवी हाई टेंशन तारों के नीचे लगभग 70 से 80 घर हैं। इन तारों की चपेट मे आने से यहां पर अभी तक 9 से 10 लोगों की जान जा चुकी है।

35 वर्ष पहले डाली गई थी लाइन

फेडरेशन के सचिव रतनलाल राणा ने बताया कि आरडब्ल्यूएफ ने अगस्त 2018 में यह मामला एचवीपीएन के कार्यकारी अभियंता के समक्ष उठाया था। उन्होंने फेडरेशन के पदाधिकारियों के साथ लाइन का सर्वे किया। उन्होंने बताया कि यह लाइन लगभग 35 वर्ष पहले खिंची गई थी। इसके बाद हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण ने इन तारों के नीचे प्लाटिंग कर दी जोकि नियमों के विरुद्ध है। इस आपसी रस्साकशी के बाद दोनों विभागों के अधिकारियों ने संयुक्त सर्वे करवाया, जिसमें यह पाया गया की हाईटेंशन तारें पहले डाली गई थी और उसके बाद प्लाटिंग की गई। उन्होंने कहा कि फेडरेशन के प्रधान सुभाष लांबा के नेतृत्व में नागरिकों ने इन तारों को घरों के ऊपर से हटवाने के लिए लगभग 4 वर्ष लंबी लड़ाई लड़ी। सेक्टर 3 रेजिडेंट वेलफेयर फेडरेशन फेडरेशन सड़क से लेकर अधिकारियों के दफ्तर तक पीड़ित परिवारों को न्याय दिलाने के लिए लड़ाई लड़ेगी और दोषी व लापरवाह अधिकारियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग करती है।

अम्मा भारतीय संस्कृति और अध्यात्म को दुनिया में पहुंचा रही हैं : बंडारू

अमृता अस्पताल का निरीक्षण कर माता अमृतानंदमयी को भगवान कृष्ण की प्रतिमा भेंट करते हरियाण के राज्य पाल बंडारू दत्तात्रेय।

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

करुणा पर आधारित माता अमृतानंदमयी के आशीर्वाद से निर्देशित, सभी प्राणियों के प्रति अपने निस्वार्थ प्रेम के लिए प्रतिष्ठित अमृता अस्पताल, फरीदाबाद सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा के साथ मानवता की सेवा करने में एक मील का पत्थर साबित होगा। यह बात हरियाणा के राज्यपाल श्रीबंडारू दत्तात्रेय ने रविवार को क्षेत्र की प्रतिष्ठित अमृता अस्पताल फरीदाबाद के अपने दौरे के दौरान कही।

श्रीदत्तात्रेय ने कहा 'अम्मा भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक आभा को दुनिया भर में फैलाने के अपने अथक प्रयास रही हैं। व्याख्यानों के माध्यम से, वह मानव जीवन में मूल्यों और आध्यात्मिकता के महत्व को बताती है। अमृता अस्पताल, फरीदाबाद, 2,600 बिस्तरों के साथ, एक विश्व स्तरीय आध्यात्मिक रूप से स्वास्थ्य इंफ्रा और हरियाणा के लिए एक अमूल्य संपत्ति है।' राज्यपाल ने अम्मा को दिव्यता और आध्यात्मिकता के महान संगम कुरुक्षेत्र में आमंत्रित करते हुए कहा कि कुरुक्षेत्र में भगवान कृष्ण ने मानवता को ज्ञान का स्त्रोत गीता उपहार में दी थी । उन्होंने कहा कि मानवता के लिए माता अमृतानंदमयी की निस्वार्थ सेवा की दुनिया में कोई समानता नहीं है।

नि:शुल्क शिविर में वरिष्ठ नागरिकों ने कराई जांच

सेक्टर-10 स्थित मानव सेवा समिति द्वारा वरिष्ठ नागरिक दिवस पर आयोजित शिविर में जांच करते डाक्टर।

फरीदाबाद। मानव सेवा समिति ने विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस पर रविवार को सर्वोदय हॉस्पिटल सेक्टर 8 के सहयोग से नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया। इस कैंप में 130 वरिष्ठ भाई बहनों की हिमोग्लोबिन, ब्लड शुगर, बीपी, कोलेस्ट्रॉल,थायराइड व ईसीजी की निशुल्क जांच की गई। जांच के बाद डॉ. अभिषेक व डॉ. रेनू ने सभी को उचित चिकित्सीय परामर्श दिया। रोग ठीक करने के लिए डॉक्टर ने दवाईयां लिखीं। सर्वोदय हॉस्पिटल के सहायक मैनेजर राकेश त्यागी के नेतृत्व में सहायक विवेक शर्मा, अवनीश, सत्य प्रकाश आदि ने मेडिकल जांच में सहयोग दिया। समिति के अध्यक्ष कैलाश शर्मा, चेयरमैन अरुण बजाज, महिला सेल चेयरमैन ऊषाकिरण शर्मा ने कैंप आयोजित करने में सक्रिय सहयोग देने के लिए सर्वोदय हॉस्पिटल की धन्यवाद किया।

कैंसर के प्रति जागरुकता को लेकर निकाली साइकिल रैली

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

कैंसर समेत कई गंभीर बीमारियों से बचने में शारीरिक सक्रियता का अहम योगदान हो सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए 200 से ज्यादा महिला साइकिलिस्ट ने शारीरिक सक्रियता वाली जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित साइक्लोथॉन 'होप ऑन द व्हील्स' में हिस्सा लिया।

राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर (आरजीसीआईआरसी), नीति बाग (दक्षिणी दिल्ली) ने रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3011 के साथ मिलकर इस साइकिल रैली का आयोजन किया। इस दौरान महिलाओं ने आरजीसीआईआरसी नीतिबाग से 20 किलोमीटर की साइकिल रैली निकाली। मौके पर अभिनेत्री सयाली भगत बतौर मुख्यातिथि उपस्थित थीं, उन्होंने भी इस साईकिल रैली में शिरकत की। रैली दिल्ली गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, मदनगीर और साईंधाम, हौजखास से होकर निकली, जहां स्तन कैंसर, सर्विक्स कैंसर और ओरल कैंसर की नि: शुल्क स्क्रीनिंग के लिए हेल्थ चेकअप कैंप लगाए गए थे। ये तीनों भारत में सबसे ज्यादा होने वाले तीन कैंसर हैं। इन कैंसर से बचना और शुरुआत स्टेज पर इनकी स्क्रीनिंग संभव है। आरजीसीआईआरसी नीति बाग की मेडिकल डायरेक्टर डॉ. गौरी कपूर ने कहा, 'कैंसर के बढ़ते मामलों में तंबाकू एवं शराब के सेवन और खराब जीवनशैली की बड़ी भूमिका है। विशेषतौर पर आलस्य वाली जीवनशैली इसका बड़ा कारण है। अध्ययनों में ज्यादा शारीरिक सक्रियता और विभिन्न प्रकार के कैंसर के कम खतरे के बीच सीधा संबंध पाया गया है। साइक्लोथॉन का आयोजन विशेषतौर पर महिलाओं के बीच सक्रिय जीवनशैली का संदेश देने के लिए किया गया।' इस साइकिल रैली का नाम 'होप ऑन द व्हील्स' था। डॉ. कपूर ने कहा कि यहां व्हील्स का अर्थ है एक सक्रिय जीवनशैली, जिससे कार्डियोवस्कुलर डिजीज और कई तरह के कैंसर समेत विभिन्न गैर संक्रामक बीमारियों के कारण होने वाली मौतों के खतरों को कम करने की उम्मीद बनती है।

केंद्रीय विद्यालय-एक ने जीता कबड्डी मैच

फरीदाबाद। जिले के केंद्रीय विद्यालय नंबर-1 में केंद्रीय विद्यालय संगठन गुड़गांव रीजनल की ओर से 51वीं खेलकूद चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत शनिवार को कबड्डी चैंपियनशिप आयोजित की गई।

चैंपियनशिप में गुड़गाव रीजनल के 17 केंद्रीय विद्यालयों के 204 छात्राओं ने अंडर-14 व अंडर-17 वर्ग में भाग लिया। चैंपियनशिप का शुभारंभ विद्यालय की प्राचार्य मंजू यादव ने किया। उप प्राचार्य सुनील कुमार, मुख्य टेक्निकल अधिकारी सुखपाल यादव, पीटी विजय कुमार, रचना और सतवीर सिंह की देखरेख में मैच कराए गए। मंच का संचालन विद्यालय के अंग्रेजी प्रवक्ता रणधीर कुमार ने किया। केंद्रीय विद्यालय मंडी ने केंद्रीय विद्यालय भाखड़ी की टीम को हराया। दूसरे मैच में केंद्रीय विद्यालय फरीदाबाद नंबर 1 ने केवी भाखड़ी की टीम को 19-9 के अंतर से हराया।

जिले में ड्रोन कैमरा अथवा ग्लाइडर की उड़ान पर रहेगर प्रतिबन्ध : यशपाल

अमृता अस्पताल, सेक्टर-88 के आस-पास दो किलोमीटर के दायरे में निर्माणाधीन कार्य पर भी रोक

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

जिला मैजिस्ट्रेट यशपाल ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 24 अगस्त को सेक्टर-88, ग्रेटर फरीदाबाद में अमृता अस्पताल के उद्घाटन समारोह में शिरकत करेंगे। प्रधानमंत्री की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए किसी भी आतंकी/अपराधिक किस्म के व्यक्ति सीमावर्ती ईलाकों/शहरों में छुपे होने की आशंका बनी रहती है। इस प्रकार की गतिविधियो को समय से पहले रोकने के लिये और जिला फरीदाबाद में सुरक्षा बनाये रखने के लिये कुछ बिन्दुओं को मध्यनजर रखते हुए 22 अगस्त से 24 अगस्त तक धारा 144 सीआरपीसी के आदेश जारी किये गए हैं। जिला मैजिस्ट्रेट यशपाल ने आगे बताया कि फरीदाबाद में तुरन्त प्रभाव से 22 से 24 अगस्त तक किसी भी प्रकार के ड्रोन कैमरा अथवा ग्लाइडर आदि की उड़ान को पूर्ण रूप से प्रतिबन्धित कर दिया गया है व अमृता अस्पताल, सेक्टर-88 ग्रेटर फरीदाबाद के आस-पास दो किलोमीटर के दायरे में निर्माणाधीन कार्य पर भी पूर्ण रूप से रोक लगा दी गयी है। परन्तु यह आदेश प्रधानमंत्री के 24 अगस्त के दौरे से सम्बन्धित निर्माण कार्यों पर लागू नहीं होगी।

अमृता अस्पताल में कार्यक्रम स्थल पर सुरक्षा की तैयारियों का जायजा लेते पुलिस आयुक्त विकास अरोड़ा व अन्य अधिकारी।

उन्होंने बताया कि सभी होटल/गैस्ट हाऊस/ पीजी/धर्मशाला, मकान मालिक द्वारा किरायेदार / नौकर रखने से पूर्व उनका पूर्ण विवरण प्राप्त किये बिना उन्हें काम पर रखने पर प्रतिबन्ध है तथा किरायेदार/नौकर रखने से पूर्व उसका पूर्ण विवरण सम्बंधित थाने में जमा करवाना अनिवार्य है।

अनन्या जैन ने दी भावभीनी अरंगेत्रम प्रस्तुति

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

एक भरतनाट्यम नर्तक के करियर में अरंगेत्रम एक महत्वपूर्ण अवसर होता है और उनके गुरु के लिए एक सम्मान। अरंगेत्रम एक महत्वपूर्ण संस्कार है जो यह भरतनाट्यम के सागर में शिष्य की यात्रा में पहला मील का पत्थर होता है। ऐसा ही अवसर रविवार की संध्या नृत्यांगना अनन्या जैन के लिए था, जिन्होंने अपनी पहली एकल प्रस्तुति देकर मंच प्रवेश किया। नाट्य वृक्ष द्वारा चिन्मया मिशन में आयोजित इस संध्या में अनन्या ने अद्भुत भरतनाट्यम प्रस्तुत किया और उपस्थित सभी दर्शकों का मन मोहा। हालांकि यह अनन्या नृत्य के संसार में पहली एकल प्रस्तुति थी, लेकिन वे फैशन जगत में बॉलीवुड सेलीब्रिटीज के बीच जाना-माना नाम है। कोविड महामारी के दौरान शुरू किये अपने लेबल द बूज़ी बटन के माध्यम से वे कई बड़ी अभिनेत्रियों के लिए डिजाईनिंग कर चुकी हैं।

भरतनाट्यम के प्रति उनका रूझान 9 वर्ष की आयु में हुआ और पिछले 15 सालों के वे गुरू गीता चन्द्रन के सान्निध्य में नाट्य वृक्ष से जुड़कर इस विद्या में निपुणता प्राप्त करते हुए इस एकल प्रस्तुति के लिए तैयार हुई हैं। उनके अरंगेत्रम में गीता चंद्रन (नट्ठुवंगम), के वेंतकेश्वरन (गायन), मनोहर बालचंदिराने (मृदंगम), वरुण राजशेखरन (घाटम) और जी राघवेंद्र प्रसाद (वायलिन) ने संगत दी। अनन्या के अंगेत्रम के अवसर पर श्रीमती लीला वेंकटरामन (प्रख्यात नृत्य विद्वान, लेखक, आलोचक और स्तंभकार)

बतौर मुख्यातिथि और श्रीमती रेखा चौधरी (संस्थापक और निदेशक, न्यू शकुंतलम कला और संस्कृति केंद्र) भी उपस्थित थीं।

अपनी प्रस्तुत की शुरूआत अनन्या ने रागम गंभीरा नट्टई में पुष्पांजलि के साथ की। इसके बाइ अलारिप्पु, जो शरीर का प्रतिनिधित्व करता है, धीरे-धीरे भरतनाट्यम मुद्राओं को प्रदर्शित करता है, जैसे कमल धीरे-धीरे सूरज की रोशनी में खुलता है प्रस्तुत किया। उनकी अगली प्रस्तुति पारंपरिक रागमालिका जातिस्वरम थी। इसके बाद रागम पूर्वी कल्याणी में वर्णन, रागम मांड में मीरा भजन, तमिल में पदम इंदेनु वचितिविरा भी पेश किया। उन्होंने रागम बृंदावानी में एक शानदार तिलाना के साथ अरंगेत्रम का समापन किया। गुरू गीता चन्द्रन ने अनन्या की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा, कमाल की प्रस्तुति दी है अनन्या ने। प्रस्तुति के उपरान्त अनन्या ने बताया, कि नृत्य हमेशा से मेरे लिए पहला रूझान रहा है। गीता अक्का से मिलने के बाद मेरी दुनिया ही बदल गई।

सीबीआई छापे

मनीष सिसोदिया पर निशाना

केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो–सीबीआई ने दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के आवास तथा अन्य ठिकानों पर छापे मारे। ये छापे कथित रूप से दिल्ली एक्साइज़ नीति में उनके द्वारा किए गलत कामों के आरोप में डाले गए हैं जिससे केन्द्रीय एजेंसियों की भूमिका पर पैदा विवाद और गहरा हो गया है। हालांकि, यह नीति बनाने में नेतृत्वकारी भूमिका अदा करने वाले मनीष सिसोदिया ने कहा है कि सीबीआई की जांच का 'स्वागत' है। परंपरागत रूप से केन्द्र सरकार तथा भारतीय जनता पार्टी ने अपनी कार्रवाई को भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष बता कर सही ठहराया है, जबकि आम आदमी पार्टी और बाकी विपक्ष ने इसे भाजपा सरकार द्वारा 'राजनीतिक बदले' की कार्रवाई कहा है। स्थिति जो भी हो, एजेंसियों की भूमिका इस प्रकार निर्धारित की जानी चाहिए कि उनके कामकाज पर कोई सवाल न उठें। अभी बहुत लंबा समय नहीं बीता जब सीबीआई ऐसी एजेंसी मानी जाती थी जिसके अधिकारी न केवल सक्षम, बल्कि भ्रष्टाचार से परे थे। यह छवि कुछ साल पहले तक बनी अनेक हिंदी फिल्मों में भी दिखी थी। हालांकि, सीबीआई अधिकारियों के गुणों से जुड़ी कुछ धारणायें भले ही मिथकीय रही हों, पर इसके बावजूद इसे मोटेतौर से दृढ़ व निष्ठावान अधिकारियों के संगठन के रूप में देखा जाता था। लेकिन दु:ख की बात है कि अनेक घटनायें सामने आने के बाद अब ऐसा नहीं समझा जाता है। इसके अलावा एक संगठन प्रवर्तन निदेशालय–ईडी है जिसकी शायद विरले ही जनता में कोई छवि रही हो, पर अब इसे राजनीतिक रूप से निशाना लगाने के लिए जाना जाता है। सीबीआई, ईडी व अन्य केन्द्रीय एजेंसियों को न केवल अपने चार्टर में निर्धारित दायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए, बल्कि उनका आम जनता के बीच ऐसा सम्मान भी होना चाहिए।

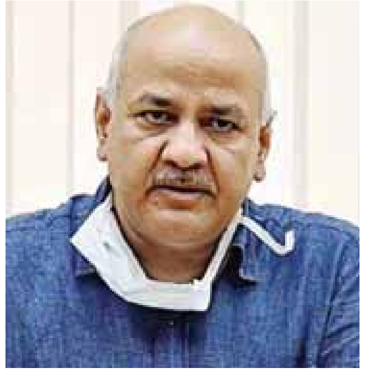

मनीष सिसोदिया पर सीबीआई छापों के बाद विपक्ष ने फौरन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार पर आरोप लगा दिया है कि वह इन एजेंसियों का प्रयोग अपना राजनीतिक स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कर रही है, लेकिन उन्होंने इस समस्या से निपटने के लिए सकारात्मक व रचनात्मक व्यवस्था बनाने का कोई सुझाव नहीं दिया है। सभी लोग समस्या देख सकते हैं और इसके कारण पैदा परेशानियों पर दु:ख प्रकट कर सकते हैं, लेकिन इससे कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा। मुख्य मुद्दा समस्या का समाधान करना है। यदि विपक्षी नेता स्थिति बदलना चाहते हैं तो उनको एक समाधान बताना चाहिए? लेकिन पहली बात यही है कि क्या वे वास्तव में ऐसा चाहते हैं? अथवा वे समय काट रहे हैं और अपने सत्ता में आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि इन्हीं एजेंसियों का प्रयोग कर भाजपा नेताओं से बदला लिया जा सके? आखिरकार अतीत में कुछ एजेंसियों का प्रयोग नापसंद लोगों के उत्पीड़न के लिए किया गया था। लेकिन यदि ऐसा है तो इसे न्याय के बजाय बदला ही कहा जा सकता है। इसके साथ ही सवाल उठता है कि लोकपाल संस्था के साथ क्या हुआ था? 2011 में अन्ना हजारे का आंदोलन याद कीजिए। उस समय पूरे देश से कहा गया था कि लोकपाल भ्रष्टाचार का समाधान होगा। उस समय अराजनीतिक नागरिकों से लेकर पेशेवर क्रांतिकारियों तक सभी प्रकार के एक्टिविस्ट व आम जनता में अनेक लोगों समेत सभी लोग संभावित रामराज्य आने या स्वर्ग मिलने के प्रति जोश से भरे थे। निश्चित रूप से इसके बाद लोकपाल बना, लेकिन आज कोई नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है और यहां तक कि लंबे से उसका नाम तक अखबारों तक से गायब है। यह परिघटना मिर्जा गालिब के शब्दों में ऐसी ही है कि 'होता है शबोरोज़ तमाशा मेरे आगे।' ऐसे में भारतीय राजनीति में संभवत: राजनीतिक कीचड़ उछालने के एक दौर की शुरुआत हो सकती है।

खैरातों से मुक्ति हेतु साहस जरूरी

खैरातें वित्तीय दीवालियेपन की ओर ले जाती हैं। इनसे बचने का एकमात्र रास्ता राजनीतिक दलों द्वारा इनकी घोषणा पर प्रतिबंध लगाना है। लेकिन भाजपा को छोड़ कर लगभग सभी दल इनके पक्ष में हैं।

उत्तम गुप्ता
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

वकील अश्विनी दुबे की एक जनहित याचिका–पीआईएल पर विचार करते हुए 3 अगस्त, 2022 को सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने सभी पक्षों से सुझाव मांगे हैं। याचिका में 'खैरातों' के खिलाफ निर्देश देने की प्रार्थना की गई है। इसका अर्थ राजनीतिक पार्टियों द्वारा वोट बटोरने के लिए सरकारी खजाने का प्रयोग कर मतदाताओं को अनेक लाभ देने की घोषणायें करना है। याचिका पर भारत के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस एन.वी.रमना व जस्टिस कृष्ण मुरारी तथा हिमा कोहली की पीठ ने विचार किया। इन पक्षों में लाभार्थी तथा वे लोग शामिल हैं जो खैरातों का विरोध करते हैं। इसके साथ ही सरकार तथा नीति आयोग, वित्त आयोग, भारतीय रिजर्व बैंक–आरबीआई व विपक्षी दलों, आदि को भी पक्ष बनाया गया है। एक समिति की संरचना के बारे में भी सुझाव मांगे गए हैं जो मुद्दे पर 'निष्पक्ष' रूप से विचार कर अपने सुझाव देगी। लगभग एक दशक से यह मुद्दा पूरे देश को परेशान कर रहा है।

अतीत में खैरातों को पार्टियों के घोषणापत्र में एक कोने में जगह मिलती थी, पर हालिया वर्षों में वह केन्द्रीय भूमिका में आ गई हैं और चुनाव जीतने में प्रमुख भूमिका अदा कर रही हैं। भ्रष्टाचार को बढ़ावा तथा प्रशासन की नैतिकता में क्षरण के साथ ही इन खैरातों से राज्य की बजटीय स्थिति व अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य पर गंभीर दुष्प्रभाव पड़ता है। केन्द्र सरकार की वित्तीय निष्ठा के मानकों में स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया है कि 'किसी भी अधिकारी को खर्च के ऐसे आदेश देने की शक्ति नहीं प्राप्त है जो परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से उसे लाभ पहुंचाए। सरकारी खजाने से खर्च किसी खास व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के लाभ के लिए नहीं होना चाहिए, जब तक इस धनराशि या खर्च की अनुमति किसी अदालत ने न दी हो या वह घोषित नीति या परंपरा के अनुकूल हो।'

खैरातों पर करदाताओं के पैसे का बेलगाम खर्च न घोषित नीति या परंपरा है और न ही इसकी अनुमति किसी अदालत ने दी है। यह भयानक वित्तीय अनियमितता है जिसका अर्थ केवल चुनावी राजनीति में लाभ प्राप्त करने के लिए जनता के पैसे से मतदाताओं को रिश्वत देना है। किसी व्यक्तिगत उम्मीदवार द्वारा वोट पाने के लिए अपनी जेब के पैसे से नकद या शराब की बोतलें बांटना उचित ही भ्रष्ट व्यवहारों में शामिल है। लेकिन जब कोई पार्टी सरकारी धन से मतदाताओं को रिश्वत देती है तो इसे एक प्रकार से वैधता प्राप्त हो जाती है। कुछ विशेषज्ञों ने इस आधार पर खैरातों को उचित ठहराने का प्रयास किया है कि यह 'एक पार्टी द्वारा किया वादा जनता के साथ एक प्रकार का अनुबंध है।' यह तर्क गलत है क्योंकि ऐसे वादे में अंतर्निहित रूप से करदाताओं के पैसे का प्रयोग शामिल है। यदि सरकारी धन का प्रयोग न हो तो इस वादे का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। दूसरी ओर बिना धन के समर्थन ऐसा वादा करना जनता को पूरी तरह भ्रमित करने का प्रयास है।

यह 'सामान्य' बजट खर्च के उलट है जो नियोजित तथा राजस्व प्राप्त करने के सुनियोजित प्रयासों से जुड़ा होता है, जबकि चुनाव घोषणापत्र में वादा की गई खैरातों के कारण होने वाला अतिरिक्त खर्च पूरी तरह 'अनियंत्रित' रूप से राज्य की बजटीय स्थिति को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए आम आदमी पार्टी द्वारा पंजाब में मुफ्त बिजली तथा हर वयस्क महिला को प्रति माह 1,000 रुपये देने से राज्य के बजट पर हर साल 20,000 करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा। यह विकास खर्च की कीमत पर होगा। इसके कारण राज्य को अतिरिक्त कर्ज लेना पड़ेगा जिसके परिणामस्वरूप कर्ज का बोझ असहनीय सीमा तक बढ़ जाएगा। पांच साल के बाद उपरोक्त खैरातों के कारण राज्य का कर्ज 1,00,000 करोड़ रुपये बढ़ जाएगा जिसमें इस पर लगने वाला ब्याज शामिल नहीं है। वैसे भी राज्य पर पहले से ही 3,00,000 करोड़ का कर्ज है।

आदर्श रूप से कल्याण उपाय का अर्थ गरीबों को सीमित अवधि तक लक्षित होना है जिसके बाद उसे अपने पैरों पर खड़े होने की आशा की जाती है। लेकिन समकालीन राजनीतिक पार्टियों द्वारा बांटी जाने वाली खैरातें इस प्रमुख सिद्धान्त का उल्लंघन करती हैं जिसका उदाहरण पंजाब में हर वयस्क महिला को प्रति माह 1,000 रुपये देना है। इसका अर्थ है कि किसी अमीर महिला को भी यह धनराशि मिलेगी, जबकि गरीब होने पर भी पुरुष इससे वंचित रहेंगे। सामान्य कल्याणकारी योजना में जहां एक समाप्ति तिथि होती है और अंतर्निहित उद्देश्य पूरा होने के बाद वह समाप्त हो जाती है, वहीं राजनीतिक पार्टियों द्वारा दी जाने वाली खैरातों में ऐसी कोई सीमा नहीं होती है। इसका कारण यह है कि ऐसी खैरातें किसी सुस्पष्ट लक्ष्य के बिना होती हैं और यही मतदाताओं को प्रभावित करने का एकमात्र उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है। खैरातें ऐसी नीव की तरह हैं जिन पर विजय सुनिश्चित होती है और संबंधित पार्टियां चुनाव–दर–चुनाव इनकी घोषणा करती रहती है।

अब करदाताओं के दृष्टिकोण से चीजों को देखें। जब कर राजस्व का प्रयोग गरीबों को सब्सिडी देने के लिए होता है तो इसे कल्याणकारी उपाय कहा जाता है। इसका एक उदाहरण आयुष्मान भारत के अंतर्गत आने वाले लाभार्थी हैं। लेकिन जब अमीरों समेत सबको खैरात दी जाती है तो यह करदाताओं में करापवंचन को बढ़ावा देती है। 'हमेशा' के लिए अपनी मूलभूत जरूरतें पूरी होने का आश्वासन मिलने पर खैरात की संस्कृति लोगों की सोच में उसी प्रकार घर कर जाती है जैसे कि वे काम के प्रति लापरवाह हो जाते हैं। इससे एक ऐसा परिदृश्य बन सकता है जहां भारत का जनसंख्या लाभांश एक जनसंख्या दायित्व बन जाएगा।

संक्षेप में कहा जाए तो खैरातें एक प्रकार के वित्तीय दीवालियापन तथा आर्थिक विभीषिका की ओर ले जाती हैं। इससे बचने का एकमात्र रास्ता राजनीतिक पार्टियों द्वारा उनका वादा करने पर प्रतिबंध लगाना है। सर्वोच्च न्यायालय ने जुलाई, 2013 में एस. सुब्रमण्यम बालाजी बनाम तमिलनाडु सरकार एवं अन्य में कहा था कि किसी प्रकार की खैरातों का वितरण सभी लोगों को प्रभावित करता है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि इससे 'स्वतंत्र व मुक्त चुनावों की जड़ों पर बड़ी सीमा तक प्रहार होता है।' इसके बावजूद उसने कहा कि चुनाव घोषणापत्र में इसके वादों को लोक प्रतिनिधित्व कानून–आरपीए या उस समय लागू किसी अन्य कानून के अंतर्गत 'भ्रष्ट व्यवहार' नहीं कहा जा सकता है। इसलिए सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा खैरातों के वितरण को रोका नहीं जा सकता है जो राज्य विधानसभा में सरकारी पैसा खर्च करने के लिए कानून बना सकती हैं।

लेकिन इस विभीषिका से थोड़ी राहत देने के लिए उसने भारतीय निर्वाचन आयोग–ईसीआई को ऐसे 'निर्देश तैयार करने' को कहा 'जो पंजीकृत राजनीतिक पार्टियों के चुनाव घोषणापत्र की इन राजनीतिक पार्टियों से विचार–विमर्श के पश्चात विषयवस्तु को नियंत्रित करने के प्रयास करें। यह उम्मीदवारों के सामान्य व्यवहार, बैठकों, प्रदर्शनों, चुनाव के दिन, सत्तारूढ़ दल, आदि के संबंध में निर्देशों में शामिल किए जा सकते हैं।' इसमें कहा गया है, 'इनको आदर्श आचार संहिता में एक राजनीतिक पार्टी द्वारा जारी चुनाव घोषणापत्र संबंधी अलग निर्देश सूची में शामिल किया जा सकता है। इसका उद्देश्य राजनीतिक पार्टियों व उम्मीदवारों को निर्देश देना है।'

लेकिन ईसीआई ने कभी ऐसे निर्देश जारी नहीं किए। इस बीच खैरातें न केवल जारी रहीं, बल्कि उनका दायरा भी बढ़ा। इससे राज्यों के सकल घरेलू उत्पाद–जीएसडीपी व कर्ज का अनुपात भारी मात्रा में बढ़ा। अधिकांश राज्यों में यह कम से कम 33 प्रतिशत है और पंजाब में तो 50 प्रतिशत तक पहुंच गया है। वर्तमान पीआईएल में सर्वोच्च न्यायालय ने 25 जनवरी, 2022 को कहा, 'निसंदेह यह गंभीर मामला है। खैरातों के लिए बजट सामान्य बजट से अधिक हो रहा है। इससे चुनाव का समान आधार प्रभावित हो रहा है।' 3 अगस्त, 2022 को उसने संकेत किया कि यह संसद व ईसीआई का काम है कि वह खैरातों पर नियंत्रण के लिए कानून बनाने की पहल करे। लेकिन उसके पहले एक कमेटी गठित की जाए जो सभी सकारात्मक व नकारात्मक पक्षों पर बात करे। 17 अगस्त, 2022 को पीठ ने राय दी कि यह मुद्दा जटिल है। सभी राजनीतिक पार्टियों के सदस्य समिति के सदस्य हैं और भाजपा को छोड़ कर उनमें से लगभग सभी मजबूती से खैरातों के पक्ष में हैं। उनका तर्क है कि यह उनका 'संवैधानिक दायित्व' है, ऐसे में यह संभावना नहीं है कि 'खैरातों' पर कभी नियंत्रण लग पाएगा।

प्रचार की राजनीति का समय

शशांक सौरव
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

प्रचार की राजनीति आज की व्यवस्था बनती प्रतीत होती है। राजनीतिक दल लोगों का विश्वास जीतने के लिए दुष्प्रचार कर रहे हैं, लेकिन इसके अपने खतरे हैं। जोसेफ गोएबल्स ने कहा था कि यदि आप एक बड़ा झूठ बोलते हैं और उसे दोहराते रहते हैं, तो लोग अंतत: उस पर विश्वास करने लगेंगे। ऐसा लगता है कि हमारा राजनीतिक नेतृत्व इन सिद्धांतों का पालन कर रहा है और जनता को गुमराह करने के लिए गढ़े हुए झूठ फैलाए जा रहे हैं। कांग्रेस धीमी मौत मर रही है और कई दावेदार इस रिक्त स्थान को भरना चाहते हैं। अरविंद केजरीवाल की अगुवाई वाली आम आदमी पार्टी (आप) खुद को सत्तारूढ़ भाजपा के विकल्प के रूप में पेश करने के लिए राजनीति के स्थापित सिद्धांतों से परे जाकर खूब जोर लगा रही है। हमलों की हालिया श्रृंखला में, आप मोदी सरकार पर दस लाख करोड़ रुपये से अधिक के कर्जो को राइट–आफ करके कॉरपोरेट्स को अनुचित वित्तीय लाभ देने का आरोप लगा रही है। लोन राइट–ऑफ करना एक तकनीकी शब्द है जिसका उपयोग अक्सर बैलेंस शीट को साफ करने और कुछ कराधान लाभ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। राइट–ऑफ का मतलब यह नहीं है कि बैंक वसूली प्रक्रिया जारी रखना बंद कर देगा। ऋण माफी अलग है जिसमें बैंक राशि को माफकर देते हैं और आगे की वसूली के लिए कोई प्रयास नहीं किया जाता है। यह मानना भोलापन है कि केजरीवाल और उनकी टीम को इन तकनीकी बातों की जानकारी नहीं है। आरबीआई के आंकड़ों से पता चलता है कि कॉर्पोरेट ऋण खाते, जो पुनर्गठन के अधीन थे, 2015 के बाद लगातार कम हो गए हैं।

2015 में पुनर्गठित हुए कॉर्पोरेट ऋण और कुल ऋण क्रमश: 180,299 करोड़ तथा 476,853 करोड़ रूपए थे जो 2021 में घटकर 22,941 करोड़ तथा 143,010 करोड़ रूपए रह गए। दिवाला कानून 2016 में लागू किया गया था और यह एक बड़ी सफलता रही है। करीब सात लाख करोड़ रुपये की राशि से जुड़े मामलों का आईबीसी के तहत समाधान किया गया है। बैंकिंग उद्योग के स्वास्थ्य को मापने के लिए पूंजी पर्याप्तता एक अन्य प्रमुख संकेतक है और आईबीसी की शुरुआत के बाद इसमें सुधार हुआ है। यह पूरी चर्चा तब शुरू हुई जब पीएम मोदी ने फ्रीबीज की आलोचना की और सुप्रीम कोर्ट ने भी टिप्पणी की कि खैरात की संस्कृति टिकाऊ नहीं है। आप पार्टी राजनीति में नई नहीं है और वह करीब 8 साल से दिल्ली पर राज कर रही है। केजरीवाल अक्सर कहते हैं कि सब्सिडी देने के बावजूद दिल्ली एक राजस्व अधिशेष राज्य है, लेकिन वह छुपाते हैं कि दिल्ली 2004–05 से राजस्व अधिशेष राज्य रही है। दिल्ली एक राजस्व अधिशेष राज्य है क्योंकि मुख्य रूप से दिल्ली सरकार के कर्मचारियों की पेंशन देयता तथा दिल्ली पुलिस का खर्च केंद्र सरकार वहन करती है। यह विलासिता अन्य राज्यों के पास उपलब्ध नहीं है और शायद यही कारण है कि पंजाब के मुख्यमंत्री ने अपने तर्कहीन चुनावी वादों को पूरा करने के लिए केन्द्र से कहा। दिल्ली के मुख्यमंत्री आसानी से राजकोषीय घाटे की स्थिति और बढ़ी हुई उधारी से पीछा छुड़ा लेते हैं। दिल्ली में 2021–22 में करीब उन्नीस हजार करोड़ का राजकोषीय घाटा था और 2022–23 के लिए यह राजकोषीय घाटा चौदह हजार करोड़ होने का अनुमान है। आप सरकार के शासन के दौरान पारदर्शिता में कमी आई है जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि विभिन्न राज्य सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (एसपीएसई) और स्वायत्त निकायों के वार्षिक खातों को लेखापरीक्षा के लिए सीएजी को प्रस्तुत नहीं किया गया था। सरकार में उद्यमिता संस्कृति गायब है और विभिन्न एसपीएसई का विशुद्ध संपदा पूर्णतया समाप्त हो गयी है। कुछ उल्लेखनीय नाम दिल्ली पावर कंपनी लिमिटेड और दिल्ली ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन (डीटीसी) हैं, जिनकी विशुद्ध संपदा 31 मार्च 2020 को 37,125 करोड़ रुपए है। यहां तक कि दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) के वार्षिक खाते भी 2017 के बाद प्रकाशित नहीं होते हैं और विपक्ष डीजेबी में एक बड़े घोटाले का आरोप लगा रहा है। सीएजी ने पहले ही इस बात पर प्रकाश डाला है कि दिल्ली स्टेट इंडस्ट्रियल एंड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (डीएसआईआईडीसी) द्वारा छूट प्राप्तकर्ताओं को अनुचित वित्तीय लाभ दिया गया है। नियमों की अनदेखी करने वाली नई आबकारी नीति पर सीबीआई जांच की सिफारिश के बाद आप सरकार ने शराब के लाइसेंस भी रद्द कर दिए।

स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र के सुधारों को केजरीवाल की एक बड़ी उपलब्धि बताया जा रहा है। हालांकि, तथ्य और आंकड़े दिल्ली सरकार के निराशाजनक प्रदर्शन को उजागर करते हैं। सरकारी आंकड़ों से पता चलता है कि प्राथमिक से माध्यमिक विद्यालयों तक शिक्षकों की संख्या में कमी आई है और शिक्षा में कुल व्यय के प्रतिशत के रूप में निवेश लगभग 2014 के स्तर पर बना हुआ है। 2022 के लिए दिल्ली सरकारी स्कूलों तथा भारत के लिए कक्षा 10 में उत्तीर्ण प्रतिशत क्रमश: 81.27 और 94.4 था, जो शिक्षा में सुधार के पूरे आख्यान को पंचर करता है। दिल्ली में अस्पतालों की संख्या 2014–15 में 95 से घटकर 2021–22 में 88 हो गई और अगर इस गिरावट की भरपाई मोहल्ला क्लीनिकों से की जाती है तो दिल्ली वालों के साथ इससे बड़ा कोई क्रूर मजाक नहीं हो सकता है।

दिल्ली प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष कर रही है, लेकिन डीटीसी द्वारा संचालित बेड़े की संख्या 2014 के 5,223 से घटकर 2020 (कोविड–पूर्व युग) में 3,762 हो गई है। आप के दौर में बेड़े का उपयोग प्रतिशत और दैनिक यात्री औसत भी नीचे चला गया है। दिल्ली सरकार बिजली सब्सिडी दे रही है और इसके लिए कैपेक्स–राशि को डायवर्ट किया गया है। ऊर्जा क्षेत्र में व्यय कुल योजनागत व्यय का 4.15 प्रतिशत था जो 2021 में घटकर 0.03 प्रतिशत हो गया। गोएबल्स ने यह भी कहा कि प्रचार अपने आप में एक अंत नहीं है, बल्कि अंत का साधन है। हो सकता है कि अरविंद केजरीवाल प्रचार की राजनीति के कट्टर प्रशंसक हों और अपने झूठ को राजनीतिक सत्ता हासिल करने के साधन के रूप में इस्तेमाल कर रहे हों।

आप की बात

खिलाड़ी बेटियां

हाल में सम्पन्न बर्मिंघम कामन वेल्थ गेम में भारतीय महिलाओं ने अपने आपको साबित किया है। हर स्तर पर महिलाओं ने तेजी से कदम बढ़ाए हैं, और खेलों में भी उन्होंने नए नए कीर्तिमान स्थापित किये है। कामन वेल्थ 2022 में भारतीय खिलाड़ियों ने 61 पदक जीते जिनमें 22 गोल्ड, 16 सिल्वर, 3 ब्रॉन्ज शामिल थे। सबसे आनन्ददायक बात यह थी कि इनमें 9 स्वर्ण पदक 24 पदक बेटियों के नाम हुए। कुश्ती से लेकर लान तक देश की बेटियों ने खूब तहलका मचाया। लान बाल गेम के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं परंतु उसमें भी गोल्ड जीतना बड़ी अहम बात थी। भारत का नेतृत्व पिंकी, लवली चौबे, नायनमोनी सैकिया और रूपा रानी तिर्की ने किया। महिलाओं की 10000 मीटर पैदल चाल में भारत प्रियंका ने इतिहास रचकर पहली बार मेडल हासिल किया। मीराबाई चानू, मालिक, निकहत जरीन और पी बी सिंधु व अन्य महिला खिलाड़ियों ने हर एक भारतीय को गौरवान्वित किया। हमें बेटियों को इस प्रकार का मंच देना होगा ताकि वे अपनी प्रतिभा को निखारकर उसे एक बड़े स्तर पर प्रस्तुत कर सकें। महिलर खिलाड़ियों की सुविधाओं में बड़े पैमाने पर सुधार की जरूरत है।

अभिषेक पाण्डेय, संत कबीर नगर

कठपुतली कला

विदेशों में पपेट (कठपुतली) कला ज्यादा पसंद की जा रही है। धागों से पुतले पुतलियों को नचाने की कला के सभी दीवाने हैं। उदयपुर राजस्थान में कठपुतली कला केंद्र है। सोशल मीडिया पर पुराने वीडियो को लोग काफी पसंद कर रहे है। वर्तमान में कठपुतली कला विलुप्ति के कगार पर जा पहुंची है। कठपुतली कला में गायन, अभिनय, धागों का सामंजस्य आदि समाहित रहता है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में सिखने की कला प्रदान होती रहती थी। नृत्य, गायन, कहानी इसमें समाहित रहती है जो जीवंत अभिनय को प्रस्तुत करती है। धागों और कठपुतली के ऐसे सामंजस्य का प्रदर्शन देख लोग दातों तले अंगुली दबा लेते थे। इस प्रकार की मनोरंजन की कलाएं और भी हैं जो विलुप्ति की कगार पर धीरे धीरे पहुंच रही हैं। धागों पर आधारित कठपुतली कला धीरे धीरे इलेक्ट्रॉनिक युग में खो सी गई। जो कभी कम पैसों में मनोरंजन देती थी। इसको आज बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इससे जमीनी स्तर पर कलाकारों की प्रतिभा को बढ़ावा मिलेगा तथा उनकी आजीविका भी बेहतर हो सकेगी।

–**संजय वर्मा**, धार

परेशान विपक्ष

जैसे ही दिल्ली में मनीष सिसोदिया समेत 21 स्थानों पर केंद्रीय अंवेषण ब्यूरो ने छापेमारी की, राजनैतिक हलके में व्याकुलता बढ़ती नज़र आयी। जबकि पहले भी सत्येंद्र जैन प्रकरण में यही आरोप प्रत्यारोप देखने को मिले थे, परन्तु बाद में उन्हें दोषी पाया गया और अब वो जेल में विश्राम कर रहे हैं। प्रदेश के मुख्यमंत्री केजरीवाल ने इस बार पुन: वही सब राग अलापना शुरू कर दिया है और स्वयं के साथ मनीष सिसोदिया को भी कट्टर ईमानदार की नवीन संज्ञा दे दी है। इनका कहना है कि अंतर्राष्ट्रीय अखबारों में इनकी तारीफ होने से इनको जबरन परेशान किया जा रहा है, जबकि इस विज्ञापन में उन्होंने मदर मैरी स्कूल का फोटो इस्तेमाल किया है। उधर सपा अध्यक्ष अखिलेश भी ट्विटर पर व्याकुल नज़र आए और इसे पक्षपात और सरकारी मशीनरी का दुरूपयोग बताया। विपक्षी नेताओं की इस व्याकुलता का कारण आखिर है क्या, क्योंकि बिना किसी ठोस कारण और सबूत के केंद्रीय एजेंसिया ऐसा करेंगी तो फंजीहत उनकी ही होगी।

–**मनोज**, मेरठ

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई–मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

फरमाया

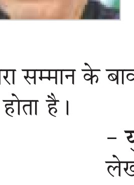

मैं कश्मीरी पंडित सुनील कुमार की शोपियां क्षेत्र में हुई हत्या से बहुत दु:खी हूं। मैं इसकी घोर निन्दा करता हूं।

– **गुलाम नबी आजाद**
कांग्रेस नेता

कुछ लोगों द्वारा सम्मान के बावजूद राष्ट्रवाद छोटे स्तर पर शुरू नहीं होता है।

– **युवाल नोवा हरारी**
लेखक व इतिहासकार

मनीष सिसोदिया के ठिकानों पर सीबीआई ने छापा मारा। न्यूयार्क टाइम्स के पहले पन्ने पर आना व भारत में शिक्षा की क्रांति आसान नहीं है।

– **अरविंद केजरीवाल**
दिल्ली के मुख्यमंत्री

यूपी बनेगा जैव ईंधन उत्पादन का मॉडल राज्य

- प्रत्येक जिले में स्थापित होंगे बायो फ्यूल प्लांट
- मुख्यमंत्री का निर्देश जल्द तैयार करें प्रदेश की नई जैव ऊर्जा नीति
- बायो फ्यूल ऊर्जा जरूरतों के साथ अतिरिक्त आय व रोजगार सृजन में भी होगा सहायक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को उच्चस्तरीय बैठक में प्रदेश में बायो फ्यूल उत्पादन को बढ़ावा देने की जरूरत पर जोर देते हुए जैव ऊर्जा नीति तैयार करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की मंशा के अनुरूप कम्प्रेस्ड बायोगैस, बायोकोल, एथेनॉल और बायो डीजल जैसे जैव ऊर्जा प्रकल्पों को प्रोत्साहन के हमारे प्रयासों के सकारात्मक परिणाम देखने की मिले हैं। अब तक बायोकोल की 2 इकाइयों में उत्पादन भी शुरू हो चुका है और कम्प्रेस्ड बायोगैस की 1 इकाई विगत जून माह ने पूर्ण हो चुकी है। भविष्य की जरूरतों के लिए हमें बायोमास सप्लाई चेन का विकास करना होगा। ऊर्जा और परिवहन के क्षेत्र में जैव ईंधन के उपयोग को बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है। विद्युत उत्पादन गृहों में बायोमास पैलेट्स के उपयोग किया जाना चाहिए। इस दिशा में ठोस प्रयास किए जाने की जरूरत है। बायो फ्यूल को बढ़ावा देना कच्चे तेल पर निर्भरता को कम करने और स्वच्छ वातावरण को बढ़ावा देने में सहायक होगा। बायो फ्यूल न केवल हमारी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में मददगार होगा, बल्कि अतिरिक्त आय और रोज़गार सृजन में भी सहायक होगा। बायो फ्यूल के उपयोग से कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी। आज जबकि पूरी दुनिया इस विषय पर चिंतित है। ऐसे में उत्तर प्रदेश के पास एक मॉडल प्रस्तुत करने का सुअवसर है। अपार संभावनाओं से भरे इस क्षेत्र में उत्तर प्रदेश को अग्रणी राज्य बनने के लिए नई जैव ऊर्जा नीति तैयार की जाए। उन्होंने कहा कि 5 वर्षों में 500 टन सीबीजी प्रतिदिन कम्प्रेस्ड गैस उत्पादन के लक्ष्य को लेकर प्रयास करें। इस तरह प्रतिवर्ष 1.5 लाख टन उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा। इसी प्रकार, बायोकोल, बायोडीजल और बायो एथेनॉल के लिए 2000-2000 टन प्रतिदिन के लक्ष्य को लेकर काम किया जाना चाहिए। इस क्षेत्र की निवेशकर्ता कंपनियों के लिए भूमि की सुलभ उपलब्धताए पूंजीगत उपादान सहित सभी जरूरी सहयोग उपलब्ध कराया जाएगा। नवीन जैव ऊर्जा नीति तैयार करते समय औद्योगिक जगत से परामर्श जरूर करें। निवेशकर्ता संस्थाओं, कंपनियों की जरूरतों को समझें। सभी पक्षों की राय लेते हुए व्यापक विमर्श के बाद नवीन नीति तैयार की जाए। अन्नदाता किसानों द्वारा पराली जलाए जाने से पैदा हो रही पर्यावरणीय चुनौतियों के स्थायी समाधान के लिए हमें विशेष प्रयास करना होगा। नवीन नीति में इस विषय का ध्यान रखा जाए। सभी 75 जिले में न्यूनतम 1 बायोफ्यूल इकाई की स्थापना के लिए नियोजित प्रयास किए जाएं। यह कार्य प्राथमिकता के साथ हो। अगले चरण में इसे हर तहसील तक बढ़ाया जाना चाहिए। बायो फ्यूल प्लांट की स्थापना और बायोमास भंडारण के लिए ग्राम समाजध्राजस्व भूमि, चीनी मिल परिसर में खाली भूमि का उपयोग किया जाना चाहिए।

कैदी बनाएंगे सोलर पैनल, एलईडी बल्ब

- 5 साल में 22000 मेगावॉट सौर ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य
- नई सौर ऊर्जा नीति जल्द तैयार करने के निर्देश, रूफटॉप सोलर प्लांट के लिए मिशन मोड में काम करने की जरूरत:सीएम

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को उच्चस्तरीय बैठक में प्रदेश की ऊर्जा आवश्यकताओं की समीक्षा की। सौर ऊर्जा प्रकल्पों को बढ़ावा देने की जरूरत पर जोर देते हुए मुख्यमंत्री ने नई सौर ऊर्जा नीति तैयार करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि कारागार में बंद कैदियों को सौर ऊर्जा उपकरण बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाए। सौर ऊर्जा पैनल, एलईडी बल्ब आदि बनाने के लिए इनका उपयोग किया जाना चाहिए। सोलर रूफटॉप मॉडल को अपनाने और लागू करने के लिए एमएसएमई और स्टार्टअप को बढ़ावा दिया जाना उपयोगी होगा। सीएम ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता और बढ़ती ऊर्जा जरूरतों की पूर्ति के लिए गैर पारंपरिक ऊर्जा विकल्पों को प्रोत्साहन दिया जाना आवश्यक है। सौर ऊर्जा इस दृष्टि से अत्यंत उपयोगी माध्यम है। यद्यपि विगत वर्षों में इस दिशा में प्रयास हुए हैंए किंतु ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लक्ष्य के लिए हमें और नियोजित व तेज प्रयास करना होगा। प्रदेश में सौर ऊर्जा उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए ठोस प्रयास किया जाना आवश्यक है। पारंपरिक ऊर्जा विकल्पों पर अपनी निर्भरता हमें न्यूनतम करनी होगी। ऐसे में भविष्य की जरूरतों के दृष्टिगत नई सौर ऊर्जा नीति तैयार की जाए। हमारा लक्ष्य अगले 5 वर्ष में 22ए000 मेगावॉट सोलर पॉवर उत्पादन का होना चाहिए। सौर ऊर्जा उत्पादन और भंडारण के क्षेत्र में निजी क्षेत्र के निवेश के लिए अनुकूल माहौल देना होगा। परियोजनाओं को समयबद्ध रूप से पूर्ण करने के लिए सिंगल विंडो प्रणाली लागू की जाए। सीएम ने कहा कि सौर ऊर्जा क्षेत्र की निवेशकर्ता कंपनियों के लिए भूमि की सुलभ उपलब्धता, पूंजीगत उपादान सहित सभी जरूरी सहयोग उपलब्ध कराये जाएंगे। नवीन सौर ऊर्जा नीति तैयार करते समय औद्योगिक जगत से परामर्श जरूर करें। निवेशकर्ता संस्थाओं, कंपनियों की जरूरतों को समझें। सभी पक्षों की राय लेते हुए व्यापक विमर्श के बाद नवीन नीति तैयार की जाए।

सपा के दो और प्रत्याशी घोषित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार को स्थानीय निकाय शिक्षक क्षेत्र के दो और प्रत्याशी की घोषणा कर दी है। सपा ने शनिवार को दो सीटों क्रमशः इलाहाबाद-झांसी खण्ड शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र एवं मुरादाबाद-बरेली खण्ड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र पर प्रत्याशी घोषित किया था। रविवार को सपा ने कानपुर-उन्नाव खण्ड शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से प्रियंका पत्नी जयवीर सिंह निवासी ग्राम रामसारी जहांगीराबाद ब्लाक पतारा कानपुर नगर तथा कानपुर-उन्नाव खण्ड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से डा. कमलेश यादव निवासी रामलला रोड रावतपुर गांव कानपुर नगर को विधान परिषद सदस्य के लिए समाजवादी पार्टी का प्रत्याशी घोषित किया गया है।

भाजपा राज में सर्वाधिक पीड़ित किसान हैः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार के सत्ता में रहते पांच वर्ष पांच महीने हो चुके हैं पर उसके कार्यकाल में उत्तर प्रदेश में विकास की एक भी ईंट नहीं रखी गई है।

भाजपा सरकार समाजवादी सरकार के विकासकार्यों को ही अपना बताकर उनका नाम बदलने और लिखवाने के अलावा और कुछ नहीं किया है। भाजपा के अब तक के रिपोर्टकार्ड में केवल भाजपा के नेताओं की प्रतिमाएं खड़ी करने का ही काम है। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा राज में सर्वाधिक पीड़ित प्रदेश का किसान है। उसे हर तरह से छला जा रहा है। बाढ़ और सूखा दोनों से वह परेशान है पर सरकार केवल बयानबाजी से ही समस्याओं का समाधान कर देने की नौटंकी कर रही है। भाजपा सरकार अपने पिछले पूरे कार्यकाल में स्थितियों का केवल आंकलन कर पाई है। लगभग 52 जिलों पर सूखे की काली छाया मंडरा रही है। खरीफ फसल बुरी तरह प्रभावित है। बड़ी तादात में बोवाई नहीं हो पाई। श्री यादव ने कहा सूखा संकट से किसान उबरता उससे पहले ही नदियों का जलस्तर बढ़ने से बाढ़ की विभीषिका का सामना करना पड़ रहा है। वाराणसी.बलिया से गंगा के उफान से निचले इलाकों में संकट है।

पांच साल से अधिक समय बीत जाने के बावजूद उसने कृषि संकट से उबरने और आपदा प्रबंधन के लिए कुछ नहीं किया है। जब संकट गहराया है तो समय रहते व्यापक इंतजाम करने के बजाय सरकार फिर तरह-तरह के बहाने बनाने लगी है। अपनी पुरानी आदत के अनुसार नए-नए वादे और नए-नए निर्देश जारी हो रहे हैं परन्तु इससे कोई भला होने वाला नहीं है। श्री यादव ने कहा तत्काल आवश्यकता तो यह है कि किसानों की फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य मिले।

ट्यूबवेल के बिजली कनेक्शन नहीं कटने के जबानी निर्देश से तो कुछ होने वाला नहीं। सरकार को किसानों के बिजली के बिल माफ करने चाहिए। बिजली बिल वसूली के लिए छापेमारी से उसे प्रताड़ित किया जा रहा है और दंडात्मक कार्यवाही की जा रही है। श्री यादव ने कहा भाजपा किसानों की कितनी हमदर्द है इसी से जाहिर है कि उसने अपने चुनावी वादे किसानों की आय दोगुनी करने को पूरा करने के लिए 2022 तक कुछ भी नहीं किया है। किसान को सिर्फ धोखा दिया गया है।

किसान को सम्माननिधि देने के बाद अब उल्टे उसको अपमानित कर वसूली की जा रही है। सत्ता का दुरूपयोग किस हद तक किया जा सकता है, भाजपा से सीखा जा सकता है। भाजपा सरकार की प्राथमिकता में किसान नहीं बल्कि उसके पूंजीपति मित्र हैं। भाजपा ने जनसामान्य को भगवान भरोसे छोड़ दिया है। जनता भी अब भाजपा को 2024 में सबक सिखाने का काम करेगी।

पिछड़ों की स्थिति पर अधिकारियों को पत्र लिखना महज दिखावा: कांग्रेस

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

कांग्रेस ने योगी सरकार पर तीखे हमले करते हुए आरोप लगाया कि पिछले दस सालों में सरकारी नौकरियों में ओबीसी को संविधान में दी गयी आरक्षण व्यवस्था के तहत प्रतिनिधित्व नहीं मिला। कांग्रेस प्रवक्ता विकास श्रीवास्तव ने कहा कि भाजपा की सरकार प्रदेश की अति पिछड़ा बाहुल्य लोकसभा सीटों को ध्यान में रखते हुए आज पुन: एक बार और अति पिछड़ों को गुमराह करने का राजनीतिक खेल कर रही है। वोट हासिल करने के लिए मुख्यमंत्री योगी का विभाग वाइज पिछड़ों की स्थिति को लेकर उच्च स्तरीय अधिकारियों को पत्र लिखने की कवायद महज दिखावा है, और पिछले कई बार की भांति की गई चुनावी राजनीति है। कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि जातियों और समुदायों के बीच आरक्षण का लाभ पहुंचाने में किस हद तक असमानता है। इसका पता लगाने के लिए केंद्र की मोदी सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 340 के तहत ओबीसी समुदाय से आने वाली जस्टिस जी. रोहिणी की अगुवाई में चार सदस्यीय आयोग का गठन 2 अक्टूबर 2017 को किया था। आयोग को 27 मार्च 2018 तक अपनी रिपोर्ट सौंप देनी थी, लेकिन उसे मोदी सरकार द्वारा अब तक 13 बार सेवा विस्तार दिया जा चुका है। लगातार पिछले 6 वर्षों में हर विधानसभा व लोकसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी द्वारा अति पिछड़ों को इन्हीं आयोगों की राजनैतिक दुहाई देकर ठगा जा रहा है। कांग्रेस प्रवक्ता विकास श्रीवास्तव ने याद दिलाया कि मुख्यमंत्री योगी ने अपने पिछले कार्यकाल में 17 ओबीसी जातियों को अनुसूचित जातियों में शामिल करने का ऐलान करते हुए 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को बढ़त दिलवाई थी। परंतु जब यह विषय केंद्र की मोदी सरकार के पास पहुंचा तो सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्रालय ने इस मामले पर सख्त कार्रवाई करते हुए योगी आदित्यनाथ सरकार की सिफारिशों को पूरी तरीके से खारिज कर दिया था। तब केंद्र की मोदी सरकार ने कहा था यह विषय केंद्र सरकार द्वारा तय होना है, न कि कोई राज्य सरकार जातियों की आरक्षण व्यवस्था में हस्तक्षेप कर सकती है। कांग्रेस ने बीजेपी पर प्रहार करते हुए कहा कि भाजपा की केन्द्र सरकार द्वारा लगातार 13 बार रोहणी आयोग का कार्यकाल बढ़ाना, प्रदेश के अति पिछड़ो, सर्वाधिक पिछड़ों के साथ सामाजिक उपहास हैं। अति पिछड़ा कार्ड का खेल करने वाली भाजपा महज दिखावा कर रही है।कांग्रेस प्रवक्ता ने स्थितियों को स्पष्ट करते हुए बताया कि केंद्रीय विभागों और बैंकों में होने वाली भर्तियों के डेटा एनालिसिस के अनुसार 10 जातियों को 25 फीसदी लाभ मिला है जबकि 38 अन्य जातियों ने दूसरे एक चौथाई हिस्से पर कब्जा कर लिया। करीब 22 फीसदी लाभ 506 अन्य जातियों को ही मिला। इसके विपरीत 2.68 फीसदी लाभ 994 जातियों ने आपस में शेयर किया। गौर करने वाली बात यह है कि 983 जातियों को कोई लाभ ही नहीं मिल पाया। इससे साफ है कि कुछ विशेष जातियों का ही कोटा लाभ में कब्जा रहता है।

नवनियुक्त प्रसपा प्रदेश अध्यक्ष का कार्यकर्ताओं ने किया स्वागत

- संगठन का गौरव स्थापित करना व कार्यकर्ताओं का सम्मान प्राथमिकता
- प्रगतिशील समाजवादी पार्टी स्थानीय निकाय का चुनाव सभी सीटों पर लड़ेगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रगतिशील समाजवादी पार्टी लोहिया (प्रसपा) के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष एवं आईसीए निदेशक निर्वाचित होकर पहली बार लखनऊ आगमन पर आदित्य यादव का जगह-जगह जोरदार स्वागत हुआ। आगरा लखनऊ एक्सप्रेस के लखनऊ टोल प्लाजा, मोहान तिराहे, पुराना पारा थाना कानपुर रोड स्थित अवध चौराहे, बंगला बाजार चौराहे एवं कमाण्ड हॉस्पिटल चौराहे पर समर्थकों ने आदित्य यादव को फूल मालाओं से लाद दिया। स्वागत से गदगद प्रसपा प्रदेश अध्यक्ष ने भी समर्थकों से जगह जगह संवाद कर दल और कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाया। आदित्य यादव ने कहा कि संगठन के साथियों द्वारा मिले स्नेह से अभिभूत हूँ, यह संवाद निरन्तर जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि संगठन का गौरव स्थापित करना और कार्यकर्ताओं का सम्मान मेरी प्राथमिकता है। इस दौरान आदित्य यादव ने कहा कि प्रगतिशील समाजवादी पार्टी एवं हम सब के नेता शिवपाल सिंह यादव एव मैं स्वयं प्रत्येक कार्यकर्ताओं के सुख दुख में सदैव साथ रहूंगा। आदित्य यादव ने प्रदेश भर से आए कार्यकर्ताओं का आवाहन करते हुए कहा कि कुछ माह पूर्व स्थानीय निकाय के चुनाव होने हैं उसकी तैयारी की जाए प्रगतिशील समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश में स्थानीय निकाय का चुनाव सभी सीटों पर लड़ेगी। इस अवसर पर पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुंदर लाल लोधी ने कहा कि उन्हें पूर्ण विश्वास है आदित्य यादव वर्तमान परिवेश और समाज को बेहतर समझकर अपने अपार क्षमताओं से पार्टी को लाभान्वित करेंगे और सामाजिक न्याय को प्रतिबद्धता से आगे बढाएँगे । मुख्य प्रवक्ता दीपक मिश्रा ने कहा कि आदित्य यादव के प्रदेश अध्यक्ष बनने से पार्टी को गुणात्मक शक्ति मिलेगी और लोहिया-जयप्रकाश की विरासत पूरी प्रतिबद्धता से आगे बढ़ेगी।

पश्चिम यूपी और ब्रज क्षेत्र में योगी करेंगे विपक्ष का सफाया!

- भाजपा नेता पश्चिम यूपी और ब्रज क्षेत्र में घर-घर कर रहे संपर्क

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

आगामी लोकसभा चुनाव में पश्चिमी उत्तर प्रदेश और सूबे का ब्रज क्षेत्र भाजपा के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। बसपा के कमजोर होने के बाद से भाजपा और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पश्चिम और ब्रज क्षेत्र में दलित वोट बैंक को साधकर विपक्ष का सफाया करने का लक्ष्य तय किया है। इस टार्गेट को पूरा करने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पश्चिम उप्र के दो दर्जन से ज्यादा जिलों की कमान अपने हाथ में ली है अब इन जिलों में दौरेकर सीएम योगी विपक्ष का सफाया करने में जुटेंगे। उत्तर प्रदेश के पश्चिम और ब्रज में 27 लोकसभा सीटें हैं। इनमें से 20 सीटें भाजपा के पास है। पश्चिमी यूपी में समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय लोकदल के गठबंधन की चुनौती के बीच मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ वहां पहले से अधिक सीटें हासिल करना चाहते हैं। यही वजह है कि दोबारा यूपी की सत्ता पर काबिज होने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सहारनपुर-शामली और मुजफ्फरनगर का दौरा कर यह साफकर दिया था कि अब आगामी लोकसभा चुनावों के लिए वह पश्चिम उत्तर प्रदेश में भाजपा के सामने किसी को टिकने नहीं देंगे अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुख्यमंत्री ने पार्टी संगठन के साथ मिलकर मिशन 2024 के लिए जो माइक्रो प्लान पर तैयार किया है। इस प्लान पर अमल शुरू हो गया है जिसके तहत सीएम योगी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी मंडल के साथ पश्चिमी यूपी की राजनीति को प्रभावित करने वाले सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, अलीगढ़ के साथ पूर्वांचल के आजमगढ़ मंडल की कमान खुद के पास रखी है और अब सुशासन के उद्देश्य से शानदार प्रयोग करते हुए पश्चिम उत्तर प्रदेश तथा ब्रज क्षेत्र में सरकार की योजनाओं का लाभ गांव-गांव में लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। मुख्यमंत्री खुद हर माह पश्चिम यूपी और ब्रज क्षेत्र में दौरा कर जनता से संपर्क कर रहे हैं। भाजपा नेताओं का मत है कि पश्चिम यूपी और ब्रज क्षेत्र में मुख्यमंत्री तथा अन्य मंत्रियों एवं पार्टी पदाधिकारियों के मंडलों और जिलों में होने वाले दौरे, समीक्षा कार्यक्रमों, सरकारी योजनाओं के प्रगति की निगरानी करने जैसे की व्यवस्था पर अमल करने से जनता की समस्याओं का समाधान जल्द होगा वहीं सरकार की योजनाओं का लाभ पात्र लोगों को मिलेगा, सरकार और संगठन के बीच नीचे तक समन्वय भी बनेगा, इस सोच के तहत पश्चिम यूपी तथा ब्रज क्षेत्र में बीते लोकसभा चुनावों में हारी सीटों सहारनपुर, बिजनौर, नगीना, संभल, मुरादाबाद और अमरोहा संसदीय क्षेत्र में विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

उप्र में बढ़ी 473.91 एमएलडी सीवर शोधन की क्षमता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नदियों के पुनरोद्धार और उन्हे अविरल.निर्मल बनाने के प्रति संकल्पित हैं। मुख्यमंत्री के प्रयास से प्रदेश की करीब 60 नदियों का पुनरोद्धार किया जा चुका है। इसी के साथ नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत यूपी के धार्मिक नगरों के साथ 30 से अधिक शहरों में बहने वाली नदियों में प्रदूषण रोकने का काम और तेज कर दिया गया है। नदियों को पुराने स्वरूप में लौटाने और उनको अविरल-निर्मल बनाने के लिए 47 सीवर शोधन परियोजनाओं को शुरू किया गया है। इनमें से 27 परियोजनाएं पूरी भी हो चुकी हैं। परियोजनाओं के निर्माण से यूपी में 473.91 एमएलडी की सीवर शोधन की क्षमता बढ़ी है। सीवर शोधन की 18 परियोजनाओं का काम अंतिम चरण में है जिनमें से कुछ अगले महीने पूरी होने जा रही हैं। इसमें मुख्य रूप से प्रयागराज भी शामिल है जहां 18 नालों की टैपिंग कराने की तैयारी है। नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत तैयार की जा रही सीवर शोधन परियोजनाओं से नदियों में नालों से गिरने वाली गंदगी का शोधन किया जाएगा। नदियों को स्वच्छ बनाने की बड़ी पहल जलीय जीव-जन्तुओं को जीवन तो देगी ही साथ ही नदियों को भी निर्मल करेगी। करीब 11071.63 करोड़ रुपए की धनराशि से तैयार की जा रही 47 परियोजनाओं के निर्माण के बाद प्रदेश में कुल 1508.01 एमएलडी शोधन क्षमता का निर्माण हो जाएगा। पीपीपी मॉडल पर तैयार की जा रही इन योजनाओं में एजेंसियों को 15 वर्ष के संचालन और रखरखाव की जिम्मेदारी दी गई है। प्रयागराज नैनी, झूसी, कन्नौज, नरोरा, गढ़मुक्तेश्वर, अनूपशहर, कानपुर, अयोध्या, बिठूर, मथुरावृन्दावन, वाराणसी, चुनार, फिरोजाबाद, मुरादाबाद, कासगंज, इटावा, शुक्लागंज उन्नाव, सुल्तानपुर, जौनपुर, बागपत, मुजफ्फरनगर, बुडाना, लखनऊ, ग़ाज़ीपुर, मिर्ज़ापुर, बरेली, कैराना, फर्रूखाबाद, फैजाबाद शहर, आगरा, मेरठ, सहारनपुर में सीवर शोधन परियोजनाओं का काम किया जा रहा है।

सितंबर तक अलौकिक रूप में नजर आने लगेगा अयोध्या का प्राचीन सूर्य कुंड

- योगी सरकार के प्रयासों का श्रीराम नगरी में दिखने लगा है असर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ, अयोध्या

भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या में योगी सरकार की विकास यात्रा निरंतर जारी है। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के दिव्य-भव्य रूप में अस्तित्व में आने से पहले ही यहां विकास की तमाम योजनाओं को मूर्त रूप देने का कार्य तेजी से चल रहा है। बात चाहे अन्तरराष्ट्रीय एयरपोर्ट की हो श्रीराम मंदिर कॉरीडोर की हो या प्राचीन कुंडोंए सरोवरों को अलौकिक रूप देने कीए अयोध्या में विकास कार्य तेजी से संपादित किये जा रहे हैं। इसी क्रम में पौराणिक सूर्य कुंड के सुंदरीकरण का कार्य तेजी से चल रहा है। इसी साल सितंबर महीने तक इसके पूरा होने की उम्मीद है। अयोध्या विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष विशाल सिंह ने बताया कि अयोध्या के आसपास के जितने भी पौराणिक स्थल हैं उनको विकसित किया जा रहा है। पौराणिक कुंडों में सबसे पहले सूर्य कुंड के सुंदरीकरण का कार्य हो रहा है। जनवरी 2022 से शुरू हुआ ये कार्य लगभग पूरा होने को है और उम्मीद है कि सितंबर 2022 तक इसे कम्पलीट कर लिया जाएगा। विशाल सिंह के अनुसार अयोध्या रामनगरी से करीब 4 किलोमीटर दूर पौराणिक सूर्य कुंड परिसर की बाउंड्री वॉल का निर्माण

कराया जा रहा है। सूर्य कुंड परिसर में ही भगवान राम के व्यक्तित्व.कृतित्व को लेकर लेजर शो भी दिखाया जाएगा। सूर्य कुंड में होने वाली सारी गतिविधियां शाम के वक्त ही रखी जाएंगी। यहां बच्चों के मनोरंजन के लिए पार्क विकसित किए जा रहे हैं। पार्क में ही झूले लगाए जाएंगेए इसके अलावा परिसर में ओपन एयर थियेटर का भी निर्माण किया जाएगा। साथ ही हवन कुंड नवग्रह वाटिका भी बनायी जाएगीए जिसमें भगवान राम के जीवन से संबंधित लेजर शो का आयोजन किया जाएगा। सूर्य कुंड के सुंदरीकरण कार्य को देख रहे सहायक अभियंता अनिल सिंह के अनुसार इस कुंड की एक खास बात यह भी है कि इसके चारों तरफ द्वार बनाये गये हैं। इन द्वारों के सुंदरीकरण का कार्य तेजी से चल रहा है। साथ ही इसके घाटों की सफाई भी अब लगभग पूरी हो चुकी है। प्रदेश सरकार द्वारा इसके लिए 24 करोड़ का बजट है जिसमें से 50 लाख रुपये लाइट शो के लिए हैं और 50 लाख रुपये सूर्य कुंड मंदिर के सुंदरीकरण के लिए हैं। बाकी बची राशि से इस कुंड को दिव्य-भव्य रूप देने के लिए कार्य कराया जाएगा। बता दें कि अयोध्या का प्राचीन सूर्य कुंड मंदिर जिस स्थान पर है उस जगह पर प्राचीन काल में घोषार्क तीर्थ हुआ करता था। इस बात का प्रमाण डच इतिहासकार हंस बेकर की पुस्तक अयोध्या से मिलता है। घोषार्क तीर्थ का वर्णन स्कन्द पुराण में भी है। स्कन्द पुराण के अनुसार यह तीर्थ स्थल सभी पापों को नाश करने वाला है। घोषार्क तीर्थ की महिमा सूर्य मंदिर तथा कुंड स्नान के लिए आदि काल से ही प्रसिद्ध रहा है।

रेउसा चौराहे पर फल की रेहड़ी लगाने वाले से ठगी

फल व सब्जी वालों को शिकार बना रहे साइबर क्रिमिनल

● फल विक्रेता सूरज को साइबर अपराधियों ने लिया निशाने पर

संवाददाता। सीतापुर

साइबर अपराधी हर रोज नए-नए पैंतरे अपनाकर लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं। कई बार शिक्षित और जिम्मेदार ओहदे पर आसीन शख्स भी साइबर अपराधियों के जाल में फंसकर ठगी का शिकार हो जाते हैं। साइबर अपराधियों के निशाने पर अब फल और सब्जी वाले भी आ गए हैं। सीतापुर के रेउसा थाना इलाके से एक फल विक्रेता को साइबर क्रिमिनल्स ने खाकी वर्दी के जरिए भरोसे में लेकर अपना शिकार बना लिया। जबकि सब्जी विक्रेता साइबर अपराधियों के जाल में फंसने से बाल-बाल बच गया। दरअसल, रेउसा चौराहे पर फल व जूस बेचने वाले सूरज शुक्ला को शनिवार शाम अंजान नम्बर से वीडियो कॉल आती है, जिसमें उसे वीडियो कॉल पर वर्दीधारी जवानों का कैम्प दिखाया जाता है। जवानों के लिये जूस व फल खरीदने का ऑर्डर दिया जाता है। फल विक्रेता सूरज ने रात भर मेहनत कर 40 गिलास अनार, 20 गिलास मुसम्मी, 20 किलो सेब, 20 दर्जन केला का ऑर्डर तैयार किया। सुबह जब सूरज ने ऑर्डर ले जाने के लिए कॉल की तो उससे पेमेंट देने के लिए खाता नम्बर मांगा गया। फल विक्रेता ने अपना खाता नंबर दिया जिसमें महज 148 रुपये ही थे। इस पर कहा गया कि इस खाते में पेमेंट नहीं आ सकता कोई दूसरा खाता दो जिसमें कम से कम पांच हजार रुपये होने चाहिए। फल विक्रेता ने अपने एक परिचित का खाता नंबर दे दिया। इसके बाद एक हजार रुपये भेजने पर भुगतान की बात कही गई, फल विक्रेता ने एक हजार रुपये भेज दिए तो उधर से पांच हजार की रकम मांगी गई। इस पर फल विक्रेता को शक हुआ और खुद को ठगे जाने का अहसास होने पर रेउसा थाने में सूचना दी। फल विक्रेता सूरज शुक्ल से सुनिए किस तरह साइबर क्रिमिनल्स ने उसे अपना शिकार बनाया। इसके अलावा रेउसा चौराहे पर ही सब्जी की दुकान लगाने लगाने वाले शिवम मौर्या को भी झांसे में लेने का प्रयास किया गया। सब्जी का ऑर्डर देकर पैसे ऑनलाइन लेने के लिये उससे खाता नंबर मांगा गया। हांलाकि ठग ने उससे पैसे डलवाने पर दुगने पैसे का भुगतान करने को कहा तो शिवम के पिता ने नगद सब्जी लेने को कहकर पैसे भेजने से मना कर दिया।

रामकोट पत्रकार यूनियन के संगठन मंत्री को मातृ शोक

संवाददाता। रामकोट सीतापुर

● सभी ने शोक संतप्त परिवार को दुख की इस घडी में साहस प्रदान करने और दिवंगत की आत्मा की चिर शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की

एक हिंदी दैनिक समाचार पत्र में पदस्थ व रामकोट पत्रकार यूनियन के संगठन मंत्री शिवेंद्र गुप्ता की माता जी का पूर्वाहन 1.00 बजे के करीब निधन हो गया। उनकी उम्र 65 वर्ष की थी। न्यूरो संबंधित बीमारी के चलते लखनऊ मेडिकल कॉलेज में इलाज के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। श्रीमती रमा गुप्ता अपने पीछे अपने पति संजय कुमार गुप्ता 4 पुत्र-पुत्र वधु, दो पुत्रियां सहित 11 नाती पोतों को छोड़ कर स्वर्ग सिधार गई। मृत्यु का समाचार सुनकर श्रद्धांजली देने वालों का तांता लग गया। क्षेत्र का समूचा पत्रकार जगत सहित सैकड़ों लोगों ने नम आंखों से श्रद्धांजलि अर्पित कर दिवंगतात्मा को शांति प्रदान कर अपने श्री चरणों मे स्थान देने की प्रार्थना की। क्षेत्र में उनकी मृत्यु से काफी लोगों में शोक की लहर है। दोपहर 2.00 बजे के करीब रामकोट कस्बा स्थित मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार किया गया। सभी ने शोक संतप्त परिवार को दुख की इस घडी में साहस प्रदान करने और दिवंगत की आत्मा की चिर शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। कस्बे के पत्रकारों व व्यापारियों तथा जनप्रतिनिधियों ने भी पत्रकार की माता के निधन पर शोक संवेदनाएं व्यक्त की। पत्रकार की माता की अंत्येष्टि में सैकड़ों की संख्या में लोगों ने नम आंखों से विदाई दी। अंतिम संस्कार में ग्राम प्रधान रामनिवास उर्फ पप्पू वर्मा, रामकोट पत्रकार यूनियन के संस्थापक सुनीत अग्निहोत्री, संरक्षक राजीव शुक्ला, अध्यक्ष सौरभ मिश्रा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष तार बाबू, उपाध्यक्ष रियासत अली सिद्दीकी, कोषाध्यक्ष विशाल भारती, संतोष कुमार राव, व सीतापुर से सैकड़ों लोगों ने अंतिम विदाई दी।

रसोई गैस सिलेंडर में लगी आग से महिला झुलसी

बरेली । रसोई गैस सिलेंडर से लीक हो रही गैस में लगी आग से एक महिला बुरी तरह झुलस गई उसे नाजुक हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। कैंट थाना क्षेत्र के गांव कांधर पुर निवासी दुर्गा प्रसाद की पत्नी मानसी को आज सुबह उसके बेटे वीरेश ने इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसने बताया कि मानसी ने कल शाम को रसोई गैस का सिलेंडर खत्म होने के बाद दूसरा सिलेंडर लगाया था जिसमें से गैस लीक हो रही थी और आज सुबह जब मानसी रसोई में चाय बनाने के लिए गई तो चूल्हा जलाते समय अचानक गैस में आग लग गई और पास खड़ी मानसी के कपड़ो नें भी आग पकड़ ली उसने मदद के लिए शोर मचाया तो घर में मौजूद पति व अन्य लोगों ने मौके पर पहुंचकर आग को बुझा दिया लेकिन तब तक मानसी बुरी तरह जरूर झुलस चुकी थी और रसोई में रखा सामान भी जल चुका था घर में मौजूद बेटे वीरेश ने उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई है ।

स्नेहलता मेहरोत्रा के निधन पर जताया शोक

● शोक की इस घड़ी में दुख सहन करने की शक्ति परिवारी जनों को प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई

संवाददाता। सीतापुर

नगर पालिका परिषद सीतापुर कार्यालय में एक सभा कर वार्ड नंबर 23 तामसेन गंज की पूर्व सभासद स्नेह लता मेहरोत्रा के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया। नगर पालिका परिषद सीतापुर के अधिशासी अधिकारी वैभव त्रिपाठी ,विकास मेहरोत्रा, कार्यालय अधीक्षक महेश गुप्ता, लेखा लिपिक महेश शुक्ला, जलकर लिपिक ललित श्रीवास्तव, प्रकाश निरीक्षक वैभव कपूर, वाहन प्रभारी अनुकूल सेठ, राजस्व निरीक्षक अवधेश जायसवाल, प्रकाश लिपिक संजय यादव, ग्रहकर लिपिक शैलेंद्र शर्मा, सुनील द्विवेदी, राकेश दुबे ,रवि श्रीवास्तव ,राकेश सैनी आदि ने शोक व्यक्त कर श्रद्धांजलि अर्पित की। एवं शोक की इस घड़ी में दुख सहन करने की शक्ति परिवारी जनों को प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

उर्दू पत्रकारिता ने हमेशा जगाई देशप्रेम की भावना : अजमली

● भारतीय उर्दू पत्रकारिता के 200 साल के अवसर पर परिचर्चा एवं सम्मान समारोह आयोजित

संवाददाता। सीतापुर

भारतीय उर्दू पत्रकारिता के 200 साल पूरे होने के अवसर पर एक परिचर्चा एवं सम्मान समारोह का आयोजन बज़्मे उर्दू के तत्वाधान में किया गयाद्य मशहूर स्वतंत्रता सेनानी अल्लामा फ़ज़ले हक़ खैराबादी की याद में आयोजित इस कार्यक्रम में फ्भारतीय उर्दू पत्रकारिता में सीतापुर के योगदान का महत्त्व विषयफ्र पर वक्ताओं ने कार्यक्रम को संबोधित किया। अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के उर्दू विभाग के प्रो0 सिराज अजमली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सीतापुर की उर्दू पत्रकारिता में अल्लामा फ़ज़ले हक़ खैराबादी का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने ने ही अंग्रेजों के खिलाफ फतवा जारी करके जनता में देशप्रेम की भावना जागृत करने का काम किया था। फज़्ले हक खैराबादी की बेटी सईदुल निशां हिर्मां एक अच्छी शायरा थीं जिनके बेटे मुज़्तर खैराबादी बाद में देश के बड़े शायर बने। मुज़्तर खैराबादी के बेटे जां निसार अख्तर भी अपने ज़माने के क़ाबिल शायर थे जिनके बेटे जावेद अख़्तर और उनके पोते फरहान अख्तर आज फिल्म इंडस्ट्री का बड़ा नाम हैं। जिन लोगों ने भी अल्लामा फज़्ले हक खैराबादी पर काम किया है उनका भी सीतापुर और उसकी पत्रकारिता से एक रिश्ता जुड़ ही जाता है। बाहर वाले ये देखकर ईर्ष्या करते हैं कि सीतापुर के लोगों ने अपने काम से एक मिसाल पेश करके उर्दू पत्रकारिता को नयी ऊंचाइयों पर पहुँचाया है। इंक़लाब के रेज़ीडेंट एडिटर जीलानी खान ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सर्वप्रथम उर्दू सहाफत ने अंग्रेजों की आँखों में आँखें डालकर आज़ादी की लड़ाई लड़ी थी और लोगों को एहसास दिलाया था कि जनता यदि चाहे तो अंग्रेजी हुकूमत को उखाड़ फेंक सकती है। ये हौसला उर्दू पत्रकारिता में ही था जिसकी कीमत बाद में उर्दू पत्रकारिता ने चुकाई। कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना में भी सीतापुर के लोगों का प्रमुख योगदान रहा है जिसमें मौलवी शेख़ इकराम अली के अलावा अल्लामा तुराब अली खैराबादी और खलीलुद्दीन अश्क खैराबादी का नाम प्रमुख है। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार केजी त्रिवेदी और संचालन खुश्तर रहमान खान ने किया। कार्य्रकम में उर्दू और हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने वाले 40 पत्रकारों को अवार्ड प्रदान किया गया और शाल्यार्पण कर उनका सम्मान किया गया। इस अवसर पर डॉ. सुहेल वहीद, शोभित टंडन, एम सलाहुद्दीन, ज्ञान प्रकश सिंह प्रतीक, ऋचा सिंह, खबीर नदवी, आर के यादव, सागर गुप्ता, राजेश मिश्र, हरिराम अरोरा, संतोष मिश्र, शहाब वहीद, फ़राज़ हमीद, शोएब वहीद, मो0 रेहान, मो0 कैफ सहित कई लोग उपस्थित रहे।

नगर निगम ने सिविल लाइंस क्षेत्र से 78 बंदरों को पिंजरे में कैद किया

संवाददाता। बरेली

बरेली में इन दिनों शहर से लेकर देहात तक बंदरों का आतंक लेकिन अब इस पर जल्दी अंकुश लग जाएगा बरेली नगर निगम की तरफ से शनिवार को बंदर पकड़ने का अभियान को शुरू किया गया बंदर पकड़ने की टीम ने पहले दिन शहर के सिविल लाइंस क्षेत्र से 78 बंदरों को पिंजरे में कैद किया इन बंदरों को पीलीभीत के माला के जंगलों में छोड़ा जाएगा और उसके बाद अलग-अलग क्षेत्रों में इस अभियान को चला कर उत्पाती बंदरों को पकड़ा जाएगा आपको बता दें कि बरेली में इन दिनों हर तरफ बंदर ही बंदर आतंक मचाते हुए दिखाई दे रहे हैं जिसको लेकर नगर निगम ने वन विभाग से परमिशन लेने के बाद एक एनजीओ को बंदर पकड़ने का ठेका दिया है फिलहाल अभी यह बंदर शहरी क्षेत्र से पकड़े जाएंगे उसके बाद इनको देहात में भी अभियान चलाकर पकड़ने का काम किया जाएगा।

जैनब फातिमा ने किया सपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता का स्वागत

बरेली । समाजवादी सदस्यता अभियान के तहत बरेली पहुंचीं समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुमैय्या राना के आगमन पर छात्रसभा की राष्ट्रीय सचिव जैनब फातिमा ने शॉल ओढ़ाकर जोश-ओ-खरोश के साथ स्वागत किया। सुमैय्या राना ने सभी महिला वर्ग का धन्यबाद देते हुए कहा कि पार्टी में महिलाओं का बड़ा योगदान है, इसके साथ ही तमाम समाजिक व राजनीतिक मुद्दों पर आपसी विचार विमर्श कर ज्यादा से ज्यादा तादाद में महिलाओं युवा वर्ग को समाजवादी पार्टी से जोड़ने पर बल दिया। इसी क्रम में स्वागत करने वालों में जैनब फातिमा के साथ मैना, गजल अंसारी, हिरा शेख आदि शामिल रहीं।

केंद्रीय मंत्री ने शुरू कराया मार्ग निर्माण

निघासन-खीरी। अगर नेता दमदार हो तो कोई भी विकास कार्य करवाना बाएं हाथ का खेल है। ज्ञातव्य है कि लुधौरी से मदनापुर संपर्क मार्ग, जिसकी लंबाई दस किमी से कुछ अधिक बताई जाती है, दर्जनों गांवों की लाइफ लाइन है। इस संपर्क मार्ग में इतने गहरे गड्ढे हो गए थे जिन्हें गिनना भी मुश्किल हो गया। गौरतलब है कि उक्त संपर्क मार्ग की सारी औपचारिकताएं पूरी हो गईं लेकिन जब तक इसके निर्माण की नौबत आती तब तक बरसात का आगाज हो गया। इसकी वजह से इसके निर्माण को बरसात के बाद शुरू करने का फैसला किया गया। लेकिन जनता के दर्द को समझते हुए केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र टेनी के प्रतिनिधि अरविंद सिंह संजय के अथक प्रयास से ग्राम पंचायत मदनापुर से इस महत्वपूर्ण संपर्क मार्ग के निर्माण की शुरुआत किए जाने की पक्की सूचना प्राप्त हुई है। उल्लेखनीय है कि इस महत्वपूर्ण संपर्क मार्ग के निर्माण के बाद लुधौरी, खमरिया, झौआपुरवा रानीगंज, मदनापुर, सेमरापुरवा, पुरैना व गोविंदपुर सहित तमाम ग्रामीणों का आवागमन सुचारू रूप से जारी रहेगा। संपर्क मार्ग से आवागमन करने वाले सैकड़ों ग्रामीणों ने गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र टेनी तथा प्रतिनिधि अरविंद सिंह संजय को धन्यवाद ज्ञापित किया है।

आज मनाया जाएगा खुशहाल परिवार दिवस

संवाददाता । लखीमपुर-खीरी

खुशहाल परिवार दिवस 22 अगस्त को जिला महिला अस्पताल, सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों एवं हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर मनाया जाएगा। इस संबंध में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन.उत्तर प्रदेश की मिशन निदेशक अपर्णा उपाध्याय ने सूबे के सभी संबंधित अधिकारियों को पत्र भेजकर विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किया है। यह जानकारी कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डा. अश्विनी कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि खुशहाल परिवार दिवस माह की 21 तारीख को मनाया जाता है लेकिन इस माह 21 अगस्त को रविवार होने के कारण इसका आयोजन 22 अगस्त को हो रहा है। नोडल आरसीएच कार्यक्रम डा. अश्वनी कुमार ने बताया कि इस बार खुशहाल परिवार दिवस जिला महिला चिकित्सालय, समस्त सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के साथ-साथ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं क्रियाशील हेल्थ वेलनेस सेंटर भी मनाया जायेगा। जिसे लेकर सीएमओ डा. अरुणेंद्र कुमार त्रिपाठी द्वारा सभी को निर्देश जारी किए जा किए गए हैं।

मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने में परिवार नियोजन सेवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। खुशहाल परिवार दिवस पर परिवार नियोजन सेवाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाता है। इस दौरान लाभार्थियों को परिवार नियोजन के साधन नि:शुल्क उपलब्ध तो कराये ही जाते हैं। साथ में इच्छुक लाभार्थियों को परिवार नियोजन साधनों के बारे में परामर्श भी दिया जाता है। खुशहाल परिवार दिवस के माध्यम से नव विवाहित दंपती और वह योग्य दम्पति जिनके तीन या तीन से अधिक बच्चे हैंए जिनका परिवार पूरा हो गया है एवं छोटे बच्चे की आयु एक वर्ष पूर्ण हो गई हैए को परिवार नियोजन की सेवाओं से जोड़ना है। जिससे वे अपना परिवार के आकार को अपनी सुविधानुसार और इच्छानुसार नियंत्रित कर सके।

मंदिरों में गूंजी ध्वनि, जन्मे कान्हा

संवाददाता । मैलानी खीरी

श्री कृष्ण जन्मोत्सव का बड़े ही धूमधाम से पूरी रात चलता रहा। मेन मार्केट के राम जानकी मंदिर में झांकियां सजाई गई। नन्हें-मुन्ने बच्चों ने भगवान श्री कृष्ण के रूप को धारण कर आम जनों का मन मोह लिया। थाना परिसर में शिव मंदिर पर विधि विधान से पूजा अर्चना करके पार्टियों ने भजन प्रस्तुत किए। भजन सुनकर नगरवासी पूरी रात झूमते रहे। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी राम जानकी मंदिर में श्री कृष्ण जन्म महोत्सव को लेकर शाम से ही सजी हुई झांकी देखने वालों का तांता लगा रहा। पुलिस प्रशासन भी मौके पर मौजूद रहा। शनिवार की रात को मेन मार्केट में राम जानकी मंदिर पर झांकियां सजाई गई। थाना प्रभारी निरीक्षक राम लखन पटेल को भवानी शंकर महेश्वरी ने भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति प्रतिमा देकर सम्मानित किया। इसके अलावा मेन बाजार के राम जानकी मंदिर में घंटा और शंख ध्वनि के बीच श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर भक्तों ने आरती उतारी प्रसाद वितरण किया गया। शहर के कई मंदिरों में देर रात तक कार्यक्रम जारी रहा जिसे देखने के लिए नगरवासी भी यहां मौजूद रहे। इसके अलावा भजन कीर्तन का कार्यक्रम पूरी रात चलता रहा। इस मौके पर भवानी शंकर महेश्वरी, कीर्ति महेश्वरी, गुरमीत कौर, विनय, अनिल गुप्ता, विजय, व्यापार मंडल अध्यक्ष सुनील कुमार चोपड़ा, डीके सक्सेना व कारीगर भैय्या आदि तमाम लोग मौजूद रहे।

सपा के निवर्तमान नगर अध्यक्ष ने विजयी टीम को दी ट्राफी

निघासन-खीरी। 3 दिन से लगातार चल रहे मां दुर्गा क्रिकेट टूर्नामेंट का फाइनल मैच बुद्धिपुरवा और नकटहा के बीच खेला गया। टास जीत कर बल्लेबाजी करने उतरी नकटहा की टीम ने 8 ओवर में 90 रन बनाये रनों का पीछा कर रही बुद्धिपुरवा टीम 8 ओवर में मात्र 40 रन ही बना सकी। कार्यक्रम में पधारे मुख्य अतिथि सपा निवर्तमान नगर अध्यक्ष मनोज वर्मा, नगर पंचायत सपा प्रत्याशी निघासन ने विजेता एवं उपविजेता टीम को नगद पुरुस्कार सहित ट्राफी भेंट की। मैन आफ द मैच मैन आफ द सीरीज रमाकांत को चुना गया। टूर्नामेंट का आयोजन शिवम वर्मा विशाल ने किया।

पेज एक का शेष

गांधी परिवार...

कांग्रेस की हार के बाद राहुल गांधी ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद सोनिया गांधी पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष बनने के लिए सहमत हो गई थीं। उस समय भी कांग्रेस कार्यसमिति ने व्यापक विचार-विमर्श के बाद राहुल गांधी को अध्यक्ष पद बने रहने का समर्थन किया था और उनसे इस्तीफा नहीं देने का आग्रह किया था। जब उन्होंने पार्टी के सर्वोच्च निर्णय लेने वाले निकाय की सलाह को अस्वीकार कर दिया, तो सीडब्ल्यूसी ने सोनिया गांधी से आगे बढ़कर जिम्मेदारी थामने का अनुरोध किया। मई 2019 के बाद कई महीनों की चुप्पी के बाद जुलाई 2020 के अंत में कांग्रेस में उस समय हंगामा खड़ा हो गया जब सोनिया गांधी को एक पत्र में 23 वरिष्ठ नेताओं (जी-23) ने पार्टी के सभी स्तरों पर तत्काल चुनाव कराने की मांग की। इसके बाद 16 अक्टूबर, 2021 को सीडब्ल्यूसी ने आंतरिक चुनावों के लिए अस्थायी कार्यक्रम को मंजूरी दी।

आठ लोगों...

अर्जुन पांडे के खिलाफ एलओसी जारी की गई है। हालांकि, अभी तक पर्नोड रिकार्ड के पूर्व कर्मचारी मनोज राय के खिलाफ कोई एलओसी जारी नहीं की गई है। इससे पहले सिसोदिया ने दावा किया था कि सीबीआई ने उनके खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी किया है। उन्होंने इस कदम को ड्रामा करार दिया था। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भी केंद्र पर निशाना साधते हुए कहा कि वह बेरोजगारी और मुद्रास्फीति के मुद्दों को हल करने के लिए राज्य सरकारों के साथ मिलकर काम करने के बजाय पूरे देश से लड़ रहे हैं। सिसोदिया ने प्रधानमंत्री का एक पुराना वीडियो भी साझा किया, जिसमें सीबीआई के राजनीतिकरण पर हमला किया गया था। उन्होंने कहा कि सीबीआई के छापे के संबंध में मोदी को जो कहना है, उसे सुनना चाहिए। अगर नहीं सुनेंगे तो आप एक बहुत ही महत्वपूर्ण सच्चाई को जानने से वंचित रह जाएंगे। बीते शुक्रवार को उनके आवास पर छापेमारी के दौरान सीबीआई को कुछ नहीं मिलने का दावा करते हुए सिसोदिया ने कहा कि वह दिल्ली में खुले घूम रहे हैं और उनके खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी किया गया है।

बस खरीद...

भ्रष्टाचार का मामला पिछले साल मार्च में दिल्ली विधानसभा में भाजपा द्वारा उठाया गया था। पिछले साल जून में तत्कालीन उपराज्यपाल अनिल बैजल द्वारा गठित तीन सदस्यीय समिति ने एएमसी में प्रक्रियागत खामियां पाई थी और इसे खत्म करने की सिफारिश की थी।

बिहार के...

मुलाकात हुई। थाना अध्यक्ष ने कहा, इसके अलावा नोटिस में गिरीश को राजस्थान स्थित एक कंपनी से जुड़े होने की बात कही गई है। लेकिन उनका कहना है कि वह वहां (राजस्थान) कभी गया ही नहीं।

श्रीकांत त्यागी...

राष्ट्रीय महासचिव त्रिलोक त्यागी मंच पर पहुंचे थे। मंच पर उन्हें बोलने नहीं दिया गया। लोगों ने कहा कि ये राजनीतिक मंच नहीं है। श्रीकांत की पत्नी अनु त्यागी ने सांसद डॉ महेश शर्मा पर गंभीर आरोप लगाए। उसने कहा यह पूरी साजिश डॉ महेश शर्मा की है। उन्होंने मेरे परिवार और मेरे पति को फंसाया है। अनु ने प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री पुलिस और प्रशासन से कहा, मेरे पति के खिलाफ गैरकानूनी ढंग से कार्रवाई की गई है। उनका इतना दोष नहीं था, जितनी उनके खिलाफ कार्रवाई हुई। इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच हो। संयुक्त त्यागी स्वाभिमान मोर्चा ने 14 सूत्री ज्ञापन डीएम को सौंपा है। इसकी मांगों को पूरा करने के लिए पंचायत ने प्रशासन को 15 दिन का वक्त दिया है। महापंचायत में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश और बिहार तक से त्यागी बिरादरी के लोग पहुंचे हैं। जेल गए लोकेंद्र त्यागी ने श्रीकांत त्यागी का संदेश महापंचायत में सुनाया। उन्होंने कहा आपने गैंगस्टर से नेता बनते हुए बहुत देखे होंगे। नेता से गैंगस्टर देखना हो, तो श्रीकांत त्यागी को देखिए। इस बीच योगी सरकार के बहिष्कार की आवाज उठी। हालांकि, इसका डैमेज कंट्रोल भी किया गया। मंच से कहा गया कि हमारी लड़ाई योगी सरकार से नहीं, सिर्फ सांसद महेश शर्मा से है। नोएडा डीएम सुहास एलवाई ने पहुंचकर ज्ञापन लिया। ज्ञापन लेकर तुरंत मंच से चले गए। इसे लेकर त्यागी समाज ने नाराजगी जताई। कहा कि ज्ञापन को सुने बिना ही डीएम चले गए, ये हालत है। त्यागी समाज के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सुनील कुमार ने कहा, हम चाहते हैं कि श्रीकांत त्यागी और उनके साथियों से सारी धाराएं हटाई जाएं।

महबूबा मुफ्ती...

मुख्य दुश्मन के रूप में पेश करने की सोच के तहत मुझे आज नजरबंद करके रखा गया है। महबूबा ने कहा कि चोटीगाम में भट के परिवार से मिलने की उनकी कोशिशों पर प्रशासन ने पानी फेर दिया। उन्होंने कहा, यही प्रशासन दावा करता है कि हमें हमारी सुरक्षा के मद्देनजर नजरबंद किया गया है, जबकि वे खुद घाटी के हर कोने में जा सकते हैं।

गार्ड से...

पर महिला आग बबूला हो उठी। उसने कार का शीशा नीचे कर गार्ड को गाली देना शुरू कर दिया। उसने डेढ़ मिनट में 9 बार गाली दी। गार्ड का कॉलर पकड़ लिया और घसीटा। गार्ड के अन्य साथी छोड़ने की मिन्नत करते रहे, लेकिन उसने गाली देना बंद नहीं किया। पुलिस ने गाली देने वाली महिला भव्या रॉय के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। वह वकील है। उसे जब हिरासत में लिया गया तो वो अपनी ही गाड़ी में गई और ड्राइव भी खुद ही कर रही थी। वहीं आहत गार्ड ने नौकरी छोड़ने की बात कही। उसने कहा 'बहुत हो गया बेइज्जती सहते-सहते। हम भी परिवार वाले हैं। अब मुझे नौकरी नहीं करना है। हम सोसाइटी में अपनी पूरी जिम्मेदारी से काम करते हैं। सभी महिलाओं को अपनी बहन, मां समझते हैं, लेकिन पढ़ी-लिखी होने के बावजूद महिला में कोई तमीज नहीं है। महिला ने पहले भी बदतमीजी की है।' ये पूरा मामला शनिवार का है। वीडियो में साफ तौर पर दिख रहा है कि महिला भव्या रॉय गार्ड के साथ गाली-गलौज कर रही है और अन्य गार्डों से भी अभद्र भाषा का प्रयोग कर रही है। इस दौरान गार्ड भव्या से बचकर दूर भी जा रहे हैं, लेकिन उसके बावजूद महिला उनके पास जाकर गाली-गलौज कर रही है और एक गार्ड को पकड़कर धक्का-मुक्की भी की। कोर्ट ने उसे 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है।

जदयू की...

भी बल मिला है। इन बैठकों में पार्टी का एजेंडा तय करने और भाजपा से नाता तोड़ने के उसके फैसले का समर्थन किए जाने की संभावना है। नीतीश के जद(यू) सदस्यों को भी संबोधित करने की उम्मीद है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी जद(यू) का एक प्रमुख संगठनात्मक निकाय है। वहीं, राष्ट्रीय परिषद एक व्यापक निकाय है, जिसमें कार्यकारिणी के सभी सदस्य शामिल होते हैं। नीतीश ने खुद को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश किए जाने की संभावनाओं को अक्सर खारिज किया है। हालांकि, जद(यू) के अध्यक्ष ललन सिंह ने हाल ही में कहा था कि उनकी पार्टी इस पर विचार के लिए तैयार है, बशर्ते अन्य विपक्षी दल संबंधित भूमिका के लिए नीतीश के नाम का समर्थन करें। इस बीच, रविवार को राजद नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि अगर विपक्षी दल नीतीश का समर्थन करें तो वह प्रधानमंत्री पद के मजबूत उम्मीदवार हो सकते हैं।

पीएम को...

कहना है कि यह मौसम की सभी परिस्थितियों में जीवित रह सकती है। कर्नाटक पशु चिकित्सा, पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय के निदेशक बी वी शिवप्रकाश ने कहा कि मुधोल हाउंड को बहुत लंबी दूरी से चीजों को देखने की उसकी क्षमता के लिए जाना जाता है। उन्होंने कहा, इस कुत्ते को भागने की उसकी क्षमता, उसके कद और लंबी दूरी से चीजों को देखने की क्षमता के लिए जाना जाता है। किसी अन्य नस्ल से तुलना करने पर, यह किसी भी मौसम में जीवित रह सकता है। शिवप्रकाश ने कहा कि चूंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मेक इन इंडिया अभियान पर जोर दे रहे हैं तो कुत्ते की यह स्वदेशी नस्ल भी ध्यान आकर्षित कर रही है। इस नस्ल को वफादार और शिष्ट माना जाता है। एसपीजी की स्थापना 1985 में हुई थी और यह प्रधानमंत्री, पूर्व प्रधानमंत्रियों और उनके परिवार के सदस्यों को सुरक्षा मुहैया कराती है।

किसान की...

चल रहा है और उम्मीद है कि इसे पूरा होने में दो महीने और लगेंगे। हरियाणा, पंजाब और जम्मू और कश्मीर से होकर गुजरने वाले एक्सप्रेसवे का निर्माण केंद्र की भारतमाला परियोजना के तहत किया जा रहा है। इस एक्सप्रेसवे के बनने से दिल्ली से कटरा तक पहुंचने के समय में खासी कटौती हो जाएगी और यात्रा काफी सुगम होगी।

चावल घोटाले के आरोपी कृषि मंत्री सुधाकर सिंह को मंत्रिमंडल से हटाएं नीतीशः सुशील

पटना। भाजपा के वरिष्ठ नेता सुशील कुमार मोदी ने 2013 के चावल घोटाले में कथित संलिप्तता को लेकर राजद के नेता और राज्य के नए कृषि मंत्री सुधाकर सिंह को मंत्रिमंडल से हटाने की मांग मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से की है। पत्रकारों से बातचीत में सुशील कुमार मोदी ने कहा, राज्य में हुए चावल घोटाले के सिलसिले में सिंह के खिलाफ 2013 में दो प्राथमिकी दर्ज की गई थी। कैमूर स्थित दो चावल मिलों के मालिक सिंह पर राज्य खाद्य निगम के 5.31 करोड़ रुपए के चावल के गबन का आरोप है। घोटाले के सिलसिले में सिंह को जेल भी भेजा गया था। जब जमानत के लिए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया तो 60 लाख रुपए के मुचलके पर उन्हें जमानत मिली।

सुशील ने आरोप लगाया कि सिंह को अभी भी राज्य सरकार को 12 करोड़ रुपए (5.31 करोड़ रुपए का 12 साल के ब्याज के साथ) भुगतान करना है। सवाल किया कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ऐसे मंत्रियों को अपने मंत्रिमंडल में कैसे रख सकते हैं? ऐसे लोगों को तत्काल मंत्रिमंडल से हटाया जाना चाहिए। सिंह के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी पर मुख्यमंत्री से स्पष्टीकरण मांगते हुए सुशील ने कहा, क्या सिंह को मंत्रिमंडल में रखना सही होगा जबकि उनपर 12 करोड़ रुपए बकाया हैं। राज्य की नवगठित महागठबंधन सरकार पर चुटकी लेते हुए कहा कि सहकार में शामिल सहयोगियों... कांग्रेस के बिहार प्रभारी भक्त चरण दास सहित... द्वारा भी मंत्रिमंडल में कार्तिक कुमार और सुधाकर सिंह को शामिल करने पर सवाल उठाया जा रहा है।

तमिलनाडु में सुब्रह्मण्य स्वामी मंदिर सहित 2,500 तीर्थस्थलों का किया जाएगा सौंदर्यीकरण

चेन्नई। तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले के तिरुचेंदूर में श्री सुब्रह्मण्य स्वामी मंदिर का 171 करोड़ रुपए की लागत से व्यापक पैमाने पर सौंदर्यीकरण किया जाएगा। यह प्रसिद्ध मंदिर उन 2,500 से अधिक मंदिरों में से एक है, जिन्हें राज्य सरकार ने इस वर्ष नवीनीकरण, जीर्णोद्धार और रखरखाव परियोजनाओं के लिए चुना है। इन परियोजनाओं के लिए कुल 365 करोड़ रुपए की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। दानदाताओं के योगदान से बगीचे की स्थापना, प्रकाश व्यवस्था, परिसर की दीवारों की मरम्मत आदि कार्य किए जाएंगे। हिंदू धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग के आयुक्त जे. कुमारगुरुबरन ने कहा, परियोजना के पैमाने और इसके तिरुचेंदूर तटीय विनियमन क्षेत्र में आने के कारण राज्य सरकार ने केंद्र सरकार से पर्यावरण मंजूरी मांगी है। जल्द मंजूरी मिलने का विश्वास जताते हुए कहा कि तिरुचेंदूर में शीघ्र ही भक्तों के लिए व्यापक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर स्थल पर निर्माण कार्य का एरियल व्यू

सरकार कारपोरेट के मुकाबले आम जनता से अधिक की वसूल रही है : राहुल गांधी

भाषा। नई दिल्ली

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने रविवार को सरकार पर आम लोगों पर कर का अधिक बोझ डालने और अपने मित्रों के कर में कमी करने का आरोप लगाया। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने ट्विटर पर एक ग्राफ भी साझा किया और आरोप लगाया कि सरकार आम लोगों से अधिक कर वसूल कर रही है जबकि कारपोरेट से कम कर की वसूली हो रही है। उन्होंने ट्वीट कर कहा, लोगों पर करों को बढ़ाया गया, मित्रों के लिए करों में कटौती की गई - सूट-बूट-लूट सरकार के कामकाज का स्वाभाविक तरीका।

राहुल गांधी द्वारा साझा किए गए ग्राफ में कांग्रेस शासन और भाजपा सरकार के दौरान कर वसूली का तुलनात्मक विवरण दर्शाया गया है, जिसमें कहा गया, लोगों पर कम कर बनाम लोगों पर अधिक कर।

ग्राफ में दर्शाया गया है कि पिछले कुछ वर्षों में कारपोरेट कर में कमी आई है जबकि आम लोगों पर कर का बोझ बढ़ा है। इसमें यह भी दिखाया गया है कि सरकार द्वारा पिछले कुछ वर्षों से एकत्रित राजस्व का प्रतिशत आम लोगों से अधिक जबकि कारपोरेट से कम है। ग्राफ में दिखाया गया है कि 2010 में कारपोरेट पर लगे कर से एकत्रित राजस्व 40 फीसदी से अधिक था जबकि आम लोगों से 24 फीसदी कर वसूली की गई थी। इसमें दर्शाया गया है कि 2021 में कारपोरेट पर कर से राजस्व की वसूली घटकर 24 फीसदी रह गई जबकि आम लोगों से 48 फीसदी कर राजस्व वसूला गया।

आईएमएसडी ने रुश्दी पर हमले को लेकर मुस्लिम संगठनों की चुप्पी पर प्रश्न उठाया

नई दिल्ली। लेखक सलमान रुश्दी पर हमले को लेकर मुस्लिम संगठनों की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए इंडियन मुस्लिम फॉर सेकुलर डेमोक्रेसी (आईएमएसडी) ने ईशनिंदा पर उनके (संगठनों के) रुख पर उनसे पुनर्विचार करने की अपील की। साथ ही, कहा कि यह रुख मुसलमानों को फायदा पहुंचाने से ज्यादा नुकसान पहुंचा रहा है। आईएमएसडी ने रविवार को जारी एक बयान में यह कहा। इस बयान पर सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर, चुनाव विश्लेषक एवं राजनीतिक नेता योगेंद्र यादव और मैग्सायसाय पुरस्कार विजेता संदीप पांडे समेत अन्य ने हस्ताक्षर किए हैं। आईएमएसडी की बेबसाइट के मुताबिक, यह भारतीय मुसलमानों का मंच है जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा और भारत के संविधान में निहित लोकतंत्र, पंथनिरपेक्षता, समानता और न्याय के मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध है।

संगठन ने कहा कि रुश्दी पर हमला करने की साजिश डर का माहौल बनाने के लिए रची गई थी। आईएमएसडी ने कहा कि प्रतिष्ठित लेखक पर हमले की निंदा किसी भी प्रतिष्ठित भारतीय संगठन ने नहीं की। बयान में कहा गया है कि यही खामोशी इस्लाम को हिंसा और आतंक के मज़हब के रूप में चित्रित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। करीब हफ्ते भर पहले, रुश्दी पर अमेरिका के न्यूयॉर्क में 24 वर्षीय हादी मतार नाम के एक युवक ने एक कार्यक्रम के दौरान हमला किया था जिसमें लेखक गंभीर रूप से जख्मी हो गए थे। मुंबई में जन्मे रुश्दी विवादित लेखक हैं जिन्होंने द सैटेनिक वर्सेज किताब लिखी थी जिसके बाद उन्हें जान से मारने की धमकियां मिलती रही हैं।

आईएमएसडी ने दावा किया कि इस डर के माहौल के कारण ही बहुत कम लोग रुश्दी के साथ खड़े हुए। बयान में कहा गया है कि इस्लामोफोब्स (ऐसे व्यक्ति जो इस्लाम या मुसलमान से नफरत करते हैं) दुनिया को यह बताते रहे हैं कि यही बर्बरता असली इस्लाम है और 33 साल बाद मुस्लिम देशों और संगठनों की वही खामोशी देखी गई।

बयान में दावा किया गया है कि मुस्लिम संगठनों को सिर्फ तभी मानवाधिकारों की याद आती है जब उन पर हमला किया जाता है। आईएमएसडी ने आरोप लगाया कि मुस्लिम संगठन मज़हबी मामलों पर उनसे अलग रूख रखने वाले लोगों, चाहे वे मुस्लिम हों या नहीं, को समान अधिकार और सम्मान नहीं देते हैं। बयान में कहा गया है कि अल्पसंख्यक होने के नाते, भारतीय मुसलमानों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रा और असहमति के महत्व पर अधिकार-आधारित विमर्श का समर्थन करना चाहिए। आईएमडीएस ने कहा, मुसलमानों को यह दलील देने के लिए हिंदू दक्षिणपंथियों की जरूरत नहीं है कि इस्लाम और मानवाधिकार असंगत हैं, बल्कि वे खुद लंबे वक्त से इसका प्रचार कर रहे हैं।

कांग्रेस ने त्रिपुरा में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की

नई दिल्ली। कांग्रेस ने रविवार को त्रिपुरा में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग करते हुए आरोप लगाया कि राज्य में भाजपा के शासन के तहत कानून-व्यवस्था चरमरा गई है और विपक्षी दलों के सदस्यों को हिंसा का सामना करना पड़ रहा है। कांग्रेस प्रवक्ता और पार्टी के त्रिपुरा मामलों के प्रभारी अजय कुमार ने कहा कि उच्च न्यायालय के किसी मौजूदा न्यायाधीश को पूर्वोत्तर राज्य में राजनीतिक हिंसा की घटनाओं की जांच करनी चाहिए। कुमार ने यहां संवाददाताओं से कहा, हम केंद्र सरकार से मांग करते हैं कि त्रिपुरा में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के खिलाफ हो रहीं भयावह और हिंसक घटनाओं को देखते हुए, कानून-व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा जाने के कारण त्रिपुरा में राष्ट्रपति शासन लगाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, हम यह भी मांग करते हैं कि प्रधानमंत्री लोकसभा में जवाब दें कि त्रिपुरा में राजनीतिक विरोधियों को भारतीय जनता पार्टी द्वारा राजनीतिक हिंसा का शिकार क्यों बनाया जा रहा है।

कांग्रेस के पूर्व विधायक महेंद्र सिंह बारैया भाजपा होंगे शामिल

अहमदाबाद। गुजरात के साबरकांठा जिले से कांग्रेस के पूर्व विधायक महेंद्रसिंह बारैया ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है और वह राज्य में सत्तारूढ़ भाजपा में शामिल होंगे। प्रांतिल विधानसभा सीट से पूर्व विधायक बारैया ने रविवार को कहा कि वह सोमवार को भाजपा के गांधीनगर स्थित कमलम मुख्यालय में पार्टी में शामिल होंगे। बारैया ने 2012 में भाजपा के जयसिंह चौहान को हराकर प्रांतिल सीट जीती थी, जबकि 2017 में वह भाजपा के गजेंद्रसिंह परमार से 2,551 मतों के अंतर से चुनाव हार गए थे।

बारैया ने कहा, मैं 2012 और 2017 के बीच विधायक था। कांग्रेस में गुटबाजी के कारण मैं 2017 में हार गया। मैंने पार्टी नेतृत्व को इस बारे में बताया और उनसे नुकसान को रोकने के लिए कदम उठाने का अनुरोध किया। लेकिन इसके लिए पार्टी की कोई नीति नहीं है। दरअसल, पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेता ही ऐसी चीजों में शामिल हैं। बारैया ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा की और कहा कि भाजपा नीत सरकार ने उनके क्षेत्र के विकास के लिए काम किया है। पूर्व विधायक ने कहा कि विकास पर जोर होने के कारण वह सत्तारूढ़ दल में शामिल होंगे।

कांग्रेस के दो वरिष्ठ नेताओं और राज्य के पूर्व मंत्रियों के सत्तारूढ़ दल में शामिल होने के कुछ ही दिनों बाद बारैया भाजपा की प्रदेश इकाई के प्रमुख सी आर पाटिल की मौजूदगी में पार्टी में शामिल होंगे। वर्ष 1988 से 2006 के बीच गुजरात से तीन बार कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य रहे राजू परमार और मेहसाणा की विजापुर विधानसभा सीट से तीन बार के विधायक नरेश रावल 17 अगस्त को भाजपा में शामिल हुए। कांग्रेस विधायक और आदिवासी नेता अश्विन कोटवाल तीन मई को भाजपा में शामिल हुए थे।

उत्तरकाशी में आईटीबीपी के जवान आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर गश्त करते हुए

जम्मू कश्मीर के राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा के पास एक पाक घुसपैठिया गिरफ्तार

जम्मू। जम्मू कश्मीर के राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा के पास रविवार को थल सेना के जवानों ने एक पाकिस्तानी घुसपैठिए को गिरफ्तार किया। राजौरी के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मोहम्मद असलम ने बताया कि नौशेरा सेक्टर के सहर मकरी क्षेत्र में नियंत्रण रेखा की पहरेदारी कर रहे सेना के जवानों को किसी घुसपैठिए की संदिग्ध गतिविधि नजर आई और उन्होंने उसे ललकारा, तब वह भागने लगा। असलम ने कहा, इस पर घुसपैठिए पर गोली चलाई गई,जिसमें वह घायल हो गया और उसे पकड़ा लिया गया। उसका स्थानीय सैन्य अस्पताल में उपचार कराया गया और अब उसे राजौरी में सेना के अस्पताल ले जाया गया है। उन्होंने कहा कि इस मामले की जांच एवं घुसपैठिए से पूछताछ बाद में की जाएगी। घुसपैठिए की पहचान पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर निवासी 32 वर्षीय तबरीक हुसैन के रूप में की है। हुसैन के पास से कोई संदिग्ध सामग्री नहीं मिली है और वह नियंत्रण रेखा पार करने का प्रयास क्यों कर रहा था।

पंजाब सरकार ने विधिक अधिकारियों की भर्ती में एससी समुदाय के लिए आरक्षण लागू किया

चंडीगढ़। पंजाब सरकार ने विधिक अधिकारियों की भर्ती में अनुसूचित जातियों (एससी) के लिए आरक्षण व्यवस्था लागू करने की घोषणा रविवार को की। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा कि महाधिवक्ता कार्यालय में सृजित किए जा रहे विधिक अधिकारियों के 58 नए पद अनुसूचित जाति (एससी) के अधिवक्ताओं के लिए आरक्षित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इन पदों को आने वाले दिनों में भरा जाएगा। मान ने कहा, जब मैंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली और मैंने अधिकारियों से पूछा कि क्या महाधिवक्ता कार्यालय में विधिक अधिकारियों को आरक्षण का कोई प्रावधान है, तो उन्होंने ना में जवाब दिया था। उन्होंने एक वीडियो संदेश में कहा, जब मैंने उनसे पूछा कि क्या हम इसके लिए प्रावधान कर सकते हैं, तो उन्होंने कहा कि सरकार ऐसा फैसला कर सकती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाधिवक्ता कार्यालय में सृजित किए जा रहे 58 नए पद अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित होंगे। उन्होंने कहा कि यह फैसला कानूनी विशेषज्ञों से परामर्श कर लिया गया है।

मान ने कहा कि पंजाब देश का पहला राज्य होगा जहां पर एससी समुदाय से आने वाले वकीलों के लिए ऐसे प्रावधान होंगे। मान ने यह घोषणा विधिक अधिकारियों की नियुक्ति के मुद्दे पर वाल्मिकी समुदाय के सदस्यों के साथ हुई बैठक के एक दिन बाद की है। वीडियो संदेश में मान ने कहा कि वह हमेशा से एससी समुदाय के युवाओं को प्रत्एक क्षेत्र में समान अवसर देने के पक्षधर रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि राज्य सरकार समुदाय को प्रगति और समृद्धि के समान अवसर देने के लिए सभी प्रयास कर रही है।

मान ने दावा किया कि पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा समुदाय की बेहतरी के लिए केवल जुबानी जमापूंजी खर्च की जाती थी जबकि आम आदमी पार्टी की सरकार ने इस संबंध में वास्तविक कदम उठाए हैं। आधिकारिक बयान के मुताबिक इस संबंध में गृह विभाग द्वारा शनिवार को विज्ञापन जारी किया गया जिसमें अर्हता रखने वाले अनुसूचित जाति के वकीलोंउम्मीदवारों से चंडीगढ़ स्थित महाधिवक्ता कार्यालय और नई दिल्ली स्थित कानूनी प्रकोष्ठ से सबद्ध होने के लिए आवेदन मांगा गया है। बयान के मुताबिक अर्हता रखने वाले इन पदों के लिए 13 सितंबर तक आवेदन कर सकते हैं।

समाज सेवा के लिए सामुदायिक भाव से आगे आएंः मोहन भागवत

भाषा। नई दिल्ली

सरसंघचालक मोहन भागवत ने रविवार को कहा कि आरएसएस समाज को जागृत एवं एकीकृत करने का काम कर रहा है ताकि भारत सम्पूर्ण विश्व के लिए एक आदर्श समाज के रूप में उभर सके। भागवत ने कहा कि लोगों को समाज की सेवा के लिए सामुदायिक भाव के साथ आगे आना चाहिए, व्यक्तिगत रूप से नहीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दिल्ली इकाई द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भागवत ने संघ के स्वयंसेवकों द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कल्याण कार्यो का उल्लेख किया। सरसंघचालक ने कहा, संघ, समाज को जागृत एवं एकीकृत करने के लिए तथा एक इकाई के रूप में अधिक संगठित करने के लिए काम कर रहा है ताकि भारत सम्पूर्ण विश्व के लिए एक आदर्श समाज के रूप में उभर सके। देश की स्वतंत्रता के लिए समाज के विभिन्न वर्गो से अनेक विभूतियों ने योगदान एवं बलिदान दिया। भागवत ने कहा कि भारतीयों का डीएनए और बुनियादी स्वभाव है कि वे समाज के रूप में सोचते हैं, व्यक्तिगत रूप से नहीं तथा हमें इन्हें और प्रोत्साहित करने की जरूरत है। कल्याण कार्यो का उल्लेख करते हुए भागवत ने कहा कि संघ के स्वयंसेवक बिना व्यक्तिगत हितों पर ध्यान दिए हुए सम्पूर्ण समाज के लिए काम करते हैं। उन्होंने कहा कि हमें कल्याण कार्य करते समय मैं और मेरा के भाव से ऊपर उठने की जरूरत है और इससे हमें एक समाज के रूप में विकसित होने में मदद मिलेगी।

ग्रामीण ओलंपिक का नाम राजीव गांधी के नाम पर रखने को लेकर भाजपा ने निशाना साधा

जयपुर। भाजपा की राजस्थान इकाई ने ग्रामीण ओलंपिक खेलों का नाम पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के नाम पर रखने को लेकर राज्य की अशोक गहलोत नीत कांग्रेस सरकार पर रविवार को निशाना साधा। मुख्यमंत्री गहलोत ने रविवार को ट्वीट कर जानकारी दी, राजस्थान में राजीव गांधी ग्रामीण ओलंपिक खेल 29 अगस्त से 5 अक्टूबर तक आयोजित होंगे। उन्होंने कहा, राजस्थान में ग्रामीण खेलों के पहले महाकुंभ के आयोजन द्वारा राजस्थान सरकार आधारभूत ढांचे को तो मजबूत कर ही रही है, साथ ही ग्रामीण खेलों को प्रोत्साहन देकर राज्य में एक नई खेल संस्कृति को जन्म दे रही है।

मुख्यमंत्री द्वारा दी गई सूचना पर टिप्पणी करते हुए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने कहा कि यह पहली बार नहीं है किं खेल महाकुंभै का आयोजन किया जा रहा है। पूनिया ने ट्वीट किया है, खेल महाकुंभ के इतिहास में जाइए गहलोत जी, यह आयोजन आप पहली बार नहीं कर रहे, इसे एक परिवार के नाम से जोड़ना छोड़िए और वास्तविकता के धरातल पर तथ्य बताइए। उन्होंने कहा, यह बहुत ही गर्व का विषय है कि खेल महाकुंभ का आयोजन पहली बार 2010 में, गुजरात में नरेन्द्र मोदी जी ने किया था।

भाजपा आईटी विभाग के प्रभारी अमित मालवीय ने भी इस संबंध में ट्वीट किया है, खेल महाकुंभ का आयोजन पहली बार 2010 में, गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। तब से ए खेल हर साल हो रहे हैं। मालवीय ने कहा, मोदी जी के उत्कृष्ट प्रयोजनों से सीखना अच्छी बात है, पर उससे राजीव गांधी का नाम जोड़ कर, देश में पहली बार ऐसा कार्यक्रम हो रहा है, ऐसा कहना, ग़लत है। मालवीय पर पलटवार करते हुए मुख्यमंत्री गहलोत के विशेषाधिकारी (ओएसडी) लोकेश शर्मा ने कहा, मुख्यमंत्री द्वारा खेलों में की गई यह पहल शायद आपको बर्दाश्त नहीं हो पा रही है।

भाजपा ऐसा निर्णय लेने वाली है जिससे आंध्र प्रदेश में भूकंप आ जाएगाः वीरराजू

अमरावती। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाई एस जगन मोहन रेड्डी की निर्धारित बैठक से एक दिन पहले, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सोमू वीरराजू ने रविवार को यहां कहा कि उनकी पार्टी एक ऐसा निर्णय लेने वाली है जिससे राज्य में भूकंप आ जाएगा। प्रदेश भाजपा प्रमुख ने कहा, आने वाले दिनों में आंध्र प्रदेश में कुछ आश्चर्यजनक घटनाक्रम होंगे। उसका कोई अंदाजा नहीं लगा सकता। उससे भूकंप आ जाएगा और जगन मोहन रेड्डी हिल जाएंगे। भारतीय जनता युवा मोर्चा की महासंग्राम यात्रा के समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वीरराजू ने कहा कि केवल भाजपा ही जगन शासन को सत्ता से हटा सकती है। वीरराजू ने चेतावनी दी, यह सिनेमा का दृश्य नहीं है। यह एक ऐसा दृश्य है जिसमें नरेंद्र मोदी ने चीन को हिलाकर रख दिया था। ऐसा ही दृश्य आंध्र प्रदेश में भी सामने आएगा।

कन्नूर विवि के कुलपति अपराधी हैं : आरिफ

तिरुवनंतपुरम, नई दिल्ली। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने रविवार को कन्नूर विश्वविद्यालय के कुलपति (वीसी) को अपराधी बताते हुए उन पर तीखा हमला बोला। राज्यपाल ने कुलपति गोपीनाथ रवींद्रन पर देश में संशोधित नागरिकता अधिनियम (सीएए) को लेकर हुए आंदोलन के बीच विश्वविद्यालय में उन्हें आमंत्रित किए जाने के दौरान उन पर हमला करने की कथित साजिश का हिस्सा होने का आरोप लगाया। खान ने राष्ट्रीय राजधानी में संवाददाताओं से कहा, वह मुझे शारीरिक रूप से चोट पहुंचाने की साजिश में शामिल थे। वह एक अपराधी हैं। वह राजनीतिक कारणों से कुलपति बने बैठे हैं। मुझे कुलपति ने वहां आमंत्रित किया था। जब मुझ पर हमला किया गया तो उनका कर्तव्य क्या था? क्या उन्हें इस बारे में पुलिस को सूचना नहीं देनी चाहिए थी? लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

वह दिसंबर 2019 में कन्नूर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित भारतीय इतिहास कांग्रेस का उद्घाटन करने के लिए गए थे, तभी उन्हें कथित रूप से परेशानी का सामना करना पड़ा। जैसे ही राज्यपाल संबोधित करने वाले थे, कार्यक्रम के लिए इकट्ठा हुए अधिकांश प्रतिनिधियों ने सीएए पर उनके रुख के खिलाफ अपना विरोध व्यक्त किया, जो उस समय एक ज्वलंत मुद्दा था। उन्होंने दावा किया कि उस समय राजभवन ने कुलपति को मंच पर जो कुछ हुआ था, उसे लेकर एक रिपोर्ट भेजने को कहा था लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। राज्यपाल ने कहा, आमतौर पर मेरे पास किसी कुलपति के खिलाफ कुछ भी कहने का कोई कारण नहीं है। अगर मुझे कार्वाई करनी होती, तो मैं कर सकता था। मेरे पास अधिकार हैं। मुझे सार्वजनिक रूप से क्यों बोलना चाहिए? खान ने आरोप लगाया, लेकिन, मुझे सार्वजनिक रूप से बोलने के लिए मजबूर किया गया है क्योंकि कुलपति अकादमिक अनुशासन की शालीनता की सभी सीमाओं को पार कर गए हैं। उन्होंने कन्नूर विश्वविद्यालय को बर्बाद कर दिया है। एक कुलपति से ज्यादा, वह एक राजनीतिक कैडर हैं... कन्नूर विश्वविद्यालय में मुझ पर हमला करने की साजिश के पीछे वही थे। राज्यपाल ने दावा किया कि उन्हें बाद में बहुत उच्च पदस्थ सूत्रों से रिपोर्ट मिली थी कि लोगों को पता था कि साजिश दिल्ली में रची गई थी। उन्होंने फिर दावा किया, वह (कुलपति) इसका हिस्सा थे। वह क्या कार्वाई करेंगे, इस बारे में पूछे जाने पर खान ने कहा, मेरी एकमात्र योजना सब कुछ व्यवस्थित करने की है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि वह जो भी कार्वाई करेंगे वह विशेषज्ञ कानूनी सलाह पर आधारित होगी, ऐसा नहीं है कि यह कार्वाई केवल उनके अहम की संतुष्टि के लिए होगी।

मुंबई में गणेश चतुर्थी के आने की आहट शुरू हो गई है। इसी के तहत भगवान गणेश की विशाल मूर्ति को पंडाल में ले जाते श्रद्धालु

पायनियर
नई दिल्ली , सोमवार, 22 अगस्त 2022

पाकिस्तान ने मुंबई हमले जैसी आतंकी साजिश से जुड़ी खबरों को खारिज किया

भाषा। इस्लामाबाद

पाकिस्तान ने मीडिया में किए गए उन दावों को रविवार को खारिज कर दिया, जिसमें परिप्रेक्ष्य से अलग कुछ घटनाओं को भारत के खिलाफ कथित आतंकी साजिश के रूप में पेश किया गया था। पाकिस्तानी विदेश कार्यालय (एफओ) ने कहा कि मीडिया में हाल में आतंकवाद से संबंधित गलत दावे किए गए थे। पाकिस्तान के विरुद्ध आतंकवाद का विमर्श गढ़ने के लिए, मीडिया में यह खबर प्रसारित की गई कि भारत ने किसी पाकिस्तानी व्हाट्सऐप नंबर से एक संदेश पकड़ा है और महाराष्ट्र में एक खाली नौका जब्त की गई है, जिसपर कुछ हथियार भी थे। इसने एक बयान में कहा कि भारतीय मीडिया के एक वर्ग ने इन दावों को कुछ इस तरह से पेश किया कि तथाकथित मुंबई हमले (26 नवंबर 2008 को हुए) जैसा हमला होने वाला हो और उसके लिए इन दावों को उससे जोड़ने का प्रयास किया गया। इसके अलावा भारतीय मीडिया ने यह खबर भी प्रसारित की कि भारतीय खुफिया एजेंसियों और सीमा पर तैनात सैनिकों को राजौरी पर सीमा पार से घुसपैठ की आशंका के चलते हाई अलर्ट पर रखा गया है। इसने कहा, यह और कुछ नहीं बल्कि आतंकवाद के बहाने पाकिस्तान की छवि खराब करने की एक और भारतीय साजिश थी। हम इन आरोपों और भारतीय दावों को सिरे से खारिज करते हैं। भारत की ओर से आतंकवाद संबंधी उन गलत दावों को पाकिस्तान खारिज करता है, जिसमें परिप्रेक्ष्य से अलग कुछ घटनाओं को भारत के प्रति कथित आतंकी साजिश के रूप में पेश किया।

इमरान के भाषणों के सीधे प्रसारण पर रोक

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में मीडिया पर निगरानी रखने वाली संस्था ने सभी उपग्रह टेलीविजन चैनलों द्वारा पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के भाषणों के सीधे प्रसारण पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। यह कदम ऐसे वक्त उठाया गया है, जब कुछ घंटों पहले खान ने इस्लामाबाद में एक रैली को संबोधित करते हुए सरकारी प्रतिष्ठानों और सरकारी अधिकारियों को धमकी दी थी।खान ने शनिवार को यहां एक जनसभा में शीर्ष पुलिस अधिकारियों, एक महिला मजिस्ट्रेट, पाकिस्तान के निर्वाचन आयोग और राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ मुकदमे दर्ज कराने की धमकी दी थी। उन्होंने अपने सहयोगी शहबाज गिल के साथ हुए बर्ताव को लेकर यह धमकी दी, जिन्हें राजद्रोह के आरोपों में पिछले सप्ताह गिरफ्तार किया गया था। पाकिस्तान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया नियामक प्राधिकरण (पेमरा) ने शनिवार को जारी एक विज्ञप्ति में कहा कि टेलीविजन चैनल बार-बार चेतावनी देने के बावजूद सरकारी प्रतिष्ठानों के खिलाफ सामग्री के प्रसारण को रोकने में नाकाम रहे हैं। इसमें कहा गया है, ऐसा देखा गया है कि पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान अपने भाषणोंवक्तव्यों में सरकारी प्रतिष्ठानों पर लगातार निराधार आरोप लगा रहे हैं और उकसावे वाले बयानों के जरिए घृणास्पद भाषणों का प्रचार कर रहे हैं, जिससे कानून एवं व्यवस्था की स्थिति बनाए रखने में मुश्किल हो सकती है।

भारत रूस से हथियार खरीदता है इसलिए यूक्रेन हमले के निंदा प्रस्ताव पर मतदान में भाग नहीं किया: ली

भाषा। सिंगापुर

सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली सिएन लूंग ने रविवार को कहा कि भारत मॉस्को से सैन्य उपकरण खरीदता है इसलिए उसने संयुक्त राष्ट्र में, यूक्रेन पर रूस के हमले की निंदा के प्रस्ताव पर मतदान में भाग नहीं किया। सिंगापुर की जनता को दिए गए वार्षिक संबोधन में ली ने मंदारिन भाषा में कहा, भारत, चीन, वियतनाम और लाओस ने संयुक्त राष्ट्र में उस प्रस्ताव पर मतदान नहीं किया जिसमें यूक्रेन पर रूस के हमले की निंदा की गई थी। भारत रूस से सैन्य उपकरण खरीदता है। गौरतलब है कि फरवरी में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में एक प्रस्ताव लाया गया था जिसमें यूक्रेन पर रूस के हमले की कड़ी निंदा की गई थी और नई दिल्ली ने यह कहते हुए उस पर मतदान में भाग नहीं लिया था कि विवाद सुलझाने के लिए संवाद ही एक रास्ता है। प्रस्ताव पारित नहीं हुआ था क्योंकि स्थाई सदस्य और फरवरी के लिए सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष रूस ने उस पर वीटो कर दिया था। ली ने कहा कि आसियान समूह का सबसे छोटा देश होने के नाते सिंगापुर के हित स्वाभाविक रूप से अन्य देशों से भिन्न हैं। उन्होंने कहा, इसलिए सिंगापुर ने न केवल रूस के हमले की निंदा की बल्कि उस पर प्रतिबंध भी लगाए। ली ने कहा कि रूस की आलोचना करते हुए सिंगापुर ने अमेरिका या रूस के साथ खड़े होने का संकेत नहीं दिया।

उन्होंने कहा कि सिंगापुर को अपनी स्थिति पर अडिग रहना है और मूलभूत सिद्धांतों का बचाव करना है। ली ने कहा कि कोई देश छोटा या बड़ा हो, उसकी संप्रभुता का सम्मान किया जाना चाहिए।

चीन ने फसलों को सूखे से बचाने के लिए कृत्रिम वर्षा की योजना बनाई

चोंगकिंग (चीन)। चीन ने कहा है कि रसायनों के माध्यम से (कृत्रिम) बारिश कराकर वह फसलों को भयंकर सूखे से बचाने का प्रयास करेगा। इस बीच, कारखानों में रविवार को इस बात का इंतजार रहा कि पनबिजली उत्पादन के वास्ते पानी की कमी के कारण उन्हें कहीं अपना परिचालन एक और हफ्ते के लिए बंद न करना पड़े। पिछले 61 साल में इस बार सबसे अधिक भीषण गर्मी के कारण फसलें मुरझा गई हैं तथा जलाशयों में पानी घटकर आधा रह गया है। सिचुआन प्रांत में घरों के वास्ते पानी बचाने के लिए पिछले हफ्ते कारखाने बंद कर दिए गए थे, क्योंकि पारा 45 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंचने के साथ ही वातानुकूलन की मांग बहुत बढ़ गई है। देश में 61 साल पहले वर्षा एवं तापमान का रिकार्ड रखना शुरू किया गया था। अखबार ग्लोबल टाइम्स के अनुसार कृषि मंत्री तांग रेनजियान ने कहा कि अगला 10 दिन दक्षिणी चीन की धान फसल का नुकसान रोकने के लिए अहम अवधि है। उन्होंने कहा कि प्रशासन शरद ऋतु में फसल कटाई सुनिश्चित करने के लिए आपात कदम उठाएगा। तांग के मंत्रालय ने अपनी वेबसाइट पर कहा कि प्रशासन रसायनों की मदद से बादल तैयार करके बारिश बढ़ाने की चेष्टा करेगा तथा वाष्पोर्त्सन को कम करने के लिए खड़ी फसल पर पानी सहेजने वाले एजेंट का छिड़काव करेगा। के अपने तीसरे कार्यकाल के लिए कवायद करने की संभावना है।

श्रीलंका की विपक्षी पार्टी ने राजपक्षे पर धन के दुरुपयोग का मुकदमा चलाने की मांग की

कोलंबो। श्रीलंका के मुख्य विपक्षी दल समागी जना बालवेगया (एसजेबी) ने कहा है कि देश के पूर्व राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे को देश लौटने का अधिकार है, लेकिन धन के दुरुपयोग के आरोपों के लिए उन पर मुकदमा चलाया जाना चाहिए क्योंकि उन्हें कानूनी छूट नहीं है। राजपक्षे (73) देश छोड़कर चले गए हैं और देश की अर्थव्यवस्था के कुप्रबंधन के लिए सरकार के खिलाफ हुए विद्रोह के कारण उन्होंने पिछले महीने इस्तीफा दे दिया था। डेली मिरर अखबार ने एसजेबी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अजीत पी. परेरा के हवाले से बताया, गोटबाया राजपक्षे इस देश के नागरिक हैं और उन्हें अपनी मातृभूमि लौटने का अधिकार है। इस अधिकार से कोई इनकार नहीं कर सकता। लेकिन, धन के दुरुपयोग के आरोपों के लिए उन पर मुकदमा चलाया जाना चाहिए। श्रीलंका का संविधान पूर्व राष्ट्रपतियों को व्यक्तिगत सुरक्षा और कर्मचारियों के साथ एक कार्यालय सहित विशेषाधिकार देता है। परेरा ने शुक्रवार को मीडिया को संबोधित करते हुए कहा, उनके खिलाफ अपने माता-पिता के स्मारक के लिए राजकीय कोष को कथित रूप से खर्च करने का मामला था। उन्हें मुकदमे का सामना करना होगा और दोषी पाए जाने पर दंडित किया जाना चाहिए, क्योंकि उन्हें संविधान के अनुसार कानूनी छूट नहीं है। एसजेबी ने राजपक्षे की सरकार पर भारत द्वारा प्रदान की गई एक अरब अमेरीकी डॉलर की ऋण सुविधा का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है, जो कि वित्तीय सहायता के तहत नकदी की कमी वाले राष्ट्र को अपने अभूतपूर्व आर्थिक संकट से निपटने में मदद करने के लिए दी गई थी।

सोमालिया के होटल में हुए हमले के बाद रविवार को मीडिया व सुरक्षाबलों ने जायजा लिया

रूस ने क्रीमिया में यूक्रेनी ड्रोन मार गिराए

● यूक्रेन ने भी हमले तेज किए

भाषा। कीव

रूसी प्राधिकारियों ने शनिवार को क्रीमिया में यूक्रेन के ड्रोनों को मार गिराने का दावा किया। रूसी सेना ने यूक्रेन के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में भी हमले किए। यूक्रेनी अधिकारियों ने बताया कि रूसी सेना ने पूर्वी यूक्रेन में कुछ शहरों में से एक पर कब्जा जमाने के प्रयासों को आगे बढ़ाया, जो पहले से ही उनके नियंत्रण में नहीं है। रूस ने 2014 में यूक्रेन से क्रीमिया छीना था। क्रीमिया में रूसी प्राधिकारियों ने बताया कि स्थानीय वायु रक्षा बलों ने सेवस्तोपोल में रशियन ब्लैक सी फ्लीट के मुख्यालय पर एक ड्रोन को मार गिराया। यह तीन सप्ताह में मुख्यालयों पर ड्रोन को मार गिराने की दूसरी घटना है। क्रीमिया के गवर्नर सर्गेइ अक्सियोनोव के सहायक ओलेग क्रायुचकोव ने शनिवार को यह भी कहा कि पश्चिमी क्रीमिया में छोटे ड्रोनों से हमले किए गए। गवर्नर ने टेलीग्राम पर कहा, वायु रक्षा प्रणालियों ने शनिवार सुबह क्रीमिया पर सभी ड्रोनों को सफलतापूर्वक निशाना बनाया। जान या माल का कोई नुकसान नहीं हुआ है। ये घटनाएं क्रीमिया में रूसी सेना की कमजोरियों को उजागर करती हैं। रूस के काला सागर के नौसेना मुख्यालय पर 31 जुलाई को एक ड्रोन हमले में पांच लोग घायल हो गए थे। इस सप्ताह क्रीमिया में रूस के एक गोला बारूद के गोदाम में विस्फोट हुआ था। पिछले सप्ताह क्रीमिया में वायु सेना के एक अड्डे पर रूस के नौ युद्धक विमानों को नष्ट कर दिया गया था। यूक्रेनी प्राधिकारियों ने इन हमलों की सार्वजनिक तौर पर जिम्मेदारी लेना बंद कर दिया है। लेकिन राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने क्रीमिया में हमलों के लिए यूक्रेनी सेना के जिम्मेदार होने का संकेत दिया है।इस बीच, हाल के सप्ताहों में क्रीमिया के उत्तर में दक्षिणी यूक्रेनी क्षेत्रों में लड़ाई तेज हो गई है। यूक्रेनी सेना ने रूस को उन शहरों से खदेड़ने की कोशिश की है, जहां पर उन्होंने छह महीने पुराने युद्ध के शुरुआत से ही कब्जा जमा रखा है। यूक्रेन के अभियोजक कार्यालय ने बताया कि मायकोलेव क्षेत्र के वोजनेसेंस्क शहर में शनिवार को रूस के मिसाइल हमले में तीन बच्चों समेत 12 लोग घायल हो गए।

यूक्रेन संघर्ष के बीच अपने आर्थिक हितों की सुरक्षा सुनिश्चित करना भारत के लिए चुनौती: जयशंकर

भाषा। साओ पाउलो (ब्राजील)

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा है कि भारत को यह सुनिश्चित करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है कि उसके आर्थिक हितों की अच्छी तरह से रक्षा की जाए और उसके उपभोक्ताओं को यूक्रेन संघर्ष के मद्देनजर तेल की कीमतों में भारी उछाल से बचाया जाए। जयशंकर ने कहा कि यूक्रेन संघर्ष के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतों में भारी इजाफा हुआ है इसलिए भारत के लिए अपने नागरिकों को तेल की बढ़ती कीमतों के बोझ से बचाना भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। दक्षिण अमेरिकी देशों की अपनी यात्रा के पहले चरण में यहां पहुंचे जयशंकर ने शनिवार को यहां भारतीय समुदाय के लोगों को संबोधित करते हुए यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि यूक्रेन संघर्ष के कारण भारत की ऊर्जा सुरक्षा संबंधी चिंताएं काफी बढ़ गई हैं। यूक्रेन संघर्ष ने भारत की ऊर्जा सुरक्षा को काफी प्रभावित किया है। रूस से सस्ती कीमतों पर तेल खरीदने के भारत के कदम का बचाव करते हुए जयशंकर ने कहा, हमारे पास एक चुनौती है। हमें कूटनीति के माध्यम से, विभिन्न सरकारों के साथ बातचीत के माध्यम से यह सुनिश्चित करना है कि हमारे आर्थिक हितों की अच्छी तरह से सुरक्षा हो और भारतीय उपभोक्ताओं को तेल की लगातार बढ़ती हुई कीमतों से जितना संभव हो सके बचाया जाए। विदेश मंत्री ने कहा कि मौजूदा समय में दुनिया वैश्वीकरण के दौर में है और यदि दुनिया के एक कोने में कुछ होता है तो बाकी सभी इससे प्रभावित होते हैं। उन्होंने कहा कि ऊर्जा के संबंध में भारत के राष्ट्रीय हितों को हर संभव तरीके से पूरा करने और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। गौरतलब है कि यूक्रेन पर 24 फरवरी 2022 को रूस की ओर से हमले की शुरुआत के बाद अमेरिका और यूरोपीय देशों ने रूस पर कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए हैं। भारत ने पश्चिमी देशों की ओर से की गई आलोचना के बावजूद यूक्रेन युद्ध के बाद रूस से तेल आयात बढ़ाया है और व्यापार के लिए मास्को के साथ संपर्क बनाए रखा है।

अंडरडॉग कभी मैदान नहीं छोड़ते: ऋषि सुनक

भाषा। लंदन

ब्रिटेन में कंजरवेटिव पार्टी के नेतृत्व के चुनाव के लिए मतदान के महज दो हफ्ते रह जाने के बीच ऋषि सुनक की टीम बोरिस जॉनसन के उत्तराधिकारी की दौड़ में प्रतिद्वंद्वी लिज ट्रस की बढ़त के मद्देनजर अंडरडॉग (संभावित पराजित प्रत्याशी) के दर्जे को भुनाने में जुटी है और इस संबंध में एक वीडियो जारी किया है।शुक्रवार रास्त को मैनचेस्टर में इस वीडियो का पहली दफा इस्तेमाल किया गया जिसमें वह विभिन्न प्रचार कार्यक्रमों में और पार्टी सदस्यों को संबोधित करते नजर आ रहे हैं। पार्टी सदस्य जिसे भी नेता चुनेंगे वह पांच सितंबर को ब्रिटिश प्रधानमंत्री का पदभार संभालेगा। सुनक ने इस वीडियो के साथ ट्वीट किया, मैं आखिरी दिन तक एक-एक वोट के लिए लड़ता रहूंगा। जॉनसन का उत्तराधिकारी बनने के लिए पिछले 30 दिनों में चुनाव प्रचार अभियान में सुनक 16,000 पार्टी सदस्यों से संपर्क साधने के लिए 100 कार्यक्रम कर चुके हैं। इस वीडियो में भारतीय मूल के 42 वर्षीय पूर्व ब्रिटिश मंत्री मतदाताओं से संवाद कर रहे हैं। वह हल्की झपकी भी लेते हुए नजर आ रहे हैं और पीछे से आवाज आ रही है।

चिकित्सकों को 1,000 करोड़ के उपहार देने के आरोप माइक्रो लैब्स ने खारिज किए

नई दिल्ली। दवा कंपनी माइक्रो लैब्स ने बुखार और शरीर के दर्द की रोकथाम में इस्तेमाल होने वाली अपनी दवा डोलो 650 को बढ़ावा देने के लिए चिकित्सकों को 1,000 करोड़ रुपए के उपहार देने संबंधी आरोपों को निराधार बताया है। एक गैर सरकारी संगठन ने बृहस्पतिवार (18 अगस्त) को उच्चतम न्यायालय को बताया कि केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ने बेंगलुरु की दवा कंपनी पर चिकित्सकों को 1,000 करोड़ रुपए के उपहार देने के आरोप लगाए है जिससे कि वे मरीजों को परामर्श में यह दवा लिखें। माइक्रो लैब्स के प्रवक्ता ने एक बयान में कहा कि मीडिया में आई कुछ खबरों में ऐसा निराधार आरोप लगाया गया है कि डोलो 650 को बढ़ावा देने के लिए कंपनी ने एक साल में 1,000 करोड़ रुपए के मुफ्त उपहार वितरित किए है। प्रवक्ता ने कहा कि यह दावा पूरी तरह से भ्रामक है और इससे माइक्रो लैब्स, दवा उद्योग और चिकित्सकों की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंच रही है। डोलो 650 की सालाना बिक्री 360 करोड़ रुपए रही है, जो कंपनी की कुल बिक्री का करीब आठ प्रतिशत है।

एलआईसी म्यूचुअल फंड का पांच वर्षों में एक लाख करोड़ के एयूएम को हासिल करने का लक्ष्य

मुंबई। एलआईसी म्यूचुअल फंड ने तेजी से वृद्धि दर्ज करते हुए अगले पांच वर्षों में एक लाख करोड़ रुपए के एयूएम (प्रबंधन के अधीन परिसंपत्ति) को हासिल करने का लक्ष्य तय किया है। गौरतलब है कि एलआईसी म्यूचुअल फंड अपने 30 वर्षों के सफर में उल्लेखनीय वृद्धि हासिल नही कर सका है। पिछले कुछ वर्षों में 43 कंपनियों वाले म्यूचुअल फंड उद्योग का एयूएम तेजी से बढ़ा है और इनकी योजनाओं में निवेश करने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ी है। म्यूचुअल फंड उद्योग के संगठन एम्फी के ताजा आंकड़ों के मुताबिक जून 2022 में उद्योग का एयूएम 14 प्रतिशत बढ़कर 37.74 लाख करोड़ रुपए हो गया। इस समय तक निवेशित खातों की संख्या बढ़कर 13.55 करोड़ हो गई। इस क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनी एसबीआई म्यूचुअल फंड का एयूएम समीक्षाधीन महीने में 23.7 प्रतिशत बढ़कर 6.47 लाख करोड़ रुपए हो गया। इसके बाद दूसरे और तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एमएफ और एचडीएफसी एएमसी रहे।

भारत की आर्थिक वृद्धि कायम : आशिमा

भाषा। नई दिल्ली

भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की सदस्य आशिमा गोयल ने कहा कि मुफ्त उपहार कभी भी मुफ्त नहीं होते हैं और जब राजनीतिक दल ऐसी योजनाओं की पेशकश करते हैं, तो उन्हें मतदाताओं को उनके वित्त पोषण और अन्य पहलुओं के बारे में बताना चाहिए। उन्होंने रविवार को बताया कि मुफ्त उपहारों की घोषणा के साथ इन सूचनाओं को जोड़ने से लोकलुभावनवाद के प्रति प्रलोभन कम हो जाएगा। गोयल ने आगे कहा कि जब सरकारें मुफ्त सुविधाएं देती हैं तो कहीं न कहीं लागत की भरपाई की जाती है। इनके जरिए ऐसी सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं में निवेश किया जा सकता है, जो क्षमता निर्माण करती हैं। उन्होंने एक साक्षात्कार में पीटीआई-भाषा को बताया, मुफ्त उपहार कभी भी मुफ्त नहीं होते... विशेष रूप से ऐसी हानिकारक सब्सिडी, जो कीमतों को विकृत करती हैं। उन्होंने कहा कि इससे उत्पादन और संसाधन आवंटन को नुकसान पहुंचता है, जैसे मुफ्त बिजली के कारण पंजाब में पानी का स्तर गिरना। गोयल ने कहा कि इस तरह की मुफ्त सुविधाएं स्वास्थ्य, शिक्षा, हवा और पानी की खराब गुणवत्ता की कीमत पर मिलती हैं, जिनसे गरीबों को सबसे ज्यादा नुकसान होता है। प्रख्यात अर्थशास्त्री ने तर्क दिया, जब राजनीतिक दल ऐसी योजनाओं की पेशकश करते हैं तो उन्हें मतदाताओं को इनके लिए वित्तपोषण और अन्य पहलुओं के बारे में बताना चाहिए। इससे प्रतिस्पर्धी लोकलुभावनवाद के प्रति प्रलोभन कम होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल के दिनों में रेवड़ी (मुफ्त उपहार) बांटने के प्रतिस्पर्धी लोकलुभावनवाद पर प्रहार किया था, जिससे न केवल करदाताओं के धन की बर्बादी होती है, बल्कि आर्थिक नुकसान भी होता है, जो भारत के आत्मनिर्भर बनने के अभियान को बाधित कर सकता है। उनकी टिप्पणी को आम आदमी पार्टी (आप) जैसे राजनीतिक दलों पर निशाने के तौर पर देखा गया, जिन्होंने हाल में पंजाब में मुफ्त बिजली देने की शुरुआत की है और गुजरात में भी मुफ्त बिजली और पानी देने का वादा किया है। इस महीने की शुरुआत में उच्च तम न्यायालय ने चुनाव के दौरान मतदाताओं को दिए जाने वाले तर्कहीन मुफ्त उपहारों की जांच के लिए एक विशेष निकाय के गठन का सुझाव दिया था। गोयल ने कहा कि वैश्विक झटके और ब्याज दर में वृद्धि के बावजूद भारतीय वृद्धि कायम है और भारत का प्रदर्शन उम्मीद से बेहतर रहा है। उन्होंने कहा कि घरेलू मांग वैश्विक मंदी को कम कर सकती है। उन्होंने भारत का निर्यात बढ़ने की उम्मीद भी जताई।

आरबीआई के पीसीए फ्रेमवर्क के तहत पाबंदियों से जल्द मुक्त हो सकता है सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के त्वरित सुधारात्मक कार्वाई (पीसीए) फ्रेमवर्क के तहत आए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को वित्तीय स्थिति में सुधार के बाद पाबंदियों से जल्द मुक्ति मिल सकती है। सूत्रों ने बताया कि बैंक ने आरबीआई को प्रस्तुतिकरण दिया है जिसमें बताया गया है कि बीती पांच तिमाहियों में उसके वित्तीय मानदंडों में निरंतर सुधार आया है। उन्होंने कहा कि आरबीआई बैंक के अनुरोध पर गौर कर रहा है और जल्द ही इस बारे में राय बना सकता है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में सेंट्रल बैंक का शुद्ध मुनाफा 14.2 फीसदी बढ़कर 234.78 करोड़ रुपए रहा है जो एक साल पहले जून तिमाही में 205.58 करोड़ रुपए था। समीक्षाधीन तिमाही में कंपनी की सकल गैर निष्पादित आस्तियां (एनपीए) गिरकर सकल अग्रिम का 14.9 फीसदी रह गईं।

नियमों के उल्लंघन में लिप्त चीनी कंपनियों से जुड़े कई सीए, सीएस जांच के दायरे में आए

भाषा। नई दिल्ली

भारत में कारोबार करने वाली चीन की कुछ कंपनियों और उनकी अनुषंगियों की स्थापना में कंपनी कानून के कथित उल्लंघनों के मामले में कई चार्टर्ड अकाउंटेंट, कंपनी सेक्रेटरी और कॉस्ट अकाउंटेंट नियामक जांच के दायरे में हैं। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। चार्टर्ड अकाउंटेंट और कंपनी सेक्रेटरी की शीर्ष संस्थाओं इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (आईसीएआई) और इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया (आईसीएसआई) को इस बारे में करीब 400 शिकायतें मिली हैं और उनके आधार पर आवश्यक कार्वाई शुरू कर दी गई है। इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया ने भी इस मुद्दे को लेकर अपने कुछ सदस्यों के खिलाफ कार्वाई शुरू की है। दरअसल कंपनी मामलों के मंत्रालय ने इन संस्थानों को उनके सदस्यों की भूमिका को लेकर सूचित किया था जिसके बाद यह कार्वाई शुरू की गई है। अधिकारियों ने बताया कि मंत्रालय ने इन संस्थानों को उनके ऐसे सदस्यों के बारे में जानकारी दी है जिन्होंने कथित तौर पर नियमों का उल्लंघन किए हैं। आईसीएआई के अध्यक्ष देबाशीष मित्रा ने कहा कि सरकार यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि भारत आकर कारोबार करने संबंधी सभी नियमों का चीन की कंपनियों और उनकी अनुषंगियों ने पालन किया है या नहीं। संस्थानों को इस तरह के करीब 200 मामलों का विवरण मिला है। आईसीएसआई के अध्यक्ष देवेंद्र वी देशपांडे ने बताया कि प्रवर्तक एजेंसियों को कुछ कंपनियों द्वारा गलत काम करने की जानकारी मिली जिसके बाद उन्हें नोटिस जारी किए गए। कंपनियों के निदेशकों के अलावा इन कंपनियों से जुड़े अन्य पेशेवरों को भी नोटिस दिए गए हैं। इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया के अध्यक्ष पी राजू अय्यर ने बताया कि संस्थान के कुछ सदस्यों को कारण बताओ नोटिस दिए गए हैं।

भारत की गेहूं आयात करने की कोई योजना नहीं

भाषा। नई दिल्ली

सरकार की गेहूं आयात करने की कोई योजना नहीं है और देश की जरूरतों को पूरा करने के लिए उसके पास पर्याप्त भंडार है। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने कहा कि भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के पास सार्वजनिक वितरण के लिए पर्याप्त भंडार है। एक सूत्र ने कहा, भारत की गेहूं आयात करने की कोई योजना नहीं है। देश में हमारी घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त भंडार है। उन्होंने यह टिप्पणी कुछ खबरों के संदर्भ में की, जिनमें कहा गया था कि भारत आने वाले समय में गेहूं का आयात कर सकता है। भारत का गेहूं उत्पादन लगभग तीन प्रतिशत घटकर 10.684 करोड़ टन रहने का अनुमान है। हालांकि फसल वर्ष 2021-22 में कुल खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड 31.572 करोड़ टन होने का अनुमान है। दरअसल देश के उत्तरी राज्यों-पंजाब और हरियाणा में गेहूं की फसल पकने के समय भीषण गर्मी पड़ने से गेहूं का उत्पादन कम होने का अनुमान है। कृषि मंत्रालय की तरफ से हाल ही में जारी फसल वर्ष 2021-22 के चौथे अग्रिम अनुमान के अनुसार चावल, मक्का, चना, दलहन, तिलहन और गन्ने का उत्पादन नया रिकॉर्ड बना है।

पेटीएम के शेयरधारकों ने विजय शेखर शर्मा की पुनर्नियुक्ति को मंजूरी दी

भाषा। नई दिल्ली

पेटीएम ब्रांड का संचालन करने वाली कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस के शेयरधारकों ने प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में विजय शेखर शर्मा को फिर से नियुक्त किए जाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। वन97 कम्युनिकेशंस ने रविवार को दायर जांचकर्ता रिपोर्ट में यह जानकारी दी। जांचकर्ता की रिपोर्ट के मुताबिक शुक्रवार को संपन्न सालाना आमसभा की बैठक में 99.67 फीसदी शेयरधारक शर्मा की फिर से इस पद पर नियुक्ति के पक्ष में थे और सिर्फ 0.33 फीसदी शेयरधारकों ने प्रस्ताव के खिलाफ वोट किया। हालांकि निवेशक सलाहकार फर्म आईआईएएस ने इस पद पर शर्मा की दोबारा नियुक्ति के खिलाफ अनुशंसा की थी। आईआईएएस ने कहा था कि शर्मा ने कंपनी को लाभदायक बनाने के लिए अतीत में कई वादे किए थे, लेकिन ए वादे पूरे नहीं हुए। शेयरधारकों ने शर्मा के साथ ही पेटीएम के अध्यक्ष और समूह के मुख्य वित्तीय अधिकारी मधुर देवड़ा के वेतन पैकेज को भी मंजूरी दी। लगभग 94.48 प्रतिशत शेयरधारकों ने शर्मा के पारिश्रमिक के पक्ष में मतदान किया और 5.52 प्रतिशत ने इसका विरोध किया। देवड़ा के पारिश्रमिक को मंजूरी देने के प्रस्ताव के मामले में भी ऐसा ही समर्थन देखने को मिला।

सरकार ने कंपनियों के पते के भौतिक सत्यापन से जुड़े नियमों को बदला

नई दिल्ली। सरकार ने कंपनियों के पंजीकृत पते के भौतिक सत्यापन के समय पारदर्शी प्रक्रिया तय करने के लिए नियमों को संशोधित किया है। अब सत्यापन के समय पंजीकृत कंपनी कार्यालय की तस्वीर लेने और स्वतंत्र गवाहों की मौजूदगी का तरीका अपनाया जाएगा। कंपनी मामलों के मंत्रालय ने इसके लिए कंपनी अधिनियम, 2014 के तहत निर्धारित सत्यापन नियमों को संशोधित कर दिया है। अधिनियम की धारा 12 के तहत कंपनी रजिस्ट्रार को अगर यह लगता है कि कोई कंपनी सही ढंग से कारोबार नहीं कर रही है, तो वह उसके पंजीकृत पते का भौतिक सत्यापन कर सकता है।

संसदीय समिति के समक्ष पेश होंगे बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियों के प्रतिनिधि

भाषा। नई दिल्ली

ऐपल, गूगल, अमेजन, नेटफ्लिक्स और माइक्रोसॉफ्ट जैसी प्रौद्योगिकी कंपनियों की भारतीय इकाइयों के प्रमुख डिजिटल क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा रोधी गतिविधियों की जांच कर रही संसदीय समिति के समक्ष मंगलवार को गवाही देंगे। संसद की वित्त पर गठित स्थाई समिति के अध्यक्ष जयंत सिन्हा ने यह जानकारी दी। यह संसदीय समिति बाजार में प्रतिस्पर्धा के विभिन्न पहलुओं को देख रही है जिसमें बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियों पर खास ध्यान दिया जा रहा है। लोकसभा सचिवालय की तरफ से जारी नोटिस के अनुसार मंगलवार को होने वाली इस बैठक का एजेंडा बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियों के प्रतिस्पर्धा-रोधी तरीकों पर इन कंपनियों के प्रतिनिधियों की मौखिक गवाही लेना है। सिन्हा ने रविवार को पीटीआई-भाषा से कहा, ऐपल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेजन, गूगल, नेटफ्लिक्स की भारतीय इकाइयों के प्रतिनिधि और कुछ अन्य लोग डिजिटल बाजार में प्रतिस्पर्धी व्यवहार के मुद्दे पर संसदीय समिति के समक्ष पेश होंगे। उन्होंने बताया कि समिति भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग और कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय तथा भारतीय प्रौद्योगिकी कंपनियों से इस मुद्दे पर पहले ही विचार विमर्श कर चुकी है। खाद्य आपूर्ति मंच स्विगी और जोमेटो, ई-कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट, कैब सेवा प्रदाता कंपनी ओला, होटल सेवा प्रदाता ओयो और अखिल भारतीय गेमिंग संघ के प्रतिनिधि सिन्हा की अगुवाई वाली इस समिति के समक्ष पहले ही पेश हो चुके हैं।

Public Notice

NOTICE is hereby given that Mr. Ghulam Qadir Baba is owner of the Third Floor (With Roof Rights), "Said Floor", Part of Freehold Property Bearing No. 390, area measuring 70.23 Sq. mtrs. in Block and Pocket-BH, Situated in the Layout Plan of East Shalimar Bagh, Delhi-110008 vide Sale Deed dated 08.01.2009 (Doc. No. 346). Mr. Ghulam Qadir Baba has misplaced the Original Sale Deed dated 28.01.2009 executed by Mrs. Hem Lata Sharma in favour of Mrs. Lajwanti Sachdeva and Mrs. Priya Sachdeva in respect of said Floor(Doc. No.14839). Anyone who find the above said document shall handover the same to the Manager of Bajaj Housing Finance Ltd. Now, Mr. Ghulam Qadir Baba is intending to sell above said floor to Mr. Sanjay Kumar and he is availing a loan on this property from Bajaj Housing Finance Ltd. by mortgaging the said property. In case anyone has any objection regarding mortgage of the said property, the same may be raised within 7 days of this publication to Mr. Muneesh Dhawan/ Mr. Sudhir Jain (Advocates), Law Veritas North, Unit no 907, 9th Floor, GD-ITL Tower, (B-08), Netaji Subhash Place, Delhi-110034 or contact at 9066707172/ 9818228636 (M).

एमबीबीएस छात्र का शव मिला, हत्या की आशंका

सैफई आयुर्विज्ञान संस्थान कैंपस में घटना से हड़कंप

इटावा। सैफई स्थित आयुर्विज्ञान संस्थान के छात्रावास में एमबीबीएस प्रथम वर्ष के एक छात्र का शव फांसी के फंदे से लटकता मिला। परिजनों ने छात्र की हत्या किए जाने का आरोप लगाया है। राज्य में मुख्य विपक्षी दल समाजवादी पार्टी (सपा) ने घटना की उच्च स्तरीय जांच और छात्र के परिवार को एक करोड़ रुपए का मुआवजा देने की मांग की है। पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) सत्यपाल सिंह ने पत्रकारों को बताया कि उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान संस्थान, सैफई के मेडिकल कॉलेज के शाक्यमुनि छात्रावास में शनिवार की देर शाम एमबीबीएस प्रथम वर्ष के छात्र हिमांशु गुप्ता (19) निवासी ज्ञान पुरम कॉलोनी थाना गोरखनाथ, जिला गोरखपुर का शव कमरे के पंखे से चादर के फंदे में लटका हुआ मिला। उन्होंने बताया कि सूचना पाकर छात्र के माता-पिता शिवाजी गुप्ता और डॉक्टर सरिता गुप्ता सुबह सैफई पहुंचे। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। उन्होंने बताया कि डॉक्टरों के पैनल द्वारा पोस्टमार्टम कराया जाएगा। छात्र की माँ डॉक्टर सरिता ने बेटे की हत्या किए जाने का आरोप लगाते हुए प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री से मामले की जांच सीबीआई से कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि हिमांशु के शरीर पर चोटों के कई निशान हैं। रक्षाबंधन त्यौहार के पश्चात हिमांशु 16 अगस्त की सुबह घर से अच्छी-भली हालत में कॉलेज लौटा था। इस बीच, समाजवादी पार्टी ने इस घटना की उच्च स्तरीय जांच कराने और पीड़ित परिवार को एक करोड़ रुपए का मुआवजा देने की मांग की है। पार्टी ने एक ट्वीट कर कहा है, इटावा के सैफई मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस प्रथम वर्ष के छात्र गोरखपुर निवासी हिमांशु गुप्ता की संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु, अत्यंत दुखदउ मृतक छात्र की मां ने हत्या का लगाया आरोप। घटना की हो उच्चस्तरीय जांच। छात्र के परिवार को एक करोड़ मुआवज़ा दे सरकारौ

गोंडा में मिला श्रावस्ती के लापता व्यापारी का शव

गोंड। जिले के खरगूपुर थाना पुलिस ने शनिवार शाम से लापता श्रावस्ती जिले के एक गल्ला व्यवसाई का शव रविवार को बरामद किया। पुलिस सूत्रों ने बताया कि श्रावस्ती जिले के गिलौला थाना क्षेत्र के निवासी गल्ला व्यापारी प्रमोद कुमार मिश्रा (53) शनिवार रात कार से अपनी ससुराल ग्राम सेनवाहे गए थे। उन्होंने बताया कि लौटते हुए मसड़ी चौराहे के पास उनकी कार अनियंत्रित होकर सरयू नहर में गिर गई। स्थानीय लोगों की मदद से रविवार सुबह उनकी कार नहर से बाहर निकाली गई, लेकिन उनका पता नहीं चल सका। गिलौला थाना पुलिस ने उनकी तलाश में स्थानीय गोताखोरों का सहयोग लिया, लेकिन सफलता नहीं मिली। इस बीच रविवार दोपहर बाद खरगूपुर थाना क्षेत्र के पिपरा चौबे गांव में सरयू नहर से उनका शव बरामद हुआ।

कंपाउंडर का शव कब्र से निकाल कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर जिले के बुढ़ाना थाना क्षेत्र के हुसैनपुर कला गांव में एक कंपाउंडर का शव कब्र से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) विनय गौतम ने बताया कि सुहैल (25) एक चिकित्सक के यहां कंपाउंडर के रूप में कार्य करता था। सुहैल के पिता द्वारा की गई शिकायत के बाद पुलिस ने उसके शव को शनिवार को कब्र से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। सीओ ने बताया कि सुहैल के पिता भूरा ने पुलिस को दी गई शिकायत में यह आरोप लगाया है कि पैसे के विवाद में उसके बेटे की हत्या कर दी गई, लेकिन 26 जून, 2022 को उसकी मौत का कारण दुर्घटना में हुई मौत बताया गया था।

कन्नौज में किसान की हत्या, मामला हुआ दर्ज

कन्नौज। कन्नौज सदर कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में एक किसान की कथित तौर पर हत्या कर दी गई। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस के अनुसार सदर कोतवाली क्षेत्र के ग्राम जलालपुर ठकुरन में शनिवार रात को घर के बाहर सो रहे किसान कैलाश (50) की दो बजे हमलावरों ने कुल्हाड़ी से हत्या कर दी। परिजनों ने रंजिश के चलते गांव के ही एक व्यक्ति पर हत्या का आरोप लगाया है। पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह ने रविवार को बताया कि इस घटना में तीन लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई गई है और हत्यारे शीघ्र गिरफ्तार किए जाएंगे। कोतवाली प्रभारी जितेंद्र पाल सिंह ने बताया कि एक व्यक्ति को शक के आधार पर हिरासत में लिया गया है और पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही मामले का खुलासा कर लिया जाएगा। घटटना को लेकर कई और संदिग्ध लोगों से पूछताछ की जा रही है।

मुल्जिम की हत्या का खुलासा, चार आरोपी गिरफ्तार

बदला लेने के लिए 12.50 लाख रुपए की सुपारी देकर करवाया गया था मर्डर, वारदात में दस लोगों की हुई पहचान

हापुड। जिले में चार दिन पहले कचहरी गेट पर एक मुल्जिम की हत्या का खुलासा करते हुए पुलिस ने चार लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस का कहना है कि वारदात हत्या का बदला लेने के लिए 12.50 लाख रुपए की सुपारी देकर मुल्जिम की हत्या करवाई गई थी। पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर ने रविवार को यहां बताया कि आठ अगस्त को फरीदाबाद से पेशी पर लाए गए इनामी बदमाश लखन की कचहरी के गेट के पास गोली मार कर हत्या कर दी गई थी। उन्होंने बताया कि लखन के परिजनों ने आठ लोगों को नामजद करते हुए कुल 12 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने घटना का खुलासा करते हुए चार आरोपियों की गिरफ्तार किया है जिनकी पहचान हरियाणा के फरीदाबाद निवासियों सचिन, मनीष चंदेला, सतेंद्र उर्फ भोलू और अमित उर्फ काले के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि आरोपियों के पास से एक पिस्तौल, तीन तंमचे और एक कार तथा मोटरसाइकिल बरामद की गई है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि कचहरी गेट पर हुई हत्या के मामले में पुलिस ने अभी तक 10 लोगों की पहचान की है, जिनमें से चार को गिरफ्तार कर लिया गया है और बाकी छह की तलाश की जा रही है।

घर से 45 किलो गौमांस बरामद

कौशांबी। कौशांबी जिले के चरवा क्षेत्र में रविवार को 45 किलोग्राम कथित गौमांस बरामद करने के बाद एक महिला को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा ने बताया कि सूचना पर पुलिस ने चरवा थाना क्षेत्र के कूड़ा पुर गांव में शबीना बानो नामक महिला के घर पर छापा मारकर वहां रखा 45 किलोग्राम गौमांस बरामद किया। उन्होंने बताया कि बानो को गिरफ्तार कर लिया गया है। उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही की जा रही है।

चोरी करके फरार अभियुक्त गिरफ्तार: बरेली। मुर्गी फार्म में हजारों के मुर्गे चोरी करने के बाद फरार हुए एक बदमाश को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया उसके पास से पुलिस ने रुपए भी बरामद किए उसे पुलिस ने जेल भेजा।भोजी पुरा थाना क्षेत्र के गांव मुरारपुर निवासी सद्दाम पुत्र मुन्ने को पुलिस ने आज भोजीपुरा स्थित खानपुर पुलिया के पास से गिरफ्तार कर लिया पुलिस के अनुसार सद्दाम 6 अप्रैल से फरार चल रहा था उसने अपने साथी मुरारपुर निवासी मुजम्मिल पुत्र बेचे खा के साथ मिलकर जालिम नगला में भूप राम के मुर्गी फार्म से हजारों की मुर्गे चोरी किए थे और उन्हें अलग-अलग जगह पर भेजने के बाद बेच दिया घटना की रिपोर्ट भूख राम ने थाने में दर्ज करा दी तब पुलिस ने चोरों को गिरफ्तार करने की कोशिश शुरू कर दी और आज सद्दाम को गिरफ्तार कर लिया उसने बताया कि उसने भूपराम के मुर्गी फार्म से मुजम्मिल के साथ मिलकर मार्च के पहले सप्ताह में मुर्गे चोरी किए थे और उन्हें अलग-अलग स्थानों में जाकर बेचा था।

विश्व फोटोग्राफी दिवस पर फोटो आर्टिस्ट हुए सम्मानित

वाराणसी। विश्व फोटोग्राफी दिवस के अवसर पर शुक्रवार को न्यू बनारस कैमरा सोसाइटी के बैनर तले छाया कलाकारों के लिए हाई फैशन शूट पर कार्यशाला एवं छाया चित्र प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित किया गया। रामकटोरा स्थित श्री अन्नपूर्णा बैंक्वेट हॉल में शहर समेत पूर्वांचल के विभिन्न जिलों से आए छाया कलाकारों फोटोग्राफी से जुड़ी बारीकियों के बारे में जानकारी दी गई। इस अवसर पर छायाचित्र प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मोहम्मद अंजुम, द्वितीय रविकांत श्रीवास्तव और तृतीय पुरस्कार संजय चक्रवर्ती को मिला। इन पुरस्कारों को ख्यात अस्थि रोग चिकित्सक डॉ. गौतम चक्रवर्ती द्वारा प्रायोजित किया गया। वहीं, उत्तर प्रदेश स्वतंत्र फोटोग्राफर एसोसिएशन के अध्यक्ष चंद्रशेखर द्वारा अपने गुरू स्व. सतीश चंद्र श्रीवास्तव (चित्रांकित स्टूडियो) के सम्मान में फोटो आर्टिस्ट अशोक लालवानी और अमित राज को सांत्वना पुरस्कार देकर सम्मानित किया। छायाचित्र प्रतियोगिता के निर्णायक इंदौर कैमरा क्लब के अध्यक्ष श्री अखिल हार्डिया रहे। इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत में मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से की गई और अतिथियों को छायाचित्र प्रतियोगिता में शामिल प्रदर्शित चित्रों का अवलोकन कराया गया। तत्पश्चात न्यू बनारस कैमरा सोसाइटी के विशेष सहयोगी एवं हाल ही में दिवंगत हुए कानू बाबू डेकोरेटर के बिजन दादा के चित्र पर माल्यार्पण कर 2 मिनट का मौन रखा गया। उसके उपरांत मॉडल फोटोग्राफी कार्यशाला शुरू हुई जिसमें मॉडल मोनी सिंह ने पोज दिए और छायाकारों ने अच्छे चित्र बनाए। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश स्वतंत्र फोटोग्राफर एसोसिएशन के अध्यक्ष चंद्रशेखर ने कहा कि वर्तमान में फोटोग्राफी की तेजी से बदलती तकनीक से सभी फोटोग्राफर्स को प्रशिक्षित होना आवश्यक है। संस्था की तरफ से बनारस के अलावा पूर्वांचल के सभी प्रमुख जिलों में समय-समय पर कार्यशाला आयोजित करायी जाएगी। बरेली के ख्यात छायाकार रोहित सूरी ने कहा कि छायाकरों को अपना विजन बड़ा करने की जरूरत है। तकनीक की सहायता से हम प्रदेश और राष्ट्रीय पटल पर अपनी छाप छोड़ सकते हैं। वर्तमान में उन्होंने अपने द्वारा राष्ट्रपति भवन की फोटोग्राफी छायाकारों के सामने प्रदर्शित की। प्रमुख अतिथि एवं वरिष्ठ फोटोग्राफर नारायण द्रविड़ ने बताया कि एक फोटो आर्टिस्ट सिर्फ फोटो नहीं खींचता, बल्कि एक इतिहास को संजोता है। फिर चाहे वो किसी व्यक्ति, स्थान या किसी कार्यक्रम की तस्वीर हो। ऐसे में हर छायाकार को हर तस्वीर इस तरह लेनी चाहिए जिससे वो आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत बन सके।

भारतरत्न व शहनाई के बादशाह बिस्मिल्लाह खां की 17वीं पुष्यतिथि पर श्रद्धाजंलि दी गई

वाराणसी। शहनाई के बादशाह रहे व भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खां की 17वीं पुण्यतिथि पर रविवार को उनकी कब्र फातमान रोड सिगरा दरगाह पर पहुँचकर कुरानख्वानी एवं दुआख्वानी करके पुष्पाजंलि दी गई। परिवार के लागों ने उनके कब्र पर उनका पसंदीदा नौहा पढ़ा जो शहनाई के बादशाह बिस्म्लिाह खां साहब की चांदी की शहनाई से पढ़ा करते थे। श्रद्धाजंलि कार्यक्रम में उनकी बड़ी बेटी जरीना बेगम, नजमूल हसन, सैयद शफाक रिजवी, अब्बास मुर्तजा शम्सी, मो0 आरिफ, प्रमोद वर्मा, इफ्तिखार हुसैन गुड्डु, जाकिर हुसैन, आफाक अहमद एवं शकील अहमद जादूगर आदि लोग उपस्थित रहें।

हाइटेंशन तार गिरने से बाइक सवार दो लोगों की मौत, बच्चा झुलसा

बदायूं। जिले के अलापुर थाना क्षेत्र के ककराला-अलापुर मार्ग पर रविवार दोपहर 11 हजार वोल्ट का हाईटेंशन तार टूट कर गिर जाने से बाइक सवार दो लोगों की मौत हो गई जबकि एक बच्चा बुरी तरह झुलस गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। आक्रोशित लोगों ने बिजली विभाग के कर्मचारियों के खिलाफ कार्वाई की मांग करते हुए हंगामा किया। पुलिस के अनुसार, ककराला कस्बे के वार्ड नंबर 22 के रहने बाले किसान कैसर अली (55) और साकिर अली (58) बाइक से अमरूद के बाग में पानी लगाने जा रहे थे तभी खेत के ऊपर से गुजर रही 11हजार बोल्ट का बिजली का तार अचानक टूट कर उनके ऊपर गिरा जिससे दोनों की मौत हो गई, जबकि एक बच्चा बुरी तरह से झुलस गया। घटना के बाद कस्बे के लोगों ने बिजली विभाग पर लापरवाही के गम्भीर आरोप लगाते हुए हंगामा किया। उनका कहना था कि बिजली विभाग द्वारा 11 हजार बोल्ट की लाइन को लकड़ी के डंडे पर खींचा गया था जिसकी वजह से यह हादसा हुआ। पुलिस अधीक्षक (नगर) अमित किशोर श्रीवास्तव ने बताया कि खेत में पानी लगाने जा रहे बाइक सवारों के ऊपर हाईटेंशन लाइन गिरने से दो व्यक्तियों की मौत की सूचना मिलने पर पुलिस क्षेत्राधिकारी को तत्काल मौके पर भेजा गया है। उन्होंने बताया कि परिजन जिसके खिलाफ (चाहे वह व्यक्ति हो अथवा विभाग) जो तहरीर देंगे उसके आधार पर सुसंगत धाराओं में मामला दर्ज किया जाएगा और जांच में जो भी दोषी पाए जाएंगे उनके खिलाफ सख्त कार्वाई की जाएगी।

मिर्जापुर में बारिश के बाद विंध्याचल पर्वतमाला में एक झरने पर उमड़ी पर्यटकों की भीड़

रेलवे ग्रुप डी परीक्षा की तैयारी के लिए विशेष पहल

वाराणसी। भारत के युवाओं को राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर की सरकारी परीक्षाओं की तैयारी में मदद कर सक्षम बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। अपने उपभोक्ताओं के लिए बेहतर कल का मार्ग प्रशस्त करते हुए दूरसंचार सेवा प्रदाता वी परीक्षा के साथ साझेदारी में अखिल भारतीय रेलवे डी परीक्षा की तैयारी के लिए टेस्ट सीरीज़ मटीरियल उपलब्ध कराने जा रहा है। परीक्षा की तैयारी करने वाले उम्मीदवार सत्रह अगस्त दो हजार बाइस से इस मटीरियल का एक्सेस पा सकेंगे। सरकारी परीक्षा में आवेदन की प्रक्रिया को आसान बनाते हुए वी जॉब्स एण्ड एजुकेशन केन्द्रीय/ राज्य सरकारी नौकरियों के उम्मीदवारों के लिए 'परीक्षा पास' का एक महीने का मुफ्त सब्सक्रिप्शन' लेकर आया है।

पेड़ पर लटका मिला प्रेमी युगल का शव

बलरामपुर। जिले के तुलसीपुर क्षेत्र में रविवार को प्रेमी युगल का शव एक पेड़ से फांसी से फंदे से लटकता हुआ मिला। पुलिस क्षेत्राधिकारी कुँवर प्रभात सिंह ने बताया कि देवी पाटन गाँव के रहने वाले गोरखनाथ (22) और ऊषा (20) के शव आज सुबह गाँव के एक बगीचे में पेड़ पर फांसी से लटकते पाए गए। सिंह के मुताबिक, ग्रामीणों का कहना है कि दोनों पिछले दो साल से एक-दूसरे से प्रेम करते थे और विवाह करना चाहते थे, लेकिन उनके परिवार वाले इसके लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने बताया कि दोनों को शनिवार की रात में कुछ लोगों ने एक साथ देखा भी था। सिंह ने बताया कि शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। विधिक कार्यवाही की जा रही है।

बच्चे को बचाने की कोशिश मे बस डिवाडर से टकराकर पलटी: श्रावस्ती। सोनवा . सोनवा थाना क्षेत्र के रत्नापुर में फोरलेन पर एक बच्चे को बचाने के दौरान एक निजी बस डिवाइडर से टकराकर पलट गई। इस दुर्घटना में करीब आधा दर्जन लोगों घायल हो गए जिन्हें इलाज के लिए स्थानीय चिकित्सक के यहां भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिक इलाज के बाद एक गम्भीर रूप से घायल व्यक्ति को एंबुलेंस से संयुक्त जिला चिकित्सालय भिनगा भेज दिया गया। एक निजी बस रविवार को भिनगा से पैसेंजर को लेकर बहराइच की ओर जा रही थी। इस दौरान सोनवा थाना क्षेत्र के रत्नापुर बाजार में पहुंचने पर अचानक सड़क पर एक बच्चा आ गया जिसे बचाने के चक्कर में चालक ने बस ने नियंत्रण खो बैठा जिससे बस डिवाइडर से टकराकर पलट गई। इस दुर्घटना में बस पर सवार मुजफ्फर नगर जिले के एक कपड़ा व्यवसायी एकतशाम तथा देशराजए अजय कुमारएराम मनोहर ए निवासी बिछुआए नूरजहां निवासी पसिन पुरवा थाना कोतवाली भिनगा व रामदुलारी निवासी नरायनपुर थाना सोनवा घायल घायल हो गए। मौके पर पहुँची घायलों को इलाज के लिए स्थानीय निजी चिकित्सक के यहां भर्ती कराया गया। जहां से एकतशाम को गंभीर देखकर चिकिसक ने इलाज के लिए संयुक्त जिला चिकित्सालय भिनगा भेज दिया।

श्रद्धालुओं को लेकर जा रही ट्रैक्टर ट्राली पलटी, दो लड़कियों की मौत

एटा। एटा जिले के कोतवाली देहात क्षेत्र में रविवार तड़के एक ट्रैक्टर-ट्राली के पलट जाने से दो लड़कियों की मौत हो गई और करीब 12 यात्री घायल हो गए। ट्रैक्टर में श्रद्धालु सवार थे और वृंदावन से लौट रहे थे।पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार एटा कोतवाली देहात क्षेत्र केएटा-आगरा मार्ग के ग्राम बाबसा पर रविवार तड़के लगभग साढ़े तीन बजे ट्रैक्टर ट्राली पलट गइ एटा-आगरा मार्ग के ग्राम बाबसा पर रविवार तड़के लगभग साढ़े तीन बजे ट्रैक्टर ट्राली पलट गई जिससे ट्रैक्टर में सवार दो बच्चियों की मौत हो गई तथा 12 श्रद्धालु घायल हो गए। घटना के समय ट्रैक्टर ट्राली में 40 लोग सवार थे। पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) कालू सिंह ने बताया कि इस हादसे में सृष्टि (12) तथा निशा (15) की घटनास्थल पर ही मौत हो गई तथा 12 लोग घायल हो गए जिनमें से 15 वर्षीय आरती की हालत गंभीर होने के कारण उसे उपचार के लिए आगरा रेफर किया गया है। पुलिस ने बताया कि शव पोस्टमार्टम के लिए भेजे गए हैं और घायलों का उपचार जारी है।

रोटरी क्लब वाराणसी ने आदर्श विद्यालय में किया वृक्षारोपण

वाराणसी। आजादी का अमृत महोत्सव के कार्यक्रमों की श्रृंखला में रोटरी क्लब वाराणसी ग्रेटर और इनरव्हील क्लब वाराणसी ग्रेटर द्वारा संयुक्त रूप से शहर की घनी आबादी क्षेत्र ईश्वरगंगी स्थित आदर्श इंटर कॉलेज के मैदान में रविवार को वन विभाग एवं कालेज शिक्षक, सहयोगियों के सहयोग से बृहद वृक्षारोपण किया गया। इस मौके पर रोपित 100 से अधिक बड़े प्रजाति के पौधों को ट्री गार्ड लगाकर सुरक्षित किया गया।क्लब के अध्यक्ष योगेश रूपानी ने कहा कि पर्यावरण संतुलन के लिए वृक्ष जरूरी है और वृक्षों की सुरक्षा के लिए ये अत्यन्त आवश्यक है कि हरित क्षेत्र का विकास के नाम पर तीव्र गति से हो रहा दोहन पर लगाम लगाई जाए, साथ ही वृक्षारोपण करने के उपरान्त रोपित पौधों के प्रौढ़ होने तक उनका पालन पोषण व सुरक्षा एक बच्चे की तरह की जाए। प्रिंसिपल डॉ0 रमाकांत मिश्रा ने कहा कि वृक्षारोपण, संरक्षण व संवर्धन पर बल देते हुए कहा कि खुद को कीटों से बचानें के लिए पेड़ पौधें फाइटोनसाइड रसायन को हवा में छोड़ते है। जिसमें एंटी बैक्टीरियल गुण होता है, जों हमारे द्वारा अक्सीजन ग्रहण करने के साथ ही हमारे शरीर में प्रवेश कर शारीरिक प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है। साथ मनुष्य के भौतिक्तावादी जीवन शैली से उत्पन्न होने वाले वायु प्रदूषण को कम करते है।कार्यक्रम का संचालन पूनम जैन व मिलन टंडन ने किया।

स्पोर्ट ऑफ लाइफ की पहल, निःशुल्क सर्जरी

वाराणसी। फ्रीस्टाइल कुश्ती में राज्य स्तरीय पदक विजेता मृत्युंजय यादव एक दशक से अधिक समय से कुश्ती लड़ते रहे हैं। राष्ट्रीय प्रतियोगिता से एक सप्ताह पहले प्रशिक्षण के दौरान उन्हें चोट लग गई। एमआरआई स्कैन में एसीएल (एंटेरियर क्रूसिएट लिगामेंट) का पता चला। एसीएल एक महत्वपूर्ण लिगामेंट है जो घुटने के जोड़ को स्थिर रखने में मदद करता है। और इसके उपचार के लिए सर्जरी ही एकमात्र विकल्प बचा था। सामान्य पृष्ठभूमि से आने वाले, मृत्युंजय के लिए सर्जरी करा पाना उनके वित्तीय साधनों से संभव नहीं था। इस प्रकार फ्रीस्टाइल कुश्ती में कॅरियर बनाने और राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाएं जीतने का उनका सपना धराशायी हो जाता। उन्हें उनके साथियों से स्पोर्ट ऑफलाइफपहल के बारे में पता चला। मृत्युंजय को डॉ. नीरज श्रीवास्तव के पास रेफर किया गया। डॉ. नीरज वाराणसी के सुप्रसिद्ध आर्थ्रोस्कोपी सर्जन हैं और उन्हें खेल में चोटिल एथलीटों के उपचार में विशेषज्ञता प्राप्त है।

खाई में गिरी कार, दो की मौत-तीन घायल

बरेली। तेजी से जा रही कार अचानक बेकाबू होकर सड़क किनारे पानी से भरे गड्ढे में जा गिरी जिससे कार में सवार दो लोगों की मौत हो गई और तीन घायल हो गए पुलिस ने घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया और मृतकों के शव पोस्टमार्टम के लिए भेजे । मीरगंज थाना क्षेत्र में कुल्छा पुल के पास बीती रात हुई सड़क दुर्घटना में लखीमपुर खीरी के मोहम्मदी थाना क्षेत्र के गांव सरैया निवासी सलीम पुत्र सफीउल्लाह और नई बस्ती निवासी आमिर पुत्र बदद्दन की मौत हो गई जबकि मोहम्मदी के खजुरिया निवासी गोपी और हरदोई जिले के शाहबाद निवासी वकील उद्दीन और मोहम्मदी के गांव सरैया का रहने वाला सलीम खा मंसूरी गंभीर रूप से घायल हो गए जिला अस्पताल में मौजूद दुर्घटना के शिकार लोगों के घर वालों ने बताया कि मृतक आमिर और सलीम ठेकेदारी का काम करते थे कल शाम को दोनों अपने तीन साथियों के साथ दिल्ली जाने के लिए लखीमपुर खीरी से चले थे कार को आमिर चला रहा था लेकिन रात में जब उनकी कार बरेली के मीरगंज थाना क्षेत्र में कुल्छा पुल के पास पहुंची तभी अचानक बेकाबू होकर सड़क के किनारे पानी से भरे गड्ढे में जा गिरी जिससे कार में फंसे सभी लोग गंभीर रूप से घायल हो गए दुर्घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय लोग मौके पर पहुंच गए और उन्होंने राहत और बचाव का काम शुरू करते हुए पुलिस को दुर्घटना की सूचना दे दी कुछ देर बाद ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से कार में फंसे सभी लोगों को बाहर से निकाला और इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा लेकिन रास्ते में ही आमिर और सलीम की मौत हो चुकी थी उन्हें अस्पताल पहुंचते ही डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया पुलिस ने दुर्घटना के शिकार लोगों के घर वालों को सूचना दे दी जो जिला अस्पताल पहुंचे और शवो की शिनाख्त कर ली घायलों को उनके घरवाले इलाज के लिए निजी अस्पताल ले गए जहां उनकी हालत नाजुक बताई जाती है ।

टेंपो चालक को दबंगों ने पीटा

बरेली। दवाई लेकर घर जा रहे टेंपो चालक को मामूली विवाद पर दबंगों ने पीटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया हमलावर उसे मृत जानकर छोड गए। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे परिजनों उसे उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

घर पर बदमाशों का हमला परिजनों को पीट किया घायल

बरेली। सिंचाई विभाग की लिपिक के घर में रात के समय घुसे बदमाशों ने घर में मौजूद लोगों के साथ मारपीट की जिससे कई लोग घायल हो गए घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया।कैंट थाना क्षेत्र में जंक्शन रोड पर स्थित सिंचाई विभाग की कॉलोनी में रहने वाली सिंचाई विभाग की महिला लिपिक गीता के घर में घुसे बदमाशों ने जमकर मारपीट की जिससे गीता उसके पति ललित और कई अन्य लोग घायल हो गए गीता ने बताया कि बीती रात जब घर के लोग गहरी नींद में सो रहे थे तभी आधा दर्जन बदमाश उनके घर में घुस आए उनके आने की आहट सुनकर पति ललित की नींद खुल गई उन्होंने बदमाशों को देखा और घर के लोगों को जगाने की कोशिश की जिससे बदमाश गुस्से में आ गए और उन्होंने ललित के साथ मारपीट शुरू कर दी बचाने की कोशिश करने पर गीता को भी पीटा गया इसी दौरान शोर सुनकर पड़ोसी और कॉलोनी के लोग भी मौके पर आ गए जिन्हें देखकर बदमाश फायरिंग करते हुए फरार हो गए घटना की सूचना पुलिस को दी गई मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी और सभी घायलों को इलाज के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती करा दिया।

अमेठी में रोडवेज बस ट्रैक्टर-ट्रॉली से टकराई चार यात्री हुए घायल

अमेठी। अमेठी जिले के जगदीशपुर थाना क्षेत्र के बेचू गढ़ के पास लखनऊ-वाराणसी राजमार्ग पर एक रोडवेज बस सड़क किनारे खड़े ट्रैक्टर ट्रॉली में टकरा गई, जिससे बस में सवार नौ यात्री घायल हो गए, जिनमें चार की हालत गंभीर बताई जा रही है। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, घटना शनिवार की रात करीब पौने 12 बजे की है। हादसा उस समय हुआ जब शाहगंज डिपो की रोडवेज बस सुलतानपुर से लखनऊ जा रही थी तभी सड़क किनारे खड़े ट्रैक्टर-ट्रॉली से टकरा गई। जगदीशपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) के अधीक्षक डॉ प्रदीप तिवारी ने रविवार को पीटीआई-भाषा को बताया कि सभी घायल नौ यात्रियों को यहां सीएचसी में भर्ती कराया गया था, लेकिन उनमें से चार यात्रियों की हालत ज्यादा गंभीर होने के कारण उन्हें ट्रामा सेंटर लखनऊ रेफर कर दिया गया। उन्होंने बताया कि मामूली रूप से घायलों को उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

बच्चों ने अपनी प्रतिभा से मन मोहा

लखनऊ। रानी लक्ष्मी बाई मेमोरियल स्कूल सेक्टर 14 विकास नगर में अमृत महोत्सव के तहत पेंटिंग प्रतियोगिता और देश के महापुरुषों की भेष में बच्चों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। जिसमें कक्षा 3 की छात्रा आराधना सिंह ने सरदार बल्लभ भाई पटेल की भूमिका निभा कर सबका मन मोह लिया। लौह पुरुष की भूमिका में उसके प्रदर्शन को शिक्षकों के साथ ही प्रदर्शनी देखने आये अभिभावकों ने भी उसकी तारीफकी।

कमजोर जिंबाब्वे पर क्लीन स्वीप करने उतरेगा मजबूत भारत

●तीसरा व अंतिम वनडे आज

भाषा। हरारे

पहले दो मैचों में एकतरफा जीत दर्ज करने वाली भारतीय टीम जिंबाब्वे की कमजोर टीम के खिलाफ सोमवार को यहां होने वाले तीसरे और अंतिम एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में भी किसी तरह की ढिलाई नहीं बरतना चाहेगी और क्लीन स्वीप के इरादे से मैदान पर उतरेगी।

भारत ने पहले दो मैचों में जिंबाब्वे को खेल के हर क्षेत्र में परास्त किया और तीसरे मैच में भी कहानी बदलने की संभावना नहीं है। जिंबाब्वे अभी तक भारतीय टीम के सामने फिसड्डी साबित हुआ है। भारतीय टीम ऐसे में अगले साल होने वाले आईसीसी विश्व कप जैसी प्रतियोगिताओं को ध्यान में रखकर प्रयोग करना जारी रख सकती है। कार्यवाहक कप्तान केएल राहुल ने अब तक युवा खिलाड़ियों को अच्छा प्रदर्शन करके टीम में अपनी जगह पक्की करने का पूरा मौका दिया है। इसमें संदेह नहीं कि भारतीय खिलाड़ियों को अभी तक कड़ी चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा है लेकिन इस अनुभव से उन्हें एक क्रिकेटर के रूप में खुद को निखारने में मदद मिलेगी। भारतीय गेंदबाजों ने अभी तक जिंबाब्वे पर किसी तरह की दया नहीं दिखाई है। जिंबाब्वे की टीम पहले मैच में 189 जबकि दूसरे मैच में 161 रन पर आउट हो गई थी जिससे पता चलता है कि भारतीय गेंदबाजों के सामने उसके बल्लेबाज रन बनाने के लिए जूझ रहे हैं। दूसरी तरफ उसके गेंदबाज भारतीय बल्लेबाजों को परेशानी में डालने में नाकाम रहे हैं जिसमें वनडे के कुछ बेहतरीन खिलाड़ी शामिल हैं। केवल शिखर धवन के वनडे के आंकड़ों से ही इसका अनुमान लगाया जा सकता है। बेहद प्रतिभाशाली शुभमन गिल ने इस दौरे में अब तक जैसा प्रदर्शन किया है निश्चित तौर पर वह उससे संतुष्ट नहीं होंगे और एक बार फिर से जिंबाब्वे के गेंदबाजों पर हावी होने की कोशिश करेंगे। पिछले मैच में धवन के साथ राहुल स्वयं पारी का आगाज करने के लिए उतरे थे लेकिन वह ज्यादा देर तक नहीं टिक पाए। इसके बावजूद वह फिर से पारी की शुरुआत करने के लिए उतर सकते हैं। कुछ प्रमुख गेंदबाजों की अनुपस्थिति में भी भारतीय गेंदबाजों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया है तथा दीपक चाहर, मोहम्मद सिराज, शार्दुल ठाकुर, प्रसिद्ध कृष्णा और अक्षर पटेल के प्रयास को प्रतिद्वंद्वी के कमजोर होने के कारण कम नहीं आंका जा सकता। बल्लेबाजों में यदि ईशान किशन को एक और मौका मिलता है तो वह इसका पूरा फायदा उठाना चाहेंगे। जिंबाब्वे ने पहला मैच 10 विकेट से गंवाने के बाद दूसरे मैच में हार का अंतर को कम किया लेकिन से बेहतर परिणाम हासिल करने के लिए उन्हें अपना सब कुछ झोंक देना होगा।

कप्तानी पर लगे आजीवन प्रतिबंध को हटाने के लिए क्रिकेट आस्ट्रेलिया से बात करना चाहते हैं वॉर्नर

भाषा। सिडनी

डेविड वॉर्नर ने रविवार को कहा कि वह उन पर लगे कप्तानी के आजीवन प्रतिबंध को हटाने के लिए क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के साथ बातचीत करने को तैयार हैं। दक्षिण अफ्रीका में 2018 में गेंद से छेड़छाड़ के मामले के बाद तत्कालीन कप्तान स्टीव स्मिथ से कप्तानी छीन ली गई थी और उन पर दो साल तक ऑस्ट्रेलिया का नेतृत्व नहीं करने का प्रतिबंध लगाया गया था। दूसरी तरफ वॉर्नर को और कड़ी सजा दी गई और उन्हें कप्तानी से आजीवन प्रतिबंधित कर दिया गया था। वर्तमान टेस्ट कप्तान पैट कमिंस सहित कई पूर्व और वर्तमान खिलाड़ी वॉर्नर पर लगे आजीवन प्रतिबंध को खत्म करने की अपील कर चुके हैं। ईएसपीएनक्रिकइंफो के अनुसार वॉर्नर ने कहा, इस मामले में कभी बातचीत हुई ही नहीं। मैं कई बार कह चुका हूं कि अब बोर्ड पर निर्भर है कि वह इस मामले में मुझसे बातचीत करे। बोर्ड अपने दरवाजे खोले और तब मैं उनके साथ बैठकर इस मामले पर बातचीत कर सकता हूं। वॉर्नर, स्मिथ और कैमरन बैनक्रॉफ्ट को गेंद से छेड़छाड़ के मामले में उनकी भूमिका को लेकर कुछ समय के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने से प्रतिबंधित कर दिया गया था। वॉर्नर और स्मिथ पर एक साल का प्रतिबंध लगा था जबकि बैनक्रॉफ्ट को नौ महीने के लिए प्रतिबंधित किया गया था।

न्यूजीलैंड ए सीरीज के खिलाफ पंचाल के टेस्ट में अगुआई की संभावना

●दलीप ट्राफी में खेलेंगे रहाणे

भाषा। नई दिल्ली

गुजरात के सलामी बल्लेबाज प्रियांक पंचाल के एक सितंबर से बेंगलुरू में न्यूजीलैंड ए के खिलाफ होने वाले चार दिवसीय तीन टेस्ट मैचों में भारत ए की अगुआई करने की संभावना है। राष्ट्रीय चयन समिति चेतन शर्मा की अध्यक्षता में सोमवार को बैठक करेगी और न्यूजीलैंड श्रृंखला के लिए लाल एवं सफेद गेंद की ए टीमों की घोषणा करेगी। पता चला है कि पूर्व भारतीय कप्तान अजिंक्य रहाणे की दलीप ट्राफी से प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी होगी। पिछले आईपीएल के दौरान रहाणे को ग्रोइन में चोट लगी थी और इसके लिए वह कड़े रिहैबिलिटेशन में रहे थे जबकि टेस्ट टीम में अनदेखी के बाद उनका अंतरराष्ट्रीय करियर नाजुक स्थिति में पहुंच गया था। इसकी जानकारी रखने वाले बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट बोर्ड) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने गोपनीयता की शर्त पर पीटीआई से कहा, रहाणे ने पिछले कुछ समय से कोई क्रिकेट नहीं खेला है इसलिए चयनकर्ता सीधे ही उन्हें भारत ए टीम में नहीं शामिल करेंगे क्योंकि अच्छा प्रदर्शन करने वाले काफी अन्य खिलाड़ी भी इंतजार कर रहे हैं। मुझे लगता है कि वह दलीप ट्राफी में पश्चिम क्षेत्र के लिए खेलेंगे और इसके बाद से आगे का फैसला होगा। समझा जा सकता है कि रहाणे दिसंबर में बांग्लादेश दौरे के लिए योजना का हिस्सा नहीं हैं लेकिन अगर उनका रणजी ट्राफी सत्र अच्छा रहता है तो यह उन्हें शायद आस्ट्रेलिया के खिलाफ बड़ी घरेलू श्रृंखला के लिए वापसी करा सकता है। यह भी पता चला है कि रहाणे ने मुंबई के लिए पूरे घरेलू सत्र में खेलने की प्रतिबद्धता दी है और वह टीम की अगुआई भी करेंगे। वहीं दक्षिण अफ्रीका के ए दौरे के लिए गए खिलाड़ियों को तरजीह दी जाएगी। पंचाल ने दक्षिण अफ्रीका में भारत ए की अगुआई की थी जिससे उन्हें फिर से यह जिम्मेदारी दिए जाने की संभावना है। गुजरात क्रिकेट संघ के एक सीनियर अधिकारी ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा, पंचाल इस समय चेन्नई में चेमप्लास्ट के लिए कुछ मैत्री मैचों में खेल रहे हैं क्योंकि उन्हें अभ्यास की जरूरत है। उन्होंने टीम की अगुआई अच्छी तरह की थी तो उनके बदलने की संभावना कम है, हालांकि हनुमा विहारी के चुने जाने की भी संभावना है और वह खिलाड़ियों में सबसे अनुभवी होंगे। अभिमन्यु ईश्वरन, बाबा अपराजित, उपेंद्र यादव, सौरभ कुमार और के एस भरत लाल गेंद की टीम का हिस्सा होंगे। सलामी बल्लेबाज मयंक अग्रवाल को अपने अंतरराष्ट्रीय करियर को पटरी पर लाने का एक और मौका मिल सकता है। टेस्ट टीम का हिस्सा बन चुके प्रसिद्ध कृष्णा और नवदीप सैनी के ए मैचों के लिए चुना जाएगा। शिवम मावी और कमलेश नागरकोटी को भी शामिल किया जा सकता है। जम्मू कश्मीर के सनसनीखेज तेज गेंदबाज उमरान मलिक को भी मंच दिया जा सकता है। सरफराज खान (982 रन) का सभी तीनों टेस्ट में चुना जाना तय है जो दक्षिण अफ्रीका में भी टीम में थे और उनका रणजी ट्राफी सत्र शानदार रहा था। रजत पाटीदार का शानदार आईपीएल और रणजी ट्राफी में 600 से ज्यादा रन बनाने के बाद चुना जाना तय है। मुंबई के शम्स मुलानी भी खुद को दावेदार समझ सकते हैं जिन्होंने 45 विकेट लिए और 321 रन बनाए लेकिन भारतीय टीम में फिटनेस को काफी महत्व दिया जाता है तो उनकी कद काठी और धीमा क्षेत्ररक्षण इसमें बाधा बन सकता है। सौरभ कुमार और बंगाल के शाहबाज अहम दौड़ में आगे हो सकते हैं। दिल्ली के अंडर-19 विश्व कप विजेता कप्तान यश धुल और बंगाल के तेज गेंदबाज मुकेश कुमार भी लाल गेंद के प्रारूप के लिए टीम में शामिल हो सकते हैं। श्रृंखला के लिए मोहम्मद सिराज और शुभमन गिल के नाम पर विचार नहीं किया जाएगा। जिम्बाब्वे श्रृंखला के ज्यादातर खिलाड़ियों को सफेद गेंद की टीम में चुना जाएगा। न्यूजीलैंड के खिलाफ सफेद गेंद के चरण के लिए ज्यादातर वे खिलाड़ी शामिल होंगे जो जिम्बाब्वे में वनडे श्रृंखला खेल रहे हैं जिसमें रूतुराज गायकवाड़, ईशान किशन, संजू सैमसन, आवेश खान, कुलदीप यादव, शाहबाज अहमद शामिल हैं। विजय हजारे ट्राफी में करीब 500 रन बनाने वाले और 17 विकेट झटकने वाले ऋषि धवन भी जगह बनाने के लिए तैयार हैं। लेकिन उनकी उम्र करीब 33 साल है और वह 120 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करते हैं तो वह 2023 विश्व कप के लिए गंभीर दावेदार होंगे या नहीं, यह बड़ा सवाल है। पृथ्वी साव की भारत ए टीम में वापसी होगी और वेंकटेश अय्यर आल राउंडर होंगे।

लालमकिम के दो गोल से आर्मी ग्रीन ने नॉर्थईस्ट को हराया

गुवाहाटी। कप्तान पीसी लालमकिम के दो गोल से आर्मी ग्रीन ने रविवार को यहां नॉर्थईस्ट यूनाईटेड एफसी को 3-1 से हराकर डूरंड कप फुटबॉल टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत जीत के साथ की। लालमकिम के दो गोल के अलावा आर्मी ग्रीन की ओर से एक अन्य गोल सोमेश कोठारी ने किया। नॉर्थईस्ट यूनाईटेड की ओर से एकमात्र गोल इंजरी टाइम में दीपू मिरधा ने किया।

गगनजीत भुल्लर कोरिया में पांचवें स्थान पर रहे

जेजू आईलैंड (दक्षिण कोरिया)। भारतीय गोल्फर गगनजीत भुल्लर शानदार प्रदर्शन करते हुए अंतिम दौर में चार अंडर 67 के स्कोर के साथ रविवार को यहां अंतरराष्ट्रीय सीरीज कोरिया मे संयुक्त पांचवें स्थान पर रहे। टूर्नामेंट की शुरुआत एक ओवर 72 के स्कोर से करने वाले भुल्लर ने अगले तीन दौर मे 65, 69 और 67 का स्कोर बनाया। उनका कुल स्कोर 11 अंडर रहा। अंतिम दौर में भुल्लर ने पांच बर्डी की लेकिन वह एक बोगी भी कर गए जिससे उनका स्कोर चार अंडर रहा। अन्य भारतीय गोल्फर के लिए नतीजे उतने अच्छे नही रहे। अंतिम दौर में 68 के अच्छे स्कोर के बावजूद वीर अहलावत संयुक्त 29वें स्थान पर रहे। एसएसपी चौरसिया (71) ने संयुक्त 51वां स्थान हासिल किया जबकि राशिद खान (72) और शिव कपूर (72) क्रमशः संयुक्त 62वें और संयुक्त 68वें स्थान पर रहे। स्थानीय दावेदार तेइहून ओक ने हमवतन बायो किम को एक शॉट से पछाड़कर खिताब जीता। तइहून का कुल स्कोर 15 अंडर रहा।

त्वेसा 51वें स्थान पर रही, नेली कोर्डा ने जीता खिताब

सोटोग्रांडे (स्पेन)। भारत की त्वेसा मलिक अंतिम दौर में उतार चढ़ाव वाले प्रदर्शन के बाद यहां अरामको गोल्फ सीरीज सोटोग्रांडे गोल्फ टूर्नामेंट मे 51वे स्थान पर रही। त्वेसा ने चार बर्डी बनाई लेकिन इस बीच पांच बोगी भी की। अंतिम दौर मे उनका स्कोर 73 रहा। उनका कुल स्कोर चार ओवर 220 रहा। त्वेसा इस टूर्नामेंट में भाग लेने वाली एकमात्र भारतीय खिलाड़ी थी। वह अब लेडीज यूरोपियन टूर मे अगले सप्ताह स्वीडन में स्काफ्टो ओपन में भाग लेगी। इस बीच विश्व मे नंबर तीन खिलाड़ी नेली कोर्डा ने अंतिम दौर मे पांच अंडर 67 का स्कोर बनाया और अरामको टीम सीरीज में तीन शॉट से व्यक्तिगत खिताब जीता।

राइफल प्रोन टी5 के विजेता रहे चैन सिंह

नई दिल्ली। अनुभवी निशानेबाज चैन सिंह ने रविवार को यहां राष्ट्रीय निशानेबाजी चयन ट्रायल्स की पुरूष 50 मीटर राइफल प्रोन टी5 स्पर्धा मे जीत हासिल की जबकि ओलंपिक पदक विजेता विजय कुमार 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल टी5 में तीसरे स्थान पर रहे। चैन सिंह ने 60 निशानों की स्पर्धा मे 623.6 अंक से नौसेना के नीरज कुमार को हराया जो 622.5 अंक से दूसरे स्थान पर रहे। जुलाई मे चांगवान विश्व कप मे स्वर्ण पदक जीतने वाले मध्य प्रदेश के प्रतिभाशाली निशानेबाज ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर 622.2 अंक से तीसरा स्थान हासिल करने में सफल रहे।

सिंधू के बिना दारोमदार लक्ष्य और प्रणय पर

●विश्व चैंपियनशिप आज से

भाषा। तोक्यो

भारत की स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू चोटिल होने के कारण पिछले एक दशक में पहली बार बीडब्ल्यूएफ विश्व चैंपियनशिप में हिस्सा नहीं ले पाएगी और उनकी अनुपस्थिति में सोमवार से शुरू हो रहे इस टूर्नामेंट भारत का दारोमदार युवा लक्ष्य सेन और एच एच प्रणय पर होगा। सिंधू ने विश्व चैंपियनशिप में पांच पदक जीते हैं जिनमें 2019 में जीता गया स्वर्ण पदक भी शामिल है। राष्ट्रमंडल खेलों में अपने खिताबी अभियान के दौरान वह चोटिल हो गई थी जिसके कारण उन्हें इस चैंपियनशिप से उन्हें हटना पड़ा। सिंधू का टखना चोटिल है। ऐसी स्थिति में इस टूर्नामेंट में भारत का अच्छा प्रदर्शन बरकरार रखने का दारोमदार युवा लक्ष्य के अलावा अनुभवी प्रणय और किदांबी श्रीकांत पर आ गया है। भारत ने 2011 के बाद इस चैंपियनशिप में हमेशा पदक जीता है। पिछले साल श्रीकांत ने जहां रजत पदक जीता था वहीं लक्ष्य कांस्य पदक जीतने में सफल रहे थे लेकिन इस साल मुकाबला अधिक कड़ा नजर आता है। वर्ष 2021 में जापान के केंटो मोमोटा तथा जोनाथन क्रिस्टी और एंथोनी गिंटिंग की इंडोनेशियाई जोड़ी ने विश्व चैंपियनशिप में हिस्सा नहीं लिया था लेकिन इस बार किसी खिलाड़ी ने नाम वापस नहीं लिया है। इसके साथ ही भारत के पुरुष खिलाड़ियों से उम्मीदें काफी की जा रही हैं क्योंकि हाल में उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया है। राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने के बाद लक्ष्य का आत्मविश्वास काफी बढ़ा हुआ है और वह विश्व चैंपियनशिप में खिताब के प्रबल दावेदार के रूप में शुरुआत करेंगे। यह 20 वर्षीय खिलाड़ी डेनमार्क के दिग्गज हैंस-क्रिस्टियन सोलबर्ग विटिंगस के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेंगे। भारत के तीनों पुरुष खिलाड़ी एक ही क्वार्टर में है और ऐसे में उनका आमना सामना हो सकता है। नौवीं वरीयता प्राप्त लक्ष्य तीसरे दौर में प्रणय से भिड़ सकते हैं। प्रणय को इससे पहले दूसरे दौर में दूसरी वरीयता प्राप्त मोमोटा को हराना होगा। प्रणय ने पिछले कुछ समय से अपने प्रदर्शन में निरंतरता रखी है। वह तीन बार सेमीफाइनल और एक बार फाइनल में पहुंचे और उनसे इसी तरह के प्रदर्शन को बरकरार रखने की उम्मीद की जा रही है। श्रीकांत को 12वीं वरीयता दी गई है और वह भी लक्ष्य और प्रणय की तरह अच्छी फॉर्म में है। राष्ट्रमंडल खेलों में उन्होंने कांस्य पदक जीता लेकिन आयरलैंड के नाट गुएन और चीन के झाओ जून पेंग जैसे खिलाड़ियों को हराने के लिए उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा।

क्वितोवा और गर्सिया सिनसिनाटी ओपन के फाइनल में

मैसन (अमेरिका)। पेट्रा क्वितोवा ने तीन सेट तक चले कड़े मुकाबले में मैडिसन कीज को 6-7 (6), 6-4, 6-3 से हराकर सिनसिनाटी ओपन के फाइनल में प्रवेश किया। बत्तीस वर्षीय क्वितोवा ने इससे पहले सिनसिनाटी ओपन में 10 बार हिस्सा लिया था लेकिन वह कभी सेमीफाइनल से आगे नहीं बढ़ पाई थी। फाइनल में उनका मुकाबला फ्रांस की खिलाड़ी गर्सिया से होगा। कारोलिन सिनसिनाटी के फाइनल में पहुंचने वाली पहली क्वालीफायर हैं। उन्होंने एक अन्य सेमीफाइनल में छठी वरीयता प्राप्त सबालेंका को 6-2, 4-6, 6-1 से हराकर लगातार सातवां मैच जीतकर फाइनल में जगह बनाई। सिनसिनाटी में 2019 की चैंपियन कीज ने इस सप्ताह तीन ग्रैंड स्लैम विजेताओं को हराया था लेकिन वह क्वितोवा को हराने में नाकाम रही। पुरुष वर्ग का फाइनल विश्व में 152 नंबर के क्रोशियाई खिलाड़ी कोरिच और विश्व में नंबर चार सिटसिपास के बीच खेला जाएगा।

एशियाई चैंपियनशिप में हिस्सा नही लेंगे मीराबाई, जेरेमी और अचिंता

● भारोत्तोलन टीम कल रवाना होगी

भाषा। नई दिल्ली

ओलंपिक रजत पदक विजेता मीराबाई चानू और सात अन्य शीर्ष भारतीय भारोत्तोलक मंगलवार को अमेरिका रवाना होंगे जहां वे सेंट लुई में साढ़े तीन हफ्ते के स्ट्रेंथ एवं अनुकूलन ट्रेनिंग शिविर में हिस्सा लेंगे। चानू के साथ 2022 राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेत जेरेमी लालरिननुंगा, अचिंता शेउली, संकेत सरगर, बिंदियारानी देवी, गुरदीप सिंह और 2018 राष्ट्रमंडल खेल चैंपियन आरवी राहुल तथा एशियाई चैंपियनशिप की स्वर्ण पदक विजेता झिली डालबेहड़ा सेंट लुई जाएंगे। भारत्तोलक कोच विजय शर्मा ने पीटीआई को बताया, हम 23-24 दिन अमेरिका में रहेंगे। यह आफ सत्र है इसलिए हम वहां स्ट्रेंथ कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान कोहनी में चोट के कारण आपरेशन कराने वाले सरगर रिहैबिलिटेशन में हिस्सा लेंगे। उन्होंने कहा, इन सभी भारोत्तोलकों को छोटी-मोटी चोट हैं, जैसे गुरदीप की कलाई में चोट है। संकेत रिहैबिलिटेशन में हिस्सा लेगा। हम चाहते हैं कि विश्व चैंपियनशिप के लिए सभी पूरी तरह फिट हों। भारत भारोत्तोलक डॉ. आरोन होर्शिग के साथ काम करेंगे जो पूर्व भारोत्तोलक हैं और अब फिजिकल थेरेपिस्ट तथा स्ट्रेंथ एवं अनुकूलन कोच हैं। चानू 2020 से होर्शिग से सलाह ले रही हैं। उन्होंने चानू की संतुलन से जुड़ी समस्या का समाधान करने में अहम भूमिका निभाई जिससे उनकी स्नैच तकनीक प्रभावित हो रही थी। उन्होंने राष्ट्रमंडल खेलों से पहले मार्च में होर्शिग के साथ एक महीने के ट्रेनिंग शिविर में हिस्सा लिया था। शर्मा ने कहा, मीरा को अभी कोई समस्या नहीं है लेकिन हम वहां जा रहे हैं तो वह भी स्ट्रेंथ ट्रेनिंग में हिस्सा लेगी। सीनियर भारोत्तोलक इस साल की एशियाई चैंपियनशिप में हिस्सा नहीं लेंगे। उन्होंने इसके बजाय विश्व चैंपियनशिप पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया है जो पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाइंग प्रतियोगिता है। एशियाई चैंपियनशिप छह से 16 अक्टूबर तक बहरीन के मनामा में होनी है।

छगन और कविता ने जीती मुंबई हाफ मैराथन

भाषा। मुंबई

महाराष्ट्र के छगन बोम्बले और आंध्र प्रदेश की कविता रेड्डी ने रविवार को यहां बांद्रा कुर्ला परिसर में मुंबई हाफ मैराथन 2022 में क्रमश: पुरूष और महिला खिताब अपने नाम किए। छगन ने जियो गार्डन्स से शुरू हुई 21 किलोमीटर की हाफ मैराथन एक घंटे 16.11 मिनट में खत्म की और दूसरे स्थान पर रहने वाले भगतसिंह वाल्वी से एक मिनट आगे रहे। भगतसिंह वाल्वी एक घंटे 17.51 मिनट के समय से दूसरे और अनिल जिंदल एक घंटे 18.20 मिनट के समय से तीसरे स्थान पर रहे। महिलाओं की स्पर्धा भी एकतरफा रही जिसमें कविता रेड्डी ने एक घंटे 37.03 मिनट में रेस समाप्त की जिससे वह अपनी निकटतम प्रतिद्वंद्वी तन्मया कर्माकर से तीन मिनट आगे रहीं। तन्मया कर्माकर ने एक घंटे 40.18 मिनट का समय लिया। केतकी साठे एक घंटे 44.55 मिनट के समय से तीसरे स्थान पर रही। महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने रेस शुरू की और विजेताओं को सम्मानित किया। तेंदुलकर ने कहा, महामारी के कारण पिछले दो साल हर किसी के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रहे।

फिर विश्व हैवीवेट चैंपियन बने उसिक

●जोशुआ को हराया

भाषा। जेद्दा (सऊदी अरब)

यूक्रेन के मुक्केबाज अलेक्सांद्र उसिक ने यहां किंग अब्दुल्ला स्पोर्ट्स सिटी में एक रोमांचक मुकाबले में एंथनी जोशुआ पर विभाजित निर्णय से जीत दर्ज करके अपना विश्व हैवीवेट खिताब बरकरार रखा।

शनिवार को हुए इस मुकाबले में जब जज अपना फैसला सुना रहे थे तब इन दोनों मुक्केबाजों ने यूक्रेन का ध्वज उठा रखा था। उसिक को जब विजेता घोषित किया गया तो उन्होंने झंडे से अपना मुंह ढक दिया। पैंतीस वर्षीय उसिक ने रूस के हमले के खिलाफ यूक्रेन की सेना में सेवाएं देने के छह महीने बाद डब्ल्यूबीए, डब्ल्यूबीओ और आईबीएफ खिताब हासिल किए। यूक्रेन के राष्ट्रपति ने भी मुकाबले से पहले उसिक के लिए संदेश भेजा था। मुकाबले के बाद उनके प्रतिद्वंदी जोशुआ ने भी उनकी हिम्मत की प्रशंसा की।

क्रिप्टो कप में डूडा से हारे प्रज्ञानानंद

मियामी। भारत के युवा ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंद रविवार को यहां चैंपियंस शतरंज टूर के एफटीएक्स क्रिप्टो कप के छठे दौर मे टाईब्रेक मे पोलैंड के जान क्रिजस्टोफ डूडा से हार गए। यह 17 वर्षीय प्रज्ञानानंद की टूर्नामेंट मे दूसरी हार है। वह पिछले दौर मे क्वांग लीम ले से हार गए थे। यह भारतीय खिलाड़ी हालांकि 13 अंक लेकर दूसरे स्थान पर बने हुआ है। विश्व के नंबर एक खिलाड़ी मैगनस कार्लसन 15 अंको के साथ पहले स्थान पर है। डूडा ने पहली बाजी जीतकर शुरूआती बढ़त हासिल की। इसके बाद अगली दो बाजियां ड्रॉ रही। प्रज्ञानानंद ने चौथी बाजी जीतकर मुकाबले को बराबरी पर ला दिया लेकिन पोलैंड के खिलाड़ी ने टाई ब्रेक मे अपना अनुभव दिखाया और 4-2 से जीत दर्ज की। प्रज्ञानानंद टूर्नामेंट के आखिरी दौर मे कार्लसन का सामना करेंगे। कार्लसन ने टाईब्रेक मे अलीरेजा फिरोजा को 3.5-2.5 से पराजित किया। अन्य मुकाबलो मे लीम ले ने अनीश गिरी को 2.5-1.5 से हराकर उलटफेर किया जबकि लेवोन आरोनियन ने हैस नीमन को इसी अंतर से शिकस्त दी।

सार्थ और दिशा ने जीती स्टेट रैंकिंग टेटे

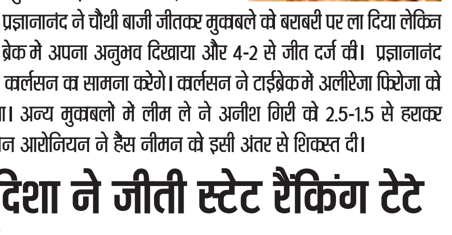

लखनऊ। नोएडा में चल रही स्वर्गीय एसके् पांडे मेमोरियल स्टेट रैंकिंग टेबल टेनिस चैंपियनशिप में पुरुषो में सार्थ जबकि महिला में दिशा ने बाजी मारी। पुरुष एकल फाइनल में सार्थ मिश्रा ने दिव्यांश श्रीवास्तव को 7-11, 11-5, 11-8, 12-10 से हराया। जबकि महिला एकल फाइनल मे दिशा ने राधा प्रिया गोयल को 11-4, 8-11,11-4, 11-9 से हराया। यूथ बॉयज अंडर-19 के फाइनल में अक्षत त्यागी ने दिव्यांश श्रीवास्तव को 11-9, 11-6, 9-11 11-8 से हराया जबकि युवा लड़की अंडर- 19 फाइनल में सुहानी महाजन ने अवनि त्रिपाठी को 11-7, 10-12, 11-6,11-9 से हराया। जूनियर बॉयज अंडर-17 फाइनल में अर्निस बाना ने अभिवीर नंदा को 11-5, 7-11, 11-8, 12.10 से हराया। जूनियर गर्ल अंडर-17 के फाइनल में सुहानी महाजन ने दिशा को 11-5, 11-7, 11-3 से हराया।

लखनऊ को ओवरआल चैंपियनशिप

●सेंट्रल जोन ताइक्वांडो में 20 स्वर्ण पदक

लखनऊ। मेजबान लखनऊ के खिलाड़ियों ने प्रथम यूपी सेंट्रल जोन ताइक्वांडो चैंपियनशिप में सर्वाधिक 20 स्वर्ण पदक जीतते हुए ओवरऑल चैंपियनशिप ट्राफी पर कब्जा जमा लिया। चैंपियनशिप में बरेली की टीम उपविजेता रही और सीतापुर को तीसरा स्थान मिला। उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो संघ के तत्वावधान में लखनऊ जिला ताइक्वांडो संघ द्वारा आयोजित चौक स्टेडियम के लाल जी टंडन बहुउद्देशीय हाल में संपन्न चैंपियनशिप में लखनऊ के खिलाड़ियों ने दमदार प्रदर्शन किया और 20 स्वर्ण, 10 रजत व 35 कांस्य पदक सहित कुल 65 पदक अपने नाम किए। चैंपियनशिप में दूसरे स्थान पर रही बरेली ने 15 स्वर्ण, नौ रजत व 20 कांस्य सहित 44 पदक जीते। सीतापुर की टीम 13 स्वर्ण, तीन रजत व 15 कांस्य सहित कुल 31 पदक के साथ तीसरे स्थान पर रही। चैंपियनशिप के समापन समारोह में मुख्य अतिथि भारतीय खेल प्राधिकरण क्षेत्रीय केंद्र लखनऊ में तैनात अंतर्राष्ट्रीय ताइक्वांडो कोच दीपक पंत और उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो संघ के सचिव चंद्र कुमार शर्मा ने विजेता व उपविजेता टीमों को पुरस्कार वितरित किए।

सीएमएस चौक ने जीती योगासन खेल प्रतियोगिता

लखनऊ। सीएमएस चौक की टीम ने पांचवी लखनऊ जिला योगासन खेल प्रतियोगिता में उम्दा प्रदर्शन के साथ पहला स्थान हासिल किया। लखनऊ जिला योगासन खेल संघ व एसजे इंटरनेशनल स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में सुशांत गोल्फ सिटी स्थित एसजे इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को आयोजित प्रतियोगिता में सेठ आनंदराम जयपुरिया स्कूल दूसरे व सीएमएस राजेंद्र नगर तीसरे स्थान पर रहा। संगीतमय योग में सीएमएस अर्शफाबाद पहले स्थान पर रहा। प्रतियोगिता के समापन व पुरस्कार वितरण समारोह में महापौर श्रीमती संयुक्ता भाटिया एवं एमएलसी पवन सिंह चौहान व एसजे इंटरनेशनल स्कूल की चेयरमैन पुष्प लता अग्रवाल ने पुरस्कार बांटे। इस अवसर पर निधि दमेले व अनुपम चौधरी भी मौजूद थे।

सीएसके ने कहा, डुप्लेसी का अनुभव अहम होगा

चेन्नई। चेन्नई सुपर किंग्स की जोहानिसबर्ग फ्रेंचाइजी ने रविवार को दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान फाफ डुप्लेसी की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह सीएसए टी20 लीग के शुरूआती चरण मे मार्की खिलाड़ियों मे से एक के तौर पर अहम भूमिका निभाएंगे। डुप्लेसी इंडियन प्रीमियर लीग में 2016 और 2017 (जब टीम को निलंबित कर दिया गया था) को छोड़कर 2011 से 2021 तक चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) का हिस्सा थे और हाल मे उन्हे जोहानिसबर्ग फ्रेंचाइजी ने टीम मे शामिल किया। हालांकि डुप्लेसी पिछले आईपीएल सत्र मे रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के लिए खेले थे। सीएसके के मुख्य कार्यकारी अधिकारी केएस विश्वनाथन ने प्रेस विज्ञप्ति में कहा, फाफ (डुप्लेसी) पिछले 10 वर्षो मे चेन्नई सुपर किंग्स की रीढ़ रह चुके है। वह हमारी टीम के सबसे निरंतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों मे से एक थे।